ब्रज की साँझी

वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन - 281121 (भारत)

ब्रज की साँझी

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित)

ब्रज की लोक एवं देवालयी साँझी परम्परा से जुड़े वैविध्यपूर्ण कला पक्ष,
लोक मिथक-मान्यताओं एवं विषय सम्मत साहित्यिक संदर्भों
के प्रलेखन पर केन्द्रित शोधपरक प्रकाशन

सम्पादक :

डॉ. महेशनारायण शर्मा

निदेशक

वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

संकलन एवं सह–संपादन :

डॉ. राजेश कुमार शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन–281121 (उ०प्र०) भारत

प्रकाशक :
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन
Phone : 91-5652540628, 6450731, Fax : 0565-2540576
Website : www.vrindavanresearchinstitute.org
Emil : vrindavanresearch@gmail.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण - प्रथम
वर्ष २०१४-१५

मूल्य :
200/- रु० मात्र

मुद्रक :
विद्यालय प्रेस
केशीघाट, वृन्दावन : +919412492937

ब्रज की साँझी

अनुक्रम

- संपादकीय 4
- महत्त्व एवं उपयोगिता 6
- ब्रजमण्डल और साँझी की परम्परा 9
- ब्रज की देवालयी परम्परा में साँझी 13
- ब्रज की लोक परम्परा में साँझी 26
- साँझी पदावली 43
- छायाचित्र 123
- साक्षात्कार 139
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 146

सम्पादकीय

कला परम्पराओं की समृद्धि ने ब्रज के सांस्कृतिक धरातल को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्रदान की है। राधा-कृष्ण की लीलाओं से अनुप्राणित ब्रज संस्कृति में उनकी व्याप्ति किसी न किसी रूप में सहजता से देखी जा सकती है। उल्लास अर्थात् उत्सवधर्मिता ब्रज के लोक जीवन का प्रधान तत्व है। पितृ पक्ष के दौरान जब पूरे देश में मांगलिक आयोजनों की रफ्तार थम सी जाती है ऐसे में ब्रज का यह साँझी उत्सव भारतीय जन मन में एक नई उमंग का संचार करता है। यहाँ लोक की यह उत्सवधर्मिता मात्र आमोद-प्रमोद की परिचायक नहीं अपितु इसमें भक्ति का पुट ब्रज की उत्सव-परम्पराओं को एक नई पहचान प्रदान करता है। साँझी की परम्परा भले ही पूरे देश के पृथक-पृथक अंचलों में अलग-अलग नामों से अपने पारम्परिक कथानकों के साथ दर्शित होती है लेकिन ब्रज में साँझी की यह अपनी विशिष्टता है कि यहाँ यह परम्परा लोक जन-जीवन के साथ ही विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों से सम्बद्ध मन्दिर देवालयों के अन्तर्गत पृथक-पृथक रूपों में पल्लवित हुई। यहाँ लोक में बनाये जाने वाली गोबर साँझी जिसका अपना कथानक तथा सोलह दिनों के अपने चित्रांकन है के साथ ही मन्दिरों की रंग साँझी परम्परा ने पूरे भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को अपने अद्भुत आकर्षण के चलते प्रभावित किया। ब्रज के देवालयों में आयोजित होने वाली साँझी को लेकर यह लोकमान्यता प्रचलित कि गौचारण करके लौटते श्रीकृष्ण एवं उनकी ग्वाल मण्डली को प्रसन्न करने के निमित्त श्रीराधा गौधूलि बेला (सायंकाल) में अपने सखी परिकर सहित मार्ग में विभिन्न प्रकार के पत्र-पुष्पों से साँझी बनाती थीं। ब्रज के देवालयों में साँझी की यह परम्परा इस उत्सव के आरम्भिक दिनों में 'फूल-साँझी' के रूप में आज भी देखी जा सकती है। फूल साँझी के उपरान्त यहाँ जल तथा रँग साँझी के आयोजन होते हैं जिनके अंकन में साँझी परम्परा से जुड़े कलाविदों का हुनर देखे ही बनता है।

साँझी का यह हुनर मात्र इसके चित्ताकर्षक प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं अपितु स्थानीय वैष्णव साधकों ने इसे पर्याप्त साहित्यिक आधार भी प्रदान किया जो इनकी इस परम्परा के प्रति समर्पण तथा भक्ति का परिचायक है। ब्रज के विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों में इस परम्परा को लक्षित कर विपुल साहित्य रचा गया, जिसका एक बड़ा हिस्सा अभी तक अज्ञात अथवा अप्रकाशित ही बना हुआ

है। ब्रज की साँझी परम्परा से जुड़ा विस्तृत साहित्य आज ब्रज मण्डल ही नहीं अपितु भारतवर्ष के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों में देखा जा सकता है। वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा ब्रज की कला-परम्पराओं को संरक्षित करने के निमित्त आयोजित प्रकाशन शृंखला के इस पुष्प में साँझी से जुड़े साहित्यिक पक्ष का समावेश संस्थान के समृद्ध ग्रंथागार सहित विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहों के सहयोग से किया गया है। रंग साँझी से इतर ब्रज की लोक परम्परा में प्रचलित गोबर साँझी का भी अपना कथानक है जिसमें वीरन बेटी (साँझी के मायके का नाम) से जुड़े कथा चित्रों को १६ दिनों तक गोबर से अंकित किये जाने की परम्परा है।

गोबर साँझी से जुड़ी लोक परम्परा के अन्तर्गत विभिन्न विद्वानों द्वारा इन चित्रों से जुड़ी क्रमबद्धता की बात कही गई है जिसके अनुसार यह निर्धारित रहता है कि पहले दिन अमुक चित्र तथा आगामी दिवसों में क्रमिक रूप से फलां-फलां चित्र बनेंगे लेकिन प्रस्तुत कार्य के अन्तर्गत डॉ॰राजेश कुमार शर्मा ने ब्रज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में किये गये सर्वेक्षण के उपरान्त इस निर्धारित क्रम से पृथक कुछ ऐसे प्रतीकों का संकलन भी किया है जो पारम्परिक रूप से साँझी में प्रयुक्त किए जाते रहे हैं लेकिन इनका साँझी पर केन्द्रित अब तक हुए कार्यों में कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता जबकि साँझी के अन्तर्गत ऐसे कुछ प्रतीकों की विद्यमानता उन प्राचीन पोथियों तक में दर्शित होती है जो आज से लगभग २५० वर्ष पूर्व लिखी गई। डॉ॰ शर्मा ने प्रस्तुत कार्य के अन्तर्गत ऐसे सन्दर्भों का यथास्थान कुशलता पूर्वक संयोजन किया है। प्रस्तुत कार्य के दौरान वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रंथागार सहित रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ वृन्दावन, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान वृन्दावन, रसभारती संस्थान वृन्दावन, यशोदानंदन मंदिर, वृन्दावन एवं कामा (कामवन) के श्री मूलचन्द कौशिक का पूर्ण सहयोग मिला है, एतदर्थ यह सभी धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक में छायाचित्र संयोजन श्री उमाशंकर पुरोहित एवं श्रीकृष्ण कुमार मिश्रा द्वारा किया गया है तथा प्रकाशन कार्य हेतु डॉ॰ ब्रजभूषण चतुर्वेदी भी धन्यवाद के पात्र है।

—डॉ॰ महेशनारायण शर्मा
निदेशक
वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

ब्रज की साँझी

महत्व एवं उपयोगिता—

ब्रजभूमि भारत के सांस्कृतिक पक्ष का हृदय है। इस भूमि का नाम स्मरण मात्र राधाकृष्ण और उनकी लीलाओं का सुखद अनुभव प्रदान करने वाला है। श्रीकृष्ण की लीलाओं के साक्षी यहाँ के वन, पर्वत, सरिता, कुण्ड, सरोवर, पशु-पक्षी एवं रजकण सभी भगवतस्वरूप हैं। ब्रजमंडल के संबंध में यह लोक मान्यता युग-युगान्तर से प्रचलित देखी जा सकती है। ब्रज के इसी वैशिष्ट्य ने इसे क्षेत्रवाची से कहीं अधिक सांस्कृतिक एवं उपासनामय बना दिया है। इसका यह महत्व जहाँ विविध कालक्रमों में रचे उक्त विषयक साहित्य से प्रकट होता आया है, वहीं मुगलकाल में ब्रज के सांस्कृतिक पक्ष को एक नई संचेतना मिली।

मध्यकाल में तीव्रता से मुखरित भक्ति आंदोलन की प्रतिध्वनि ब्रजभूमि पर स्पष्टत: देखी जा सकती है। ब्रजमण्डल में स्थापित निम्बार्क, बल्लभ, गौड़ीय, हरिदासी, राधावल्लभ, चरणदासी, ललित एवं माध्व आदि सम्प्रदायों में सेवाभाव की अनूठी मान्यताओं ने विविध कला-परम्पराओं को जन्म दिया। यहाँ प्रभु को लाड़-लड़ाते हुए भक्ति के प्रतिफल में उपजी इन परम्पराओं का वैविध्य देखते ही बनता है। बात चाहे साँझी मनोरथ की हो अथवा फूल बंगला, नौकाविहार, फूलडोल, गुलाबडोल, चौसर खेल, चन्दनोत्सव, खसखाना एवं रथयात्रा जैसे अन्यान्य उत्सवों की; सभी में ब्रजभूमि का लालित्य अलग ही दर्शित देखा जा सकता है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, गोस्वामी श्रीहित हरिवंश, स्वामी श्री हरिदास, संत प्रवर हरिराम व्यास आदि सहित इनकी शिष्य-प्रशिष्य परम्परा तथा देश के अन्यान्य अंचलों से कृष्ण भक्ति में रचे-पगे यहाँ आए संत महानुभावों ने इसकी महत्ता का साक्षात्कार आमजन से कराया। लगभग पाँच शताब्दी पूर्व ब्रज के इस पुननिमाण में कला परम्पराओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ की लोक एवं देवालयी संस्कृति में रचा-पगा सांझी मनोरथ शुरू से ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता आया है। रसिक भक्त चाचा हित वृन्दावन दास जी की यह भावाभिव्यक्ति स्थानीय परम्परा में सांझी के महत्व का बोध कराने वाली है—

मनवांछित फल पाइऐ, जो कीजै इंहि सेव।
सुनौ कुंवरि वृषभानु की, यह सांझी सांचौ देव।।

चित्रकार द्वारा तूलिका के माध्यम से जल एवं तैल रंगों के द्वारा सुन्दर चित्रांकन करने की परम्परा सभी जगह देखी जा सकती है। लेकिन छिन्न पट्टिकाओं (सूती कपड़े की विविध सूखे रंगों की छोटी-छोटी पोटलियाँ) के द्वारा उंगलियों के इशारों से सूखे रंगों का प्रयोग करते हुए चित्रकारों की भांति ही सजीव दृश्य उपस्थित कर देना ब्रज में देवालयी सांझी परम्परा की अपनी विशिष्टता है।

ब्रजमण्डल में साँझी मुख्यत: दो रूपों में परिलक्षित देखी जा सकती है। प्रथम देवालय तथा आश्रमों में बनने वाली रंग, पुष्प एवं जल साँझी; जिसमें रंग साँझी इसका सर्वाधिक आकर्षक तथा महत्वपूर्ण पक्ष है। यहाँ मिट्टी से तैयार अठपहलू (अष्टभुजाकार आकृति) अथवा अन्य आकार-प्रकार के प्लेटफार्म पर सूत डालते हुए सूखे रंगों द्वारा अलंकारिक एवं ज्यामिती शैली से रंग साँझी तैयार की जाती है। साँझी उत्सव के दौरान रंग साँझी के चित्रण में राधा-कृष्ण विषयक लीलांकन तथा सूर्य, चन्द्र एवं वन्य हरीतिमा में धूप-छाया का सम्मिश्रण देखते ही बनता है। वहीं इस अवधि में ब्रज के ग्राम्यांचल में गोबर द्वारा दीवार पर प्रतिदिन एक नई आकृति जैसे पान सुपारी, नाव, डलिया, खजूर का पेड़, किलाकोट, तंतूरा (गदा), स्वस्तिक, गोवर्धनधारी कृष्ण, आठ कली का फूल, जैसी आकृतियाँ बनाकर उन्हें कौड़ी, फूल-पत्ती, पीतर पन्नी एवं मिट्टी के रंग-बिरंगे आभूषणों से सज्जित किया जाता है। ब्रज में रोजाना दीवार पर बनाए जाने वाले चित्रों में इसकी क्रम भिन्नता के साथ ही चित्रांकन वैविध्य यहाँ लोक में साँझी के प्रति उल्लास का परिचायक है। कुल मिलाकर पितृ पक्ष के दौरान ब्रज क्षेत्र में आयोजित यह वैविध्यपूर्ण मनोरथ लोगों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता आया है। देवालयी सांझी में जहाँ इसके स्वरूप, उद्‌भव एवं विकास को लेकर अलग-अलग पक्ष दर्शित होते हैं वहीं ब्रजमंडल के देहात में अलग-अलग स्थलों पर इसका चित्रांकन वैविध्य देखते ही बनता है। देवालयी परम्परा में सांझी रचना श्रम एवं समय साध्य कार्य है। उत्सव के दौरान परम्परागत समूह द्वारा इसे सेवा भाव से पूर्ण किया जाता है। पितृ-पक्ष में इस मनोरथ के अंतर्गत यहाँ प्रतिदिन एक नई सांझी का चित्रण किया जाता है।

ब्रजमंडल में पितृ-पक्ष के दौरान सांझी की परम्परा के प्रमाण काफी पूर्व से दृष्टिगोचर होते हैं। देवालयों में होने वाले सांझी मनोरथ के साथ ही स्थानीय लोक परम्परा में गोबर के प्रयोग से बनने वाली सांझी के आयोजन यहाँ लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। विभिन्न सम्प्रदायों में सांझी परम्परा के पृथक-पृथक स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं। देवालयी साहित्य में उल्लिखित अनेक अल्पज्ञात-अज्ञात हस्तलिखित विवरण उक्त विषयक महत्व दर्शाने वाले हैं। ब्रज के देवालयों में जहाँ पितृ-पक्ष के दौरान विभिन्न सम्प्रदायों में अपनी-अपनी मान्यतानुसार प्रभु की विविध लीलाओं का सूखे रंगों द्वारा चित्रांकन कर आकर्षक सांझी तैयार की जाती है, वहीं ब्रज की लोक परम्परा में इसका पृथक स्वरूप दर्शनीय है जिसका अपना विस्तृत कथानक है। प्राचीन दस्तावेजों, हस्तलिखित ग्रंथ तथा वाचिक परम्परा में ब्रज की गोबर सांझी पर केन्द्रित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं जिन पर अब तक पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ सका है।

हालांकि स्थानीय देवालयों में साँझी को लेकर वह पहिले जैसा उत्साह देखा नहीं जाता लेकिन फिर भी गोकुल, कामा, वृन्दावन, बरसाना, दाऊजी एवं मथुरा आदि स्थानों पर आज भी इस परम्परा की झलक देखी जा सकती है। सांझी तैयार करने वाले उस्तादों की अपनी पृथक शब्दावली है। जिसके अंतर्गत वे ***हौंद, लपेट, पचेली, दबी-दाबी, गलता, सूत दबानौ, कैंड़ा, सूत उठानौ, खटबुनाई एवं रहल*** जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए कार्य करते देखे जा सकते हैं। वाचिक परम्परा में विद्यमान ऐसी कई महत्वपूर्ण जानकारियां शोधार्थी एवं पर्यटकों के लिए अब तक अल्पज्ञात ही रही हैं। हालांकि ब्रज संस्कृति के इस महत्वपूर्ण पक्ष पर कुछ कार्य हो चुके हैं तथापि इसका वैविध्य अब तक अनुद्घाटित अथवा अल्पज्ञात ही रहा है। ब्रज के देवालयों में बनने वाली साँझी का कला पक्ष जितना सबल है उतना ही इस परम्परा पर केन्द्रित साहित्य भी विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों के हस्तलिखित ग्रन्थों में देखा जा सकता है। प्रस्तुत कार्य के अन्तर्गत साँझी के कुछ साहित्यिक पक्ष का संकलन भी ब्रजमण्डल के विभिन्न स्थलों से किया गया है। भले ही इस परम्परा में आज पूर्व जैसी वह समृद्धि देखने को नहीं मिलती जिसमें इससे जुड़े उस्ताद लोग अपनी कलात्मक सांझियाँ तैयार करते हुए परस्पर प्रतिस्पर्धा करते प्रतीत होते थे, जो स्थानीय जन में 'सांझी लड़ानौ' जैसे शीर्षक से संज्ञित था लेकिन आज भी कुछ एक स्थलों पर इस परम्परा का निर्वहन लोगों को

अचम्भित करने वाला है। प्रस्तुत परियोजना के माध्यम से हमारा उद्देश्य ब्रज की सांझी परम्परा से जुड़े वाचिक एवं देवालयी अल्पज्ञात- अज्ञात साहित्यिक संदर्भों का संकलन कर उन्हें एक सूत्र में पिरोते हुए पर्यटक, शोधार्थी एवं सुधीजनों के समक्ष प्रस्तुत करना है जिससे ब्रज की इस परम्परागत विधा का समग्र वैविध्य सामने आ सके।

ब्रजमण्डल और साँझी की परम्परा—

कला परम्पराओं के पल्लवन एवं संवर्द्धन में ब्रजभूमि का योगदान आरम्भ से ही रहा है। जिस प्रकार ब्रज का अपना परम्परागत धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास रहा है, उसी प्रकार ब्रजमण्डल में ललित कलाओं की भी एक सुदीर्घ परम्परा देखी जा सकती है। कलानिधि श्रीकृष्ण चौंसठ कलाओं के ज्ञाता थे। अतैव यहाँ के जन-मन में कला के प्रति अनुराग उसी ऊर्जा से संचरित समझा जा सकता है। ब्रज में साँझी का कथानक कृष्ण कालीन है। मान्यता है कि गोधूलि बेला (सायंकाल) में जब श्रीकृष्ण ग्वामण्डली के साथ गोचारण करके लौटते तो मार्ग में वृषभानु सुता श्रीराधा सखी परिकर सहित विभिन्न प्रकार के पुष्पों को भूमि पर सजाकर उनका स्वागत करतीं। जिसे देख सभी ग्वाल-बाल आनन्दित होते थे। कालांतर में यही परम्परा साँझी नाम से विख्यात हुई। इस साँझी का अधिक निखरा हुआ रूप ब्रज के देवालयों में आज भी देखा जा सकता है।

विभिन्न सम्प्रदाय के देवालयों में पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित इस परम्परा ने साहित्यिक एवं कलात्मक दोनों दृष्टि से समय के सापेक्ष पर्याप्त वैविध्य ग्रहण किया। यह साँझी परम्परा से जुड़े वैष्णव भक्तों की निष्काम भक्ति का ही प्रतिफल है कि जहाँ उनके द्वारा इसके अंकन में नए-नए प्रयोगों से इसे एक आकर्षक स्वरूप मिला, वहीं इस परम्परा को केन्द्र में रख स्थानीय भक्त साधकों द्वारा पृथक-पृथक कालक्रम में रचा गया विपुल साहित्य ब्रजमण्डल में इस परम्परा के महत्व तथा प्रभाव का बोध कराने वाला है। ब्रजमण्डल में साँझी का समग्र स्वरूप समझने के लिए इसके लोक एवं देवालयी दोनों पक्षों का आलोड़न आवश्यक है। पितृ-पक्ष के दौरान जहाँ ब्रज के देवालयों में सूखे रंगों द्वारा मिट्टी के अठपहलू पर छिन्नपट्टिका का प्रयोग करते हुए उंगलियों के इशारों से

ज्यामितिक एवं अलंकारिक साँझियाँ तैयार की जाती हैं वहीं स्थानीय लोक परम्परा में उक्त अवधि के दौरान कुँवारी लड़कियों द्वारा बनाए जाने वाली गोबर-साँझी के चित्रांकन लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ब्रज में गोबर साँझी पर केन्द्रित अब तक हुए कार्यों में इसके चित्रांकन को लेकर एक क्रमबद्धता की चर्चा होती रही है। जिसके आधार पर पहले दिन से लेकर सोलहवें दिन तक के चित्र विशेष की बात परम्परागत रूप से लगभग एक ही तरह सभी लोगों ने कही है जबकि ब्रजमण्डल के अनेक गाँवों तथा एक ही गाँव के अलग-अलग मौहल्ले में हमारे द्वारा किए गए सर्वेक्षण से यह उद्घाटित होता है कि ब्रज में पृथक-पृथक स्थलों पर तिथि तथा दिवस के हिसाब से पृथक-पृथक चित्रांकनों की परम्परा है। कहीं कोई चित्रांकन दूसरे दिन तो कभी वही चित्रांकन किसी और दिवस पर उसी रंग-ढंग में देखा जा सकता है। इतना ही नहीं पितृ-पक्ष की अवधि में आयोजित इस उत्सव के दौरान ब्रज के अलग-अलग स्थलों पर भ्रमण करते हुए कई ऐसे साँझी-चित्र भी देखे जा सकते हैं जिनका उल्लेख वर्तमान लिखित परम्परा में अब तक कहीं नहीं मिलता।

ब्रज के ग्राम्यांचल में बनने वाली गोबर-साँझी का अध्ययन अब तक एक लीक पर चलता रहा अथवा यूँ कहिए कि किसी स्थान विशेष पर जाकर साँझी सम्बन्धी जानकारी का १६ दिवसीय संकलन कर उसके आधार पर अपनी बात कहने की परम्परा-सी चलती रही जिसके चलते इस महत्वपूर्ण परम्परा से जुड़ी इसकी व्यापकता अछूती ही बनी रही है। गोबर साँझी के सन्दर्भ में ब्रज के बरसाना, राधाकुण्ड, अड़ींग, वृन्दावन एवं कामा सहित अनेक स्थलों पर इन चित्रों की विविधता आज भी देखी जा सकती है।

भारतीय प्रतीक परम्परा में हजारों प्रतीक और मिथक विद्यमान हैं। प्रतीक और मिथकीय परम्पराओं के मूल में मानव के परम्परागत ज्ञान का स्रोत विद्यमान है। विभिन्न भारतीय पौराणिक आख्यानों में भी प्रतीकों का वैभव देखा जा सकता है। समय के सापेक्ष इनमें बदलाव होता है। पुराने प्रतीकों की जगह नए प्रतीक जन्मते हैं लेकिन प्रतीक परम्परा कभी समाप्त नहीं होती। लोक प्रतीकों के अध्ययन को लेकर जागृति भारत ही नहीं अपितु पश्चिम में भी देखी जा सकती है। इस सन्दर्भ में पश्चिम के एक प्रतीक शास्त्री 'ए.एन.व्हाइट हेड' का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने प्रतीक के सृजन अर्थात् प्रतीक स्थापित होने की परम्परा का गहराई से अध्ययन किया। उनके अनुसार ''मनुष्य का मन अर्थशून्यता या निरर्थकता'' में कभी नहीं टिक सकता। निरर्थकता को अर्थ देना ही प्रतीकी-करण है।[१]

मान्यता है कि लोक में मूर्तिपूजा से पहिले प्रतीक पूजा प्रचलित थी। बौद्धकाल में मूर्ति विज्ञान की परम्परा भारत में देखी जा सकती है बुद्ध की मूर्तियों के साथ ही पुराणों में उल्लिखित देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी यहाँ प्राचीन काल से बनती रही हैं। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में तो मूर्ति निर्माण की परम्परा पर व्यापक दृष्टि डाली गई है लेकिन इस सबसे पहिले देव प्रतिमा का अभिप्राय प्रतीक माध्यम से ही दर्शाया जाता था। जितने भी देवता या अवतार हुए उनकी पहिचान के लिए उन्हें प्रतीक प्रदान किए गए हैं। लोक चित्रांकन में प्रयुक्त कमल, हनुमान की गदा, स्वस्तिक, सूर्य, चन्द्र, तारे, चक्र एवं वृक्ष आदि प्रतीक कोई साधारण चिह्न नहीं अपितु इनमें समग्र समाज का सांस्कृतिक परिदृश्य समाया रहता है। लोक चित्रांकन परम्परा के विकास में नारी की भूमिका शुरू से ही रही है। बंगाल, आसाम में अल्पना, दक्षिण भारत में कोलम, बिहार में अरिबाना, राजस्थान में अपनी पारम्परिक साँझी के रूप में प्रतीक परम्परा का वैविध्य देखा जा सकता है।

ब्रज लोक परिवेश में प्रचलित आठ वार और नौ त्यौहार लोकोक्ति यहाँ के सांस्कृतिक वैविध्य का बोध कराती है। यहाँ के देवालयों में उत्सव-मनोरथ की परम्परा हो या आमजन के तीज-त्यौहार सभी में उत्साह का एक नया भाव परिलक्षित देखा जा सकता है। ब्रजमण्डल में पितृ-पक्ष के दौरान साँझी बनाने की प्राचीन परम्परा रही है। इस दौरान यहाँ बनने वाली साँझियों का स्वरूप देखते ही बनता है। देवालयों में जहाँ फूल-पत्तियों तथा मिट्टी के अठपहलू पर सूखे रंगों द्वारा ज्यामिती एवं अलंकारिक शैलियों की साँझी बनाई जाती है वहीं इन स्थलों पर कभी-कभी पानी के ऊपर तथा नीचे जल-साँझी के आयोजन भी होते हैं। जिसमें विशेषज्ञ लोग पानी के नीचे सूखे रंगों का प्रयोग इस प्रकार करते हैं कि वे उसके ऊपर पानी होने पर भी घुलते नहीं तथा ठीक इसके विपरीत पानी के ऊपर भी सूखे रंगों के प्रयोग से चित्ताकर्षक लीलाएं बनाई जाती हैं जिनका अवलोकन कर

१. लोकवार्ता विज्ञान भाग-१ पृ.४६ उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, डा.हरद्वारी लाल शर्मा

आमजन बस देखता ही रह जाता है। देवालयों में साँझी बनने का क्रम प्रायः पुष्प साँझी से आरम्भ होता है। जिसमें विभिन्न प्रकार की फूल-पत्तियों का प्रयोग करते हुए मध्य भाग में राधा-कृष्ण के लीला सम्बन्धी चित्र सजाए जाते हैं। पुष्प साँझी के बाद इन देवालयों में रंग-साँझी के आयोजन शुरू होते हैं जिसमें परम्परागत सेवाभावी विशेषज्ञों के दल अपने हुनर का प्रदर्शन करते हैं। साँझी की परम्परा में हांलाकि आज पहले जैसा वह उत्साह देखने को नहीं मिलता जिसकी पूर्व में व्यापक चर्चाएं थीं। बुजुर्गों की मानें तो पहले नगर के विभिन्न देवालयों में बनने वाली साँझी को लेकर परस्पर प्रतियोगिता सी रहती थी, जिसके चलते उस्ताद लोग अपने शागिर्दों को निर्देशित करते हुए उत्कृष्ट साँझी रचना करते। आज भौतिकता के प्रभाव से साँझी की यह परम्परा प्रभावित हुई है। पूर्व में रंग-साँझी बनाने के लिए प्रकृति से प्राप्त खनिज आदि को कूट पीसकर, कपटछन करके साँझी हेतु रंग तैयार किए जाते लेकिन वर्तमान में यह प्रक्रिया बदल चुकी है। जिसके चलते आज की साँझी में पहले जैसी वह बात नहीं दिखती लेकिन फिर भी नगर के कुछ एक देवालयों में इस परम्परा का निर्वहन बदस्तूर जारी है। आज भी पितृ-पक्ष के दौरान बरसाना के श्रीजी मंदिर, वृन्दावन के राधाबल्लभ, राधारमण, शाहजहाँपुर वाले मंदिर, राधिकाबल्लभ एवं यशोदानंदन आदि मंदिरों में साँझी के दर्शन किए जा सकते हैं। वहीं गोकुल, दाऊजी तथा कामवन में भी इस देवालयी मनोरथ की छटा देखते ही बनती है। ब्रज के आमजन में साँझी का एक पक्ष गोबर साँझी के नाम से भी प्रतिष्ठित है जिसका चित्रांकन भूमि पर न होकर दीवार पर किया जाता है। देवालयों में बनने वाली साँझी से पृथक इस गोबर साँझी का अपना कथानक है जिसमें प्रत्येक दिन की कहानी के हिसाब से दीवार पर गोबर द्वारा अलग-अलग चित्र बनाए जाते हैं। नगर के विभिन्न क्षेत्रों में कुमारी बालिकाओं द्वारा इसके चित्रांकन देखते ही बनते हैं। ब्रज की लोक एवं देवालयी साँझी को निम्नानुसार समझा जा सकता है–

१. **ब्रज की देवालयी परम्परा में साँझी**

२. **ब्रज की लोक परम्परा में साँझी**

ब्रज की देवालयी परम्परा में साँझी–

ब्रज लोक परम्परा में साँझी का चित्रांकन लोक तथा देवालयी दो रूपों में देखा जा सकता है। जिसमें इसका देवालयी पक्ष अपने अदभुत आकर्षण के चलते लोगों को शुरू से ही अचम्भित एवं आकर्षित करता आया है। उत्सव धर्मिता ब्रज संस्कृति का महत्वपूर्ण पक्ष है। ब्रज क्षेत्र पुराने समय से ही भारतवर्ष की प्रमुख सांस्कृतिक इकाई रहा हैं ब्रजमण्डल में भक्ति के नव नूतन प्रयोगों से अनेक कला-परम्पराएं उद्घाटित हुई जो शनैः-शनैः लालित्य को प्राप्त होती हुई आज तक हमारे समक्ष विद्यमान हैं। यहाँ साँझी का आयोजन हो या वाणी लेखन की परम्परा, चन्दनोत्सव हो या फूल बंगलों अथवा समाजगायन के आयोजन सभी में भक्ति का पुट एवं पावन ब्रज की सौंधी सुगन्ध दर्शित होती है। यहाँ सहज रूप में भक्ति से उपजी यह परम्पराएं आज समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली हैं।

देवालयी साँझी का कथानक कृष्ण कालीन है लेकिन सही मायनों में १६ वीं शताब्दी से इस परम्परा ने एक नया रूप ग्रहण किया। कालांतर में ब्रज के देवालय इस परम्परा के प्रमुख आश्रय स्थल बने जहाँ सुधीजनों ने पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला का क्रमिक विकास एवं संवर्द्धन किया। अपने अनूठे आकर्षण के चलते ब्रज की इस परम्परा ने सुदूर क्षेत्रों में अपनी धाक जमाई, कालांतर में ब्रज संस्कृति का प्रभाव जहाँ-जहाँ पहुँचा वहाँ इस कला को भी पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। बुंदेलखण्ड में राधाबल्लभ सम्प्रदाय से जुड़े देवालयों में आज भी साँझी उत्सवों की धूम देखते ही बनती है। ठीक इसी तरह राजस्थान के करौली, जयपुर, नाथद्वारा सहित अलग-अलग क्षेत्रों में भी ब्रज की देवालयी साँझी का विस्तार देखा जा सकता है। सही अर्थों में कहा जाय तो ब्रज के विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों ने इस परम्परा का पर्याप्त संरक्षण एवं संवर्द्धन किया।

ब्रजमण्डल में १६ वीं शताब्दी से आरम्भ इस देवालयी परम्परा ने हर युग में एक नया वैविध्य ग्रहण किया, परिणामतः यहाँ साँझी उत्सव कई स्वरूपों में परिलक्षित हुआ। ब्रज की देवालयी साँझी परम्परा के इस अनूठे वैविध्य को निम्नानुसार समझा जा सकता है–

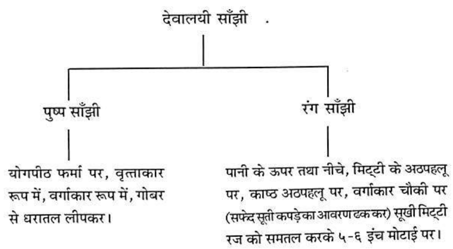

वृन्दावन सहित पूरे ब्रजमण्डल में एक से बढ़कर एक कलात्मक साँझियाँ विभिन्न वैष्णव देवालयों में देखी जा सकती हैं। जिनके तैयार किए जाने की अपनी-अपनी पारम्परिक विधियाँ हैं। देवालयी साँझी के इस वैविध्य को पुष्प तथा रंग साँझी के परिपेक्ष्य में निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

पुष्प साँझी—

पुष्प साँझी की परम्परा का उदभव मुख्यत: राधाकृष्ण की उस लीला से सम्वन्धित है जिसमें वृषभान नन्दिनी श्रीराधा द्वारा अपने सखी परिकर सहित गौचारण कर लौटते श्रीकृष्ण के लिए मार्ग पर नाना प्रकार के पुष्पों से सज्जा की जाती, जिसे देख श्रीकृष्ण एवं उनकी ग्वालमण्डली काफी आनन्दित होती थी। वास्तव में पुष्प साँझी के आयोजन देवालयी साँझी का आरम्भिक दौर है जिसने समय के सापेक्ष पर्याप्त वैविध्य ग्रहण किया। ब्रज के देवालयों में पितृपक्ष के दौरान रंग साँझी से पूर्व पुष्प साँझी के आयोजन आज भी देखे जा सकते हैं। यहाँ विभिन्न वैष्णव देवालयों में योगपीठ, वृत्ताकार एवं वर्गाकार रूप में अथवा गोबर से लिपे धरातल पर पुष्प साँझी के नयनाभिराम दृश्य उपस्थित किए जाते हैं जिनके मध्य में हौद के अन्तर्गत विभिन्न देवालय अपने-अपने आध्यात्मिक संविधान के अनुसार लीला दृश्यों के चित्र विराजित करते हैं। यह पुष्प साँझी का अपना वैशिष्ट्य है कि अपने कला रूप में जहाँ इसने स्वयं को बखूबी प्रतिष्ठित किया वहीं देवालयों से जुड़ी समृद्ध साहित्य परम्परा के अन्तर्गत पाण्डुलिपियों के रूप में इसका साहित्यिक वैभव आज भी देखा जा सकता है। (देखे– साहित्यिक पक्ष अध्याय)

पुष्प साँझी तैयार करने के लिए इसके कला-विशेषज्ञ विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फूल, घास एवं पत्तियों का संचय करने के उपरान्त विभिन्न आकार-प्रकार के फर्माओं के अन्तर्गत सुन्दर साँझी तैयार करते हैं। मध्य हौद का स्थान खाली छोड़ा जाता है। जहाँ साँझी पूर्ण होने पर शुद्धतापूर्वक चित्रपट विराजित किया जाता है। पुष्प साँझी तैयार करने की प्रक्रिया को निम्नानुसार समझा जा सकता है—

पुष्प साँझी हेतु सामग्री संचयन और उसका वैविध्य—

सायंकाल तैयार की जाने वाली पुष्प साँझी के लिए सामग्री संचयन का कार्य मंदिर के श्रद्धालु भक्तों द्वारा सुबह से ही आरम्भ किया जाता है। पूर्व में इस कार्य के लिए प्राय: देवालयों में फूल सेवी नियत होते थे। जिनका कार्य श्रीविग्रह की सेवा के लिए विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्पों का चयन करना होता था। साँझी उत्सव के दौरान ये लोग बाग-बगीचों से विभिन्न आकार-प्रकार के रंग बिरंगे सुगन्धित पुष्प एकत्रित करते थे। राधाबल्लभ सम्प्रदाय के साहित्य से साँझी सम्बन्धी पदों के संकलन के दौरान हमें एक पाण्डुलिपि ऐसी भी मिली जिसे ध्रुव अली शरण ''फूल सेवी'' नामक महात्मा द्वारा तैयार किया गया था। प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ सेवा में जुटे यह फूल सेवी वैष्णव साहित्य के भी अच्छे जानकार थे। इनके द्वारा न केवल मंदिरों में होने वाले समाज गायन में सहभागिता की जाती बल्कि साहित्य सृजन में भी इनकी गहरी दिलचस्पी थी। देवालयों से सम्बद्ध साँझी-कलाविदों के द्वारा प्रतिदिन की साँझी लीला के हिसाब से तैयारियाँ की जाती हैं। स्थानीय बाग-बगीचों से फूल-पत्ती तथा घास एकत्र करने के उपरान्त उन्हें व्यवस्थित किया जाता है। फूलों को अलग-अलग डलियाओं में रखकर बार्डर बनाने अथवा भराव करने के लिए कैंची के द्वारा घास की कतरन तैयार की जाती है तथा विभिन्न प्रकार के पुष्पों की पंखुड़ियाँ अलग डलियाओं में रखी जाती हैं। इसी प्रक्रिया में कुछ कला विशेषज्ञ पत्तों को मोड़कर उन्हें धागे से पिरोते हुए पत्तों की लड़ी तैयार करते हैं जिसका प्रयोग प्राय: बाहरी किनारों पर किया जाता है। इस प्रकार संकलित सामग्री का यथा संयोजन कर यह कलाविद प्रतिदिन एक नए फर्मे पर एक नई साँझी बनाते हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि पुरानी साँझी में प्रयुक्त सामग्री यथा पुष्प, घास, पत्ती आदि को श्रद्धापूर्वक भजन-कीर्तन करते हुए यमुना जल अथवा पवित्र कुण्ड सरोवरों में विसर्जित किया जाता है।

साँझी का कलात्मक स्वरूप ही उसकी अहम विशिष्टता है। उसके

कलापक्ष को चित्ताकर्षक बनाने के लिए साँझी परम्परा से जुड़े कलाविद् कई प्रकार के फर्मों (योगपीठ, काष्ठ की अष्टभुजी चौकी, वर्गाकार, वृत्ताकार अथवा गोबर से लिपे धरातल) का प्रयोग कर साँझी रचना करते हैं। वृन्दावन के देवालयों में साँझी उत्सव के अन्तर्गत प्रथम चरण के रूप में ५ अथवा ७ दिन पुष्प साँझी तैयार किए जाने की परम्परा है। जिसमें विभिन्न आकार-प्रकार की कलात्मक साँझियाँ तैयार की जाती हैं। ब्रज के बरसाना, वृन्दावन, कामवन एवं अन्यान्य पारम्परिक स्थलों पर आज भी साँझी के आरम्भिक दिनों में तरह-तरह की फूल साँझी बनाई जाती हैं। (चित्र- १-५)

रंग साँझी—

ब्रजमण्डल के बरसाना, दाऊजी (बलदेव), कामवन, गोकुल एवं वृन्दावन सहित अन्य-अन्य स्थलों पर बनने वाली रंग साँझी लोगों को शुरू से ही अपनी ओर आकर्षित करती आई है। सही मायनों में ब्रज के देवालयों की इस रंग साँझी ने अलग-अलग कालक्रम में अपनी विकास यात्रा के साथ चमत्कारिक आकर्षण के कई पड़ाव पार किए हैं। यहाँ राधा-कृष्ण की पावन स्मृति से जुड़े प्रत्येक लीला स्थल की साँझी कला स्वयं में पर्याप्त विविधता समोए हुए है। वृन्दावन के विभिन्न देवालयों में जहाँ मिट्टी के अठपहलू पर घुटाई करके साँझी रचना हेतु आधार तल तैयार किया जाता है वहीं बरसाना में सूखी रज (मिट्टी) पर साँझी चित्रित की जाती है। इतना ही नहीं यहाँ अलग-अलग स्थानों पर साँझी के हौद (मध्य) में चित्रांकनों का वैविध्य भी इस परम्परा की अपनी विशेषता है। वृन्दावन के विभिन्न देवालयों में जहाँ श्रीमद्भागवत या पारम्परिक वाणी साहित्य में वर्णित युगल आराधना के आधार पर चित्रांकन किए जाते हैं वहीं बरसाना स्थित श्रीजी मंदिर की साँझी में ब्रज के लीला स्थलों के चित्रण की परम्परा दृष्टिगोचर होती है। चित्रांकन का यही साम्य यहाँ वल्लभकुल के देवालयों में भी देखा जा सकता है। ब्रजमण्डल में उत्तर मध्यकाल के दौरान वंशी अलीजी के द्वारा प्रवर्तित ललित सम्प्रदाय में भी राधाकृष्ण के लीलास्थलों यथा संकेत वट, कुसुम सरोवर, बहुलावन, वृन्दावन, पीली पोखर एवं राधाबाग आदि के चित्र बनाए जाते हैं। यह ब्रज की देवालयी साँझी परम्परा का अनूठा आकर्षण ही था कि एक जमाने में इसका प्रभाव राजस्थान तथा मध्य भारत तक पहुँचा जहाँ अब तक यह परम्परा

अपने गौरवशाली अतीत की गाथा कह रही है। राजस्थान के करौली, जयपुर, श्रीनाथद्वारा, मध्य प्रदेश के गढा, दतिया सहित अन्य स्थलों के कई देवालयों में पितृ पक्ष के दौरान साँझी के आयोजन देखे जा सकते हैं। ब्रज के देवालयों में पितृ पक्ष के दौरान आयोजित इस साँझी उत्सव में रंग साँझी अंकन के दौरान धरातल की प्रविधि को निम्नानुसार समझा जा सकता है—

रंग साँझी के धरातल (आधार)

- वर्गाकार
- अष्टभुजाकार
- वृत्ताकार
- सितारानुमा काष्ठ चौकी

रंग साँझी के विविध चरण—

ब्रज के देवालयों में बनने वाली रंग साँझी का कार्य कई चरणों में पूरा होता है। साँझी मनोरथ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य इसका धरातल (आधार) तैयार किया जाना है जिस पर पूरे पितृ पक्ष के दौरान प्रतिदिन अलग-अलग अंकन किए जाते हैं। यहाँ साँझी रचना के लिए तैयार किए जाने प्लेटफार्म (आधार तल) को तैयार करने की अपनी अनूठी प्रक्रिया है जिसे देवालयी परम्परा से जुड़े कलाविदों ने पीढ़ी दर पीढ़ी अपने अनुभव तथा प्रयोगों के आधार पर शनै-शनै विकसित किया है। रंग साँझी के लिए तैयार किए जाने वाले मिट्टी के अठपहलू को तैयार करने के दौरान मिट्टी की छनाई, पिसाई और तराई का कार्य करते हुए साँझी विशेषज्ञ अपने निर्धारित अष्टभुजाकार, वर्गाकार, वृत्ताकार एवं सितारानुमा फर्मे में उसे पारम्परिक प्रविधियों द्वारा तैयार करते हैं। कभी-कभी यह धरातल सीढीनुमा भी बनाया जाता है जिसकी ऊँचाई लगभग एक या डेढ फुट तक होती है। वृन्दावन के देवालयों में प्रायः अष्टभुजाकार चौकियाँ बनाए जाने की परम्परा है जिन पर कई चरणों में कार्य करते हुए उसे साँझी बनाने के अनुकूल तैयार किया जाता है। मिट्टी के लौंदे को लचीला बनाते हुए उसे ज्यामिती विधि द्वारा अष्टभुजाकार रूप प्रदान करना तथा उसकी पुनः-पुनः घुटाई करते

हुए (चित्र-७) डबक[२] दूर करना इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कहीं-कहीं घुटाई के दौरान कपूर का चूरा, अजवायन का सत अथवा हींग के पानी का प्रयोग भी किया जाता है ताकि मिट्टी से तैयार किए जाने वाले इस अष्टभुजाकार धरातल को कीड़े आदि हानि न पहुँचा सकें। चूँकि साँझी का यह मनोरथ देवालयों की अपनी विशिष्टता है। अत: इसमें पवित्रता तथा पारम्परिक मान्यताओं का पूरा ध्यान रखा जाता है।

मिट्टी का अठपहलू तैयार करने की प्रविधि के दौरान सर्वप्रथम उसे वृत्ताकार रूप में लाया जाता है। (चित्र-६) वृत्ताकार रूप में लाने के दौरान ही उसकी छुट-पुट मरम्मत करते हुए मध्य में धुरी लगाकर कच्चे केन्द्र द्वारा वृत्त को ठीक करते जाते हैं। सही मायनों यह साँझी का वह स्थल होता है जहाँ से पूरी साँझी के फर्मे को नियंत्रित कर उसे सही आकार-प्रकार में लाया जाता है। वृत्त सही होने पर उसकी 'पहल छँटाई' की जाती है। (चित्र-९) तदोपरान्त गुरमाला द्वारा निरन्तर धुटाई करते हुए उसके समतलीकरण की प्रक्रिया चलती है। ब्रज के देवालयों में साँझी तैयार करने वाले पारम्परिक कलाविदों ने अपने इस हुनर पर केन्द्रित शब्दावली विकसित की है जिसके संकलन की ओर इससे पूर्व किसी अध्येयता का ध्यान ही नहीं गया। वाचिक परम्परा में विद्यमान उन शब्दों का प्रयोग करते हुए साँझी कलाविद इस कार्य को चरणबद्ध रूप से पूर्ण करते हैं। हालाँकि ब्रज के भिन्न-भिन्न देवालयों में हमें एक ही प्रकार की प्रक्रिया अलग-अलग पारिभाषिक शब्दावली से सम्बोधित किए जाने की परम्परा भी दृष्टिगोचर हुई तथापि कुछ सर्वमान्य विवरण उल्लिखित हैं—

हौद—

यह देवालयों में बनने वाली रंग साँझी का वह महत्त्वपूर्ण स्थल है जिस पर साँझी का विषय चित्रित किया जाता है। साँझी के मध्य भाग (केन्द्र) में स्थित यह स्थल वर्गाकार, अष्टभुजाकार, सितारानुमा एवं अन्य आकार प्रकार का हो सकता है। हौद का यह आकार-प्रकार साँझी अंकन में प्रयुक्त बेलों की संरचना पर निर्धारित रहता है। साँझी से जुड़े कलाविद दो प्रकार से हौद तैयार करते हैं—

२. डबक— मिट्टी से अठपहलू बनाने के दौरान कहीं-कहीं कंकड़ आदि आने या अन्य कारणवश इसके चटकने पर इसकी गुरमाला से पुन:-पुन: घुटाई की जाती है। यह क्रम इसके सूखने तक प्राय: चलता रहता है।

१. विषय (लीला) बनाकर हौद तैयार करना २. हौद बनाने के उपरान्त उसके अन्तर्गत विषय (लीला) बनाना। हौद-अंकन के दौरान साँझी विशेषज्ञों के द्वारा पारम्परिक पोटरियों से रंग छानते हुए धूप-छाया (Shade-Light) का परिदृश्य उपस्थित करना उनकी इस कला का चरमोत्कर्ष प्रदर्शित करता है। साँझी में महारास लीला के अंकन के दौरान चन्द्रमा की धवल चाँदनी अथवा यमुना के प्रवाह या सूर्य की रोशनी के परिणामस्वरूप फूल-पत्तियों की चमक के रूप में यह हुनर इस कला की बारीकी प्रदर्शित करने वाला है। देवालयों में पितृ पक्ष के दौरान बनने वाली साँझी के अन्तर्गत इसके कला विशेषज्ञ अपनी-अपनी आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार हौद में राधा-कृष्ण अथवा वैष्णव सम्प्रदायों में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार लीलाएं अंकित करते हैं। (चित्र-२३, २४)

कैंड़ा—

साँझी में रंग पोटरी का कार्य शुरू करने से पूर्व कला-विशेषज्ञों द्वारा कैंड़ा का प्रयोग कर सूत आदि से फर्मा तैयार किया जाता है जिससे बेलों का संचालन कुशलतापूर्वक किया जा सके। देवालयों की साँझी परम्परा में कैंड़ा से तात्पर्य उस माप से है जिसके अनुपात में कलाविद अपनी चौकी (साँझी का आधार) के हिसाब से साँझी का फर्मा (नक्शा) निर्धारित करते हैं। कैंड़ा के नाम से सम्बोधित करते हुए यह कलाविद लकड़ी की सींक अथवा अखबार की पट्टी बनाकर नाप-तौल करने हेतु इसका उपयोग करते है। (चित्र-११)

सूत—

साँझी बनाने के लिए कला विशेषज्ञों द्वारा बार्डर, हौद अथवा बेलों के वैविध्य के दृष्टिगत विभिन्न प्रकार के सूत डाले जाते हैं जिसके अन्तर्गत वे नील, खड़िया पाउडर या पिसे हुए गेरू में धागा लपेट कर साँझी के धरातल पर सूत डालते जाते हैं। इन निर्धारित सूतों के अन्तर्गत ही साँझी विशेषज्ञ इसकी रचना के विविध चरण पूर्ण करते हैं। (चित्र-१०)

पछेली—

ब्रज के देवालयों में बनने वाली पारम्परिक सांझी में पछेली का प्रयोग साँझी की बाह्य रेखा (बार्डर) के रूप में किया जाता है। एक जमाने में यहाँ देवालयों में लकड़ी, पत्थर अथवा धातु के साँचों पर चाँदी (रजत) की पछेलियाँ तैयार की जाती थीं जिन्हें आश्यकतानुसार काटकर किनारों पर व्यवस्थित किया

जाता था। शनै-शनै यह क्रम रांगे में बदला लेकिन वर्तमान में इसके विकल्प के रूप में मार्बल पाउडर का प्रयोग किया जाने लगा है। (चित्र-१७)

छलनी या पोटरी—

साँझी रचना के दौरान विभिन्न रंगों के संयोजन में छलनी की महती भूमिका रहती है। साँझी बनाने वाले कलाविद सूत डालने के उपरान्त लीला दृश्यों में प्रयुक्त किए जाने वाले रंगों के हिसाब से छलनी का प्रयोग करते हैं। छलनी के कुशल संचालन द्वारा ही साँझी परम्परा से जुड़े यह कलाविद सूखे रंगों को उंगली के इशारों से छलनी के द्वारा छानते हुए ठीक वैसा ही दृश्य उपस्थित कर देते हैं जैसे कि एक चित्रकार जल एवं तैल रंगों के प्रयोग से सजीव चित्र बनाता है। पोटरी की प्रक्रिया भी इससे मिलती-जुलती होती है। साँझी की वेदी पर जब कँड़ा निर्धारित करके सूत डाला जाता है तो इसके बाद पोटरी की सहायता से अर्थात् चिह्नों को निर्धारित करते हुए विभिन्न बेलों की शक्लें निकाली जाती हैं। (चित्र- १५, १७)

खटबुनाई—

साँझी परम्परा से जुड़े विशेषज्ञों की अपनी पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार साँझी के जिस नक्शे (फर्मे) में भराव न हो खटबुनाई कहलाता हैं इस भराव के कारण ही फर्मे की स्पष्टता तथा बेल की चाल का मुखरित स्वरूप सामने आता है। जल्दबाजी में अगर साँझी के कलाकारों द्वारा बेलों के ओर पास भराव न किया गया हो तो ऐसी साँझी को खटबुनाई शब्द द्वारा सम्बोधित किए जाने की परम्परा स्थानीय देवालयों में देखी जा सकती है।

दबी-दाबी—

यह रंग साँझी में उभार प्रदर्शित करने की महत्वपूर्ण विधि है जिसके अन्तर्गत विविध प्रकार के प्रयोगों से कलाविद अपना हुनर प्रस्तुत करते हैं। साँझी रचना के अन्तर्गत दबी-दाबी का आशय यह है कि बेल एक बार दबे तथा दूसरी बार अन्य बेल को दाबे। यह साँझी परम्परा से जुड़े कलाविदों का अपना वैशिष्ट्य है कि वे इस प्रक्रिया को लगभग एक से सौ प्रविधियों तक पूर्ण करते हुए आकर्षक साँझी बनाते हैं।

चस—

ब्रज की वैष्णव देवालयी संस्कृति में चस शब्द का अर्थ स्वयं में

व्यापकता समोए हुए है। स्थानीय देवालयों में फूल बंगलों के आयोजन के दौरान जहाँ चस लगाने का तात्पर्य फूल बंगले के ठाठ (फ्रेम) के खाली किनारों को फूलों की लड़ी के द्वारा भरने की प्रक्रिया से है वहीं साँझी में चस, बेल बनाने के उपरान्त पोटरी (सूती कपड़े की छिन्न पट्टिका) द्वारा चटक रंग से लगाई जाती है। देवालयी साँझी परम्परा से जुड़े कलाविदों की मानें तो साँझी का वास्तविक स्वरूप चस लगाने के उपरान्त ही निखर कर सामने आता है। (चित्र-१७, २१)

गलता—

साँझी की ऊँचाई को प्रदर्शित करने वाला हिस्सा जो इसे चारों ओर से घेरे रहता है, गलता कहलाती है। कई देवालयों में सीढ़ीदार गलता भी तैयार की जाती है। अठपहलू , वर्गाकार एवं वृत्ताकार साँझी की दृष्टि से उस साँझी की गलता भी वैसी ही होती है। साँझी बनाने के उपरान्त आखिर में इसे भी पोटरियों से रंग छानते हुए सजाया जाता है। (चित्र-२२)

भराव जगाना—

यह साँझी तैयार किए जाने की प्रक्रिया का आखिरी चरण है जिसके अन्तर्गत साँझी को अंतिम रूप दिया जाता है अर्थात् इस प्रक्रिया के उपरान्त प्रसाद अर्पण करने के बाद साँझी मनोरथ प्राय: श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए तैयार रहता है। यह प्रक्रिया कभी हौद के बाद तथा तथा कभी हौद चित्रण से पूर्व भी होती है। देवालयों की साँझी परम्परा में भराव जगाने से तात्पर्य साँझी के उस चरण से है जिसमें उस्ताद लोग अपने निर्देशन में उसकी खामियों जैसे रंग का अनावश्यक रूप से छिटक जाना, कहीं रंग का हल्का या गहरा होना आदि समस्याओं को दूर कराते हैं। (चित्र-१५)

अपनी अति विशिष्टता के चलते ब्रज के वैष्णव देवालयों में पल्लवित इस साँझी मनोरथ ने न केवल अखिल भारतीय स्तर पर बल्कि विदेशों में भी अपनी पहिचान स्थापित की है। साँझी के कला पक्ष की इस अन्तर्राष्ट्रीय व्याप्ति का आधार इस परम्परा से जुड़े उन लोगों की साधना में सन्निहित है जिन्होंने पीढी दर पीढी हर युग में इसके कला पक्ष को अपने अभिनव प्रयोगों के द्वारा उत्तरोत्तर समृद्ध किया। आज के भौतिकवादी युग में भले ही वैष्णव भक्ति से जुड़ी यह देवालयी परम्परा प्रभावित हुई हो लेकिन इससे जुड़े कला विशेषज्ञों से वार्ता करने पर इस परम्परा का वह अनुद्घाटित पक्ष भी सामने आता है जो अब तक इन

कलाविदों की वाचिक परम्परा में ही संरक्षित रहा है। साँझी के इस पक्ष पर केन्द्रित कई लम्बी वार्ताओं के उपरान्त साँझी के अंकन से जुड़ी वैविध्यपूर्ण बेलों (डिजाइन) के संबंध में कुछ जानकारियाँ संकलित की गई जिन्हें निम्नानुसार समझा जा सकता है—

चौपड़—

साँझी के नक्शे में चौपड़ की बेल अर्थात् चौपड़ की तरह एक खाना छोड़कर एक खाना तैयार करना इसकी मुख्य पारम्परिक प्रविधियों में एक है। इस प्रकार के फर्मे के अन्तर्गत साँझी बनाते समय इसकी चाल एक खाना छोड़कर चलती है।

अंटे की बेल—

ब्रजभाषा शब्दावली में अंटा लगाने से तात्पर्य गांठ लगाने अथवा बाँधने की प्रक्रिया से है। ब्रजभाषा के इसी शाब्दिक अर्थ की भाँति अंटे की बेल का अर्थ साँझी रचना की उस प्रविधि से है जिसमें साँझी के अन्तर्गत बनने वाली बेलों का सामंजस्य परस्पर (गुंथन) फंसाव के रूप में प्रदर्शित हो।

आले की बेल—

यह बेल आले जैसी आकृति बनाती चलती है। जिसमें बेल के विपरीत रंगों के द्वारा भराव करके आकृति को स्पष्ट किए जाने की परम्परा है।

सर्वव्यापी बेल—

साँझी के अठपहलू (फर्म) में जो बेल आठों पहल पर एक सी चले तथा दबी-दाबी (उछाल-दाब) में भी एक सी रहे, सर्वव्यापी कहलाती है।

शंख की बेल—

साँझी की देवालयी परम्परा में बेलों की संरचना अर्थात् आकार-प्रकार को केन्द्रित कर विभिन्न देवालयों की वाचिक परम्परा में इसके भिन्न-भिन्न स्वरूप देखे जा सकते हैं जो इन स्थलों पर होने वाले साँझी उत्सव की अपनी विशिष्टता है। साँझी के चित्रण में शंख की बेल इस परम्परा से जुड़ा ऐसा ही अनूठा वैशिष्ट्य है; जिसके अन्तर्गत एक या दो पहल के अन्तर्गत ही इस बेल की आकृति पूर्ण कर ली जाती है। यह अन्य बेलों की अपेक्षा कृत छोटी होती हैं लेकिन सर्वव्यापी नहीं।

बेल की नौंक—

साँझी परम्परा में बेल की नौंक से आशय उसके आखिरी कोने (छोर) से है। अच्छी साँझी तैयार करने वाले विशेषज्ञों के अनुसार साँझी बनाने के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि बेल की नौंक पर दबी-दाबी (दाब-उछाल) की प्रक्रिया न हो। कलाविदों का मानना है कि अगर बेल की नौंक पर दबी-दाबी प्रदर्शित हो तो साँझी की बेलों का गुंथन (फंसाव) स्पष्ट नहीं होता जिससे आकृति में वह उभार प्रदर्शित नहीं होता जो एक श्रेष्ठ साँझी के लिए आवश्यक है।

सितारे की बेल—

विशेषज्ञों के अनुसार साँझी के फंसाव अर्थात् गुंथन की प्रक्रिया में सितारा और चौपड़ की बेलों का महत्वपूर्ण स्थान है। कला परम्परा से जुड़े लोगों के अनुसार यह बेल जहाँ १, ३, ५, ७ जैसी विषम संख्याओं में अठपहलू पर पूर्ण की जा सकती है वहीं इसका यह स्वरूप सम संख्या २, ४, ६, ८ में भी निकाला जा सकता है। तथा अपनी इसी विशेषता के चलते यह सर्वव्यापी भी हो सकती है।

साँझी में प्रयुक्त साँचे (स्टैंसिल्स) तथा रंग—

उपरोक्त साँझी सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हुए कलाविदों के द्वारा एक से बढकर एक कलात्मक साँझियाँ विभिन्न (स्टैंसिल्स) खाकों के प्रयोग से तैयार की जाती हैं। साँझी के अंकन में साँचों (स्टैंसिल्स) का प्रयोग इस परम्परा की अपनी विशेषता है। इस कला से जुड़े विशेषज्ञों के अनुसार साँझी में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के साँचे (स्टैंसिल्स) की विकसित परम्परा ने एक जमाने में इस कला को व्यापक ख्याति दिलाई। वर्तमान में भले ही साँचा निर्माण की कला में पहिले जैसा वह हुनर दिखाई नहीं देता तथापि इस परम्परा से जुड़े कुछ विशेषज्ञों ने साँझी कला के इस हुनर को अभी तक सहेज रखा है जिससे इस परम्परा की सूक्ष्मता को समझा जा सकता है। साँझी परम्परा के अन्तर्गत किसी भी लीला के अंकन में प्रयुक्त साँचे (स्टैंसिल्स) कई चरणों में विभक्त होते हैं अर्थात् लीला की किसी भी एक आकृति को अंतिम रूप देने में कम से कम २-६ तथा अधिक से अधिक १० साँचे होते हैं। इस तरह सांझी में लीला के अलग-अलग हिस्सों के अंकन के लिए भिन्न-भिन्न साँचों का समूह प्रयोग में लाया जाता है। (चित्र ३१-३५) साँचे (स्टैंसिल्स) बनाने वाले उस्ताद क्रम निर्धारण की दृष्टि से

साँचों में किनारे की तरफ विशेष प्रकार का चिह्न बनाते हैं। (चित्र-सभी स्टैंसिल्स) साँझी रचना के दौरान साँचों का प्रयोग करते समय इस चिह्न का अगले खाके के द्वारा मिलान करते हुए उसके ऊपर उचित रंग छानना, रंग की मिलावट करना तथा साँझी में धूप-छाया का प्रभाव प्रदर्शित करना एक अच्छे साँझी कलाकार की अपनी विशेषता होती है। ब्रज के विभिन्न देवालयों में जहाँ राधा-कृष्ण की विभिन्न लीलाओं के अनुरूप सखी, ग्वाल-बाल, वृक्ष, बेल-बूटे, महल, घाट, गौख, मंदिर एवं हवेली आदि के वैविध्यपूर्ण साँचे मिलते हैं **(चित्र ३६, ३७, ४२)** वहीं कई मंदिरों में अपनी-अपनी आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार सम्प्रदायाचार्यों तथा पारम्परिक वाणी ग्रंथों में वर्णित लीला प्रसंगों के प्रस्तुतिकरण हेतु स्टैंसिल्स दर्शित होते हैं। **(चित्र ३१-३५)**

साँझी के लिए रंगों को तैयार करना तथा पोटरी के द्वारा कुशलतापूर्वक उनको साँचों के प्रयोग से लीला के अनुरूप प्रदर्शित करना इस कला के प्रस्तुतिकरण का महत्वपूर्ण पक्ष है। इस कार्य के दौरान साँझी बनाने वाले का अपनी अंगुली पर पूर्ण नियंत्रण आवश्यक है। पोटरी संचालन **(चित्र १५, १७)** के दौरान अंगुली के कम, अधिक तथा मध्यम दबाव का प्रयोग; बनाये जाने वाले दृश्य के भाव के अनुरूप किया जाता है। उदाहरण स्वरूप अगर लीला दृश्य महारास से सम्बन्धित है तो चन्द्रमा की रोशनी का प्रभाव पूरी लीला पर प्रदर्शित करना इन विशेषज्ञों की अपनी विशिष्टता है। ठीक इसी तरह यमुना में नौका विहार अथवा कालियदह लीला के दौरान यमुना के जल प्रवाह की गतिशीलता का प्रदर्शन इन कलाविदों का हुनर प्रदर्शित करता है। साँझी में प्रयुक्त किए जाने वाले अधिकांश रंग पारम्परिक विधि द्वारा तैयार किए जाते हैं। जिसके अन्तर्गत खड़िया पीसकर सफेद रंग, गेरू से लाल रंग, कोयला पीसकर काला रंग, पिसी हुई ईंट से तैयार रंग, सफेद और काले रंगों को मिलाकर सिलेटी रंग, सफेद में थोड़ा सिन्दूर मिलाकर मुखाकृति के रंग तथा इस तरह कई खनिजों को पीसकर तथा उनके परस्पर संयोग से अनेक विविध प्रकार के रंग तैयार किए जाते हैं। जिनका साँचों के अलग-अलग हिस्से पर प्रयोग किया जाता है।

ब्रजमण्डल में जहाँ गोकुल, कामवन, दाऊजी, बरसाना, मथुरा एवं वृन्दावन सहित कई स्थानों के देवालयों में साँझी उत्सव के अवसर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अंकन देखे जा सकते हैं जिनका कलागत सौन्दर्य देखते ही बनता है वहीं ब्रज की विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों से जुड़े सैंकड़ों वाणीकारों ने अलग-अलग कालक्रम में इस परम्परा पर केन्द्रित विपुल साहित्य भी रचा। जिसकी प्रतिलिपियाँ

भारतवर्ष के विभिन्न ग्रंथागारों सहित विदेशी हस्तलिखित ग्रंथागारों तक देखी जा सकती हैं। ब्रज की साँझी परम्परा से जुड़े इस साहित्यिक पक्ष ने समयानुसार पर्याप्त ख्याति अर्जित की। हमें अपने सर्वेक्षण में कुछ सन्दर्भ ऐसे भी मिले जिनसे यह ज्ञात होता है कि स्थानीय साधकों ने भिन्न-भिन्न अंचलों से ब्रज में आने वाले श्रद्धालुजनों के पठनार्थ भी उक्त विषयक साहित्य तैयार किया। १९वीं शताब्दी में वृन्दावन निवासी हित परमानन्दजी के द्वारा दतिया (मध्य प्रदेश) के राजा राव पारीक्षत देव जू महाराज के लिए तैयार की गई साँझी विषयक पोथी जो हित परमानन्दजी के वंशजों के पास वृन्दावन में डिजिटल रूप में मौजूद है। इस संबंध में प्रमाण उपस्थित करती है। **(चित्र ४४)** ब्रज में स्थापित विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों यथा- वल्लभ, हरिदासी, राधावल्लभ, गौड़ीय, चरणदासी एवं ललित आदि सम्प्रदायों में साँझी पर केन्द्रित साहित्य सृजन करने वाले महानुभावों की एक लम्बी फेहरिस्त सामने आती है। इनमें से कई महानुभावों ने जहाँ साँझी लीला पर केन्द्रित स्वतन्त्र ग्रन्थ रचे वहीं इस परम्परा से जुड़े अनेक अल्प-अज्ञात वाणीकारों के विवरण विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थागारों सहित मन्दिर-देवालयों में संरक्षित वर्षोत्सवों से मिलते हैं। **(चित्र ४७)** इन वाणीकारों में प्रमुख रूप से किशनगढ़, अजमेर के महाराज सावंत सिंह (नागरीदास) **(चित्र ४५)** चाचा श्रीहित वृन्दावनदास **(चित्र ४६)** राधावल्लभ सम्प्रदायाचार्य गोस्वामी रूपलालजी सूरदासजी, हरिरायजी, वल्लभरसिक, मदनमोहनदासजी, बिहारिनदास, प्रेमदास, घनश्यामजी, हित परमानन्दजी, कृष्णबल्लभजी, गुनमंजरी (गुल्लूजी) एवं रामरायजी सहित अनेक महानुभावों के नाम उल्लेखनीय हैं। उक्त संदर्भ में कुछ प्रमुख पद-पदावलियों का संकलन प्रस्तुत कार्य के अंतर्गत किया गया है।

पानी के ऊपर तथा नीचे साँझी का आयोजन–

कालान्तर में भक्ति से जुड़ी इस परम्परा का कलागत सौन्दर्य बढ़ता ही गया। प्रभु की निष्काम भक्ति में रत रहने वाले इन कला साधकों ने अपने नये-नये प्रयोगों से इस कला को इतनी विविधतायें प्रदान की जिससे यह परम्परा दिनों-दिन लोकप्रियता के पायदान चढ़ती चली गई। साँझी आयोजन के दौरान सूखे रंगों के द्वारा पानी के ऊपर तथा नीचे प्रभु की लीलाओं का चित्रण इस परम्परा का अपना वैशिष्ट्य है जिसे इन कला साधकों ने पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी साधना के द्वारा पल्लवित किया है। साँझी से जुड़े कलाविदों के अनुसार पानी के ऊपर तथा नीचे सूखे रंगों के द्वारा साँझी बनाने हेतु कई दावों (चरणों) से सावधानीपूर्वक गुजरना होता है। कला विशेषज्ञों के अनुसार पानी के ऊपर तथा

नीचे साँझी बनाने की प्रविधियाँ अलग-अलग होती हैं। (चित्र २८-३०)

ब्रज लोक परम्परा में साँझी (गोबर साँझी)—

ब्रज संस्कृति की यह अपनी विशेषता है कि इस पारम्परिक अनुष्ठान के लोक तथा देवालयी दोनों रूपों ने साँझी के पारम्परिक उत्स का अनूठा प्रतिपादन किया है। अपने इसी वैशिष्ट्य के चलते ब्रज की इस कला ने आज अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर एक पृथक पहिचान स्थापित की है। देवालयों से पृथक ब्रज की लोक परम्परा में गोबर द्वारा चित्रित की जाने वाली साँझी यहाँ के साँझी उत्सव का महत्वपूर्ण पक्ष है जिसमें पितृपक्ष के दौरान १६ दिनों तक कुंवारी कन्याओं द्वारा भिन्न-भिन्न पारम्परिक प्रतीक चिह्न बनाये जाते हैं तथा समापन पर इसे यमुना अथवा किसी पवित्र कुण्ड में विसर्जित किया जाता है। ब्रज में १६ दिनों तक कुंवारी कन्याओं द्वारा साँझी खेलने के प्रमाण प्राचीन पारम्परिक पोथियों में भी दर्शित होते हैं—

सोरह तिथि भर खेलीं इहि विधि। दिन-दिन बढ्यौ प्रेम आनन्द निधि।।
दिन-दिन के जु खेल बहु न्यारे। सब विधि लग सबनि कौ प्यारे।।
परिबा परब मनावत भई। भान सरोवर तीर जु गई।।
बाजे-बाजैं मंगल गावें। श्रीराधा साँझी जू सिरावैं।।[3]

आंचलिक लोक मान्यताओं में इन प्रतीकों का विशेष महत्व है। लोक पुराने समय से ही अपनी भावना और विचारों की अभिव्यक्ति इन्हीं प्रतीकों के सहारे करता आया है। जिस प्रकार एक बीज में पूरा वृक्ष समाया रहता है उसी प्रकार इन प्रतीकों में पृथक-पृथक आंचलिक संस्कृतियों के वाचिक सन्दर्भ अर्थात् पारम्परिक मान्यताएँ विद्यमान रहती हैं; यही प्रतीक जब विकसित होकर कथा का रूप लेते हैं तो लोक मिथकों की स्थापना होती है। प्रतीक और मिथक के समन्वय की यह परम्परा आदि काल से ही चली आ रही है, जिसने क्षेत्रीय स्तर तक भारत की लोक परम्परा को प्रभावित किया है। साँझी के चित्रांकन में पेड़-पौधे, सूर्य-चन्द्र, पक्षी, देवी-देवता आदि जैसे कई अंकन इस परम्परा का वह मिथकीय आधार दर्शाने वाले हैं जो संभवतः आज लोक की वाचिक परम्परा में भी धूमिल हो चले हैं। हालाँकि ब्रज में साँझी के आयोजन को लेकर प्रचलित

३. ब्रज प्रेमानन्द सागर, चाचा हित वृन्दावनदास रचनाकाल वि॰सं॰ १८३८, छन्द १४८-१५१

एक लोक मान्यता का उल्लेख दर्शित होता है जिसके विवरण अलग-अलग साँझी अध्येताओं ने लगभग एक ही तरह अपने साँझी सम्बन्धी कार्य के दौरान अंकित किए है। इस कथानक के अनुसार साँझी का अंकन एक ऐसी नायिका के रूप में किया जाता है जो पितृ पक्ष में अपने भाई के साथ ससुराल से पीहर आ जाती है। किन्तु पीहर में थोड़े दिन रहने के उपरान्त वह पति के विरह में व्याकुल होने लगती है। कुछ समय के उपरान्त उसका पति उसे विदा कराने हेतु आता है और वह दस दिन ससुराल में रहकर दशहरे के दिन साँझी को विदा कराकर ले जाता है। इस कथा को केन्द्र में रख ब्रज के ग्राम्यांचल में कुंवारी लड़कियों के द्वारा पितृ पक्ष के दौरान गोबर से प्रतिदिन दीवार पर नए-नए अंकन किए जाते हैं जिन्हें फूल, कौड़ी, पीतर पन्नी, रोली एवं रंगों द्वारा सज्जित किया जाता है।

इस कथाक्रम के अनुसार ब्रज क्षेत्र में साँझी उत्सव के दौरान **प्रथम दिन** वीरन बेटी (साँझी का पीहर (मायके) का नाम) और पाँच थापे अंकित किए जाते हैं जो साँझी के आने पर उसके स्वागत का सूचक हैं। **दूसरे दिन** साँझी के साथ एक तिवारी, **तीसरे दिन** दो तिवारी, **चौथे दिन** तीन तिवारी, **पाँचवें दिन** साँझी के शृंगार सहित चार तिवारी बनाई जाती हैं जो साँझी के आदर-सत्कार हेतु उसके ठहरने की व्यवस्था का परिचायक है, जिसमें साँझी के प्रति सम्मान का उत्साह तिवारियों की संख्या की दृष्टि से बढ़ता जाता है। **छठे दिन** साँझी के निकट पान-सुपाड़ी और पंखा, **सातवें दिन** मिठाई से भरी डलिया, **आठवें दिन** स्वस्तिक, **नवें दिन** आठ कली का फूल या चौपड़, **दसवें दिन** नौका विहार हेतु नाव तथा **ग्यारहवें दिन** दस पान बनाए जाते हैं, **बारहवें दिन** २१ सिंगाड़े बनाकर साँझी के व्रत की सामग्री रखी जाती है। **तेरहवें दिन** ओढ़नी/फरिया बनाई जाती है जो पीहर में पति के लिए व्याकुल होने वाली साँझी को प्रसन्न रखने का प्रयोजन दर्शित होता है। **चौदहवें दिन** नसैंनी या खजूर का बनाया जाता है जिसमें ऊपर की ओर साँझी का बैठे हुए अंकन किया जाता है जिसके द्वारा साँझी के वियोग की दशा प्रदर्शित की जाती है। **पन्द्रहवें दिन** लंगड़ा ब्राह्मण और कौवे का चित्रण किया जाता है जिसमें लोक विश्वास के अनुसार किसी अतिथि के आने का भाव दर्शित होता है। **सोलहवें दिन** साँझी और उसके पति के मिलन हेतु कोट बनाया जाता है जिसमें साँझी-साँझा, स्वस्तिक, आभूषण, गणेश मुख, मोर, खजूर का पेड़, गुजरिया, माली-मालिन एवं ब्राह्मण सहित कई चित्र गोबर द्वारा बनाए जाते हैं। साँझी

आयोजन के दौरान बनने वाला यह कोट पूर्व के चित्रों की अपेक्षा अधिक बड़ा एवं आकर्षक होता है। साँझी के मनोरथ की यह परम्परा कुँवारी कन्याओं से सम्बन्धित है जिसमें विवाह से पूर्व वे पूरे उत्साह के साथ इस आयोजन में प्रतिवर्ष सहभागिता करती हैं। शादी होने के उपरान्त विवाह के प्रथम वर्ष में ही साँझी का उद्यापन किया जाता है। जिसके अन्तर्गत साँझी का उद्यापन करने वाली स्त्री १६ घरों में जाकर साँझी नौतती है। तदोपरान्त अगले दिन कोट (नरवर कोट) का पूजन करती है। इस पूजन के उपरान्त स्त्री द्वारा "मंसा-पूजी" की सामग्री उसके ससुराल भेजी जाती है।

ब्रज-लोक परिवेश में साँझी के इस क्रम की चर्चा सभी विद्वानों ने प्राय: उक्त आधार पर ही की है। जबकि हमारे द्वारा सम्पूर्ण ब्रज क्षेत्र में उक्त विषय पर केन्द्रित सर्वेक्षण के उपरान्त इसकी कुछ अलग तस्वीर भी उभर कर सामने आती है जिससे यह ज्ञात होता है कि ब्रज में साँझी की परम्परा से जुड़े पारम्परिक कथानक का ऐसा पक्ष अभी तक उद्घाटित होने से शेष रहा है जिसके अवशेष साँझी के उन प्रतीकों में विद्यमान है जो अभी तक लोक साहित्य की लिखित चर्चा में न आ सके। हाँलाकि ब्रज की लोक परम्परा में साँझी के प्रतीकों को लेकर इसका कथानक तैयार मिलता है लेकिन ऐसे में इस परम्परा के अन्तर्गत ब्रज में किए गए सर्वेक्षण के दौरान मिले कुछ अन्य प्रतीक जैसे– **जनेऊ, पट्टा वाली अम्मा, सोटा बाबा, गणेश मुख , गिर्राजधरण, वृन्दावन शब्द का अंकन, दीपक, ॐ, त्रिशूल,** श्रवणकुमार के प्रतीक हेत **तराजू (बाहँगी), चक्र एवं धनुष-बाण** आदि के चित्रांकन भी अपनी उपस्थिति के चलते इसके कथाक्रम में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते है[४] जिनका पूर्वोल्लिखित कथानक में कहीं कोई विवरण नहीं मिलता। सर्वेक्षण के दौरान ब्रज के भिन्न-भिन्न स्थलों पर की गई

४. सर्वेक्षण के दौरान ब्रजमण्डल के बरसाना परिक्षेत्र में पट्टा वाली अम्मा तथा जनेऊ के अंकन देखने को मिले जिसके सन्दर्भ में यह लोकमान्यता है कि घर में अगर अगले दिन दादी का श्राद्ध है तो एक दिन पूर्व पट्टा पर बैठी अम्मा का गोबर द्वारा चित्रांकन किया जाता है ठीक इसी तरह बाबा का श्राद्ध होने पर जनेऊ का अंकन किये जाने की परंपरा है। हाँलाकि साँझी की लिखित परम्परा में इन प्रतीकों का उल्लेख दर्शित नहीं होता तथापि ब्रज संस्कृति अध्येता प्रभुदयाल मीतल जी ने अपने '**साझी लोकोत्सव**' शीर्षक के अन्तर्गत तथा डॉ॰ हर्षनन्दिनी भाटिया ने '**चित्रांकन ब्रज बनिताओं द्वारा**' लेख में पितृ पक्ष की अवधि के दौरान बड़े श्राद्ध वाले दिन से पूर्व दौना-पत्तल के चित्रांकन की बात कही है।

जानकारी क उपरान्त यह उद्घाटित होता है कि वर्तमान में साँझी के अन्तर्गत बनने वाले प्रतीकों को लेकर जहाँ पूरे ब्रजमण्डल में कोई क्रमबद्धता दर्शित नहीं होती वहीं एक ही जगह के भिन्न-भिन्न मौहल्लों में उसी दिन अलग-अलग अंकन किए जाते हैं जिसे उदाहरणस्वरूप वृन्दावन के रतनछत्री कालियदह एवं दुसायत में आयोजित साँझी इस क्रम द्वारा समझा जा सकता ह–

दिन	रतनछतरी	कालिय दह परिक्षेत्र	दुसायत
पहला	स्वस्तिक	चन्द्र-तारे	चन्द्र-तारे
दूसरा	स्वस्तिक	स्वस्तिक	पान
तीसरा	चक्र, त्रिशूल	ॐ	दीपक
चौथा	खजूर का पेड़/चन्द्र, सूरज	श्रीराम/गुजरिया, त्रिशूल	त्रिशूल
पाँचवाँ	चक्र/श्रीराम/त्रिशूल	चौक/त्रिशूल	श्रीराम/चक्र
छठा	चन्द्र-सूरज/श्रीराम	फूल/चौक/खजूर का पेड़	पाँच कली का फूल
सातवाँ	नौका	सीढ़ी/चौक	चक्र/डलिया
आठवाँ	चन्द्र-तारे	चक्र/कमल का फूल	स्वस्तिक
नौवाँ	दीपक	चौक	आठ कली का फूल
दसवाँ	फूल	गुजरिया/गणेश मुख	नौका
ग्यारहवाँ	श्रीराम	चक्र/श्री	धनुष-बाण
बारहवाँ	वृन्दावन (शब्द-अंकन)	चक्र/स्वस्तिक/श्रीराधे	साँझी-साँझा
तेरहवाँ	श्रीराधे/श्री	दीपक	दिल/पान
चौदहवाँ	चौक	चक्र/घोड़ा	तराजू/बांहगी (श्रवणकुमार)
पन्द्रवाँ	(समाप्त-अंकन)	चन्द्र-तारे	चौक, (समाप्त– अंकन)
सोलहवाँ	कोट	कोट	कोट

ब्रज संस्कृति से जुड़े विविध पक्षों पर महत्वपूर्ण कार्य करने वाले वरिष्ठ साहित्यकार प्रभुदयाल मीतल ने '**साँझी का लोकोत्सव**' शीर्षक के अन्तर्गत इसके कथा क्रम का विवरण दिया है। जिसे निम्नानुसार समझा जा सकता है–

पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवां दिन	छठा दिन	सातवां दिन	आठवां दिन
वीरन बेटी पाँच थापे का अंकन	डोले में बैठी स्त्री का अंकन	तिवारी में बैठी साँझी का अंकन	साँझी के शृंगार का अंकन	चौपड़ का अंकन	पान-सुपाड़ी का अंकन	मिठाई से भरी डलिया का अंकन	पान सुपारी और स्वस्तिक का अंकन

नौवा दिन	दसवां दिन	ग्यारहवां दिन	बारहवां दिन	तेरहवां दिन	चौदहवां दिन	पन्द्रहवां दिन	सोलहवां दिन
आठ कली के फूल का अंकन	नाव से भ्रमण का अंकन	इक्कीस सिंगाड़े और पान का अंकन	पातर-दौना का अंकन	फरिया/ ओढ़नी का अंकन	नसैनी/खजूर के पेड़ का अंकन	लंगड़ा ब्राह्मण और कौवे का अंकन	नरवर कोट का अंकन

ब्रजलोक साहित्य की वरिष्ठ अध्येता डॉ॰हर्षनन्दिनी भाटिया ने '**चित्रांकन ब्रज बनिताओं**' द्वारा पुस्तक के अन्तर्गत अपने लेख में साँझी के १६ दिवसीय चित्रों का विवरण प्रस्तुत किया है जो प्रस्तुत तालिका के द्वारा दर्शित हैं–

पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवां दिन	छठा दिन	सातवां दिन	आठवां दिन
वीरन बेटी (साँझी के पीहर का नाम) और पाँच थापे का अंकन	डोले/तिवारी में बैठी स्त्री का अंकन	तिवारी में साँझी का अंकन	तिवारी में साँझी का अंकन	चौपड़ का अंकन	पान सुपाड़ी का अंकन	मिठाई की डलिया	स्वस्तिक का अंकन

नौवा दिन	दसवां दिन	ग्यारहवां दिन	बारहवां दिन	तेरहवां दिन	चौदहवां दिन	पन्द्रहवां दिन	सोलहवां दिन
आठ कली का फूल का अंकन	नाव या नारियल का अंकन	दस पान का अंकन	इक्कीस सिंगाड़े का अंकन	फरिया/ ओढनी का अंकन	नसैनी/खजूर का पेड़ का अंकन	लंगड़ा ब्राह्मण और कौवा का अंकन	कोट का अंकन

ब्रज लोक संस्कृति के गहन अध्येता मोहनस्वरूप भाटिया जी ने अपने शोधपत्र '**लोककला साँझी: अनेक स्वरूप अनेक कथाएं**' के अन्तर्गत साँझी से जुड़ी मान्यताओं का विवेचन करते हुए साँझी के लगभग इसी स्वरूप का विवरण उपस्थित किया है–

पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवां दिन	छठा दिन	सातवां दिन	आठवां दिन
वीरन बेटी (साँझी के पीहर का नाम) और पाँच थापे का अंकन	एक तिवारी और साँझी का चित्रांकन	दो तिवारी और साँझी का चित्रांकन	तीन तिवारी और साँझी का चित्रांकन	चार तिवारी और साँझी का चित्रांकन	पान-सुपाड़ी और पंखे का अंकन	मिठाई से भरी डलिया का अंकन	स्वस्तिक का अंकन

नौवा दिन	दसवां दिन	ग्यारहवां दिन	बारहवां दिन	तेरहवां दिन	चौदहवां दिन	पन्द्रहवां दिन	सोलहवां दिन
आठ कली का फूल या चौपड़ का अंकन	नाव और नारियल का अंकन	दस पान का अंकन	इक्कीस सिंगाड़े का अंकन	फरिया/ ओढ़नी का अंकन	नसैंनी/खजूर के पेड़ का अंकन	लंगड़ा ब्राह्मण और कौवे का अंकन	कोट का अंकन

भाषा और लिपि से पहिले विद्यमान प्रतीक परम्परा तब से अब तक लोक व्यवहार में अपना अस्तित्व बनाए हुए है। हालाँकि समय के सापेक्ष इस प्रतीक परम्परा में संशोधन-परिवर्द्धन तथा क्षेत्रीय स्तर तक समन्वय और विस्तार दर्शित होता है, जिसके मूल में कई कारण समझे जा सकते हैं। शायद इसी वजह से ब्रजमण्डल में जहाँ राजस्थान से लगे सीमावर्ती क्षेत्र तथा ब्रज के अन्य स्थलों में मौहल्लों के स्तर तक साँझी परम्परा का वैविध्य दर्शित होता है वहीं यहाँ कई स्थलों पर साँझी-कोट को **नरवर कोट**[५] कहने जैसी बातें यहाँ की साँझी का बुंदेलखण्ड से भी सम्बन्ध प्रदर्शित करने वाली हैं। ऐसे में अगर यहाँ भिन्न-भिन्न स्थलों पर इसके चित्रों का क्रम बदलता है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं लेकिन ऐसा भी बिल्कुल नहीं कि पूरे ब्रज क्षेत्र में साँझी के अंकन की प्रविधि

५. मध्य भारत की नरवर रियासत का ब्रज से पुराना सम्बन्ध रहा है। कालांतर में यहाँ के राजाओं का ब्रज के प्रति आकर्षण बढ़ा सम्वत् १९०० में वृन्दावन के कवि गोपालराय द्वारा सृजित अप्रकाशित पाण्डुलिपि 'वृन्दावनधामानुरागावली' से ज्ञात होता है कि पूर्व में नरवर के राजा द्वारा वृन्दावन में अठखम्भा स्थित भट्टगली के समीप एक भव्य कुञ्ज बनवायी गयी तथा उनके द्वारा यहाँ साधु-ब्राह्मण सेवा हेतु प्रतिदिन अन्नक्षेत्र (भण्डारा) भी चलता था। वृन्दावन में नरवर के कुछ पुराने ब्राह्मण परिवारों की जानकारी भी मिलती है।

... नरवर वारे नृप नें तिनकौ कुञ्ज बनाइ सु दीनी।
भोग राग नाना प्रकार धरि पुष्प भेंट वह कीनी।।

नरवर वारे सु कुञ्ज में मोंहन जी रे ह्वाही।
चल्यौ क्षेत्र कोई दिन तामें चालीसा के माहीं।।

(छन्द-३८, ४२– षष्ठमोध्याय, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान,वृन्दावन)

भिन्न-भिन्न हो तथापि इस परम्परा के सन्दर्भ में प्रचलित कथा क्रम के अनुसार भी प्रतीकों का अंकन यहाँ अलग-अलग क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए देखे जा सकते है। उक्त सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि साँझी पर अब तक हुए कार्यों से इतर अभी इस परम्परा पर केन्द्रित सतत अनुसंधान की आवश्यकता अपेक्षित है जिससे इस कला का प्रत्येक पक्ष शोधात्मक दृष्टि के साथ सुधीजनों के समक्ष उपस्थित हो सके। ब्रज के अड़ींग, बरसाना, जतीपुरा एवं राधाकुण्ड स्थलों पर गोबर साँझी के क्रम को वर्तमान में निम्नानुसार समझा जा सकता है—

दिन	अड़ींग	बरसाना	जतीपुरा	राधाकुण्ड
पहला	स्वस्तिक	स्वस्तिक/नाव में साँझी-साँझा	स्वस्तिक	राधाकृष्ण
दूसरा	ॐ	कृष्ण पर्वत उठाते हुए	ॐ	कृष्ण पर्वत उठाते हुए
तीसरा	कमल-पुष्प	पंखा-बीजना	तीन तिवारी	चन्दा, सूरज, तारे
चौथा	अष्टकली फूल	सोटा बाबा	चौक	स्वस्तिक
पाँचवाँ	त्रिशूल	मोर	पान सुपारी	गणेशजी
छठवाँ	तंतूरा/गदा	स्वस्तिक	छबरिया	ॐ
सातवाँ	फूल	गणेशजी	गमला	पंखा
आठवाँ	राम-लखन नामांकन	गुजरिया	आठ कली का फूल	मोर/गूजरी
नौवाँ	चन्दा-तारे	छबरिया	नसैनी/खजूर	खजूर का पेड़/सीढ़ी
दसवाँ	सूरज	श्री/ॐ	कृष्ण गिर्राजधरण	नाव
ग्यारहवाँ	छबरिया	तीन तिवारी	श्राद्ध की दृष्टि से	दीपक
बारहवाँ	चक्र	गुलाब का फूल	त्रिशूल	त्रिशूल
तेरहवाँ	पंखा	राधा-कृष्ण	चौपड़	डलिया/सूरज-चन्दा
चौदहवाँ	गुजरिया/धनुष/राधाकृष्ण	श्राद्ध की दृष्टि से पट्टा वाली अम्मा/जनेऊ	चन्दा, सूरज/पंखा	चक्र/धनुष-बाण/ चौक/कमल
पन्द्रवाँ	गमला	कमल का फूल	चौक	चौक/कमल का फूल
सोलहवाँ	कोट	कोट	कोट	कोट

लोक संस्कृति के वरिष्ठ अध्येयता वसंत निरगुणे ने अपने लेख **'लोक संस्कृति के प्रतीक'** के अन्तर्गत बिल्कुल ठीक ही लिखा है—

'प्रतीकों के साथ सृजन-विसर्जन की प्रक्रिया परम्परागत रूप से चलती रहती है, लेकिन प्रतीक परम्परा कभी समाप्त नहीं होती। पुराने प्रतीकों की जगह नये प्रतीक बन जाते हैं। प्रतीक मनुष्य की वह अभिव्यक्ति है, जिसमें मनुष्य बात कहता है। वह उसे सादृश्य भाव के बिम्बों से प्रकट करता है, तब वह संरचना प्रतीक हो जाती है।'[६]

साँझी के प्रतीक उसकी अपनी विशिष्ट पहिचान हैं। हांलाकि आज के अर्थवादी युग में भौतिकता की चकाचौंध ने हमारे संस्कारों को प्रभावित किया है जिससे साँझी की यह परम्परा भी अछूती नहीं रही है तथापि आज भी ब्रज के एक बड़े हिस्से में इस परम्परा का निर्वहन बदस्तूर देखा जा सकता है। ब्रज के विभिन्न क्षेत्रों में पितृ पक्ष के दौरान १६ दिनों तक इसके भिन्न-भिन्न चित्रांकन लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। साँझी उत्सव के दौरान यहाँ दीवार पर प्रत्येक दिन भिन्न-भिन्न चित्र गोबर के द्वारा बनाए जाते हैं। ब्रज के अलग-अलग क्षेत्रों में चित्रों के क्रम को लेकर कोई स्पष्ट विधान दर्शित नहीं होता यहाँ कोई चित्र ब्रज के किसी हिस्से में दूसरे दिन तो कहीं वही चित्र चौथे या पाँचवे दिन बनता है। साँझी के इस अंकन के दौरान वर्तमान में कुछ चित्र पूर्वोल्लिखित कथा से मेल खाते अवश्य दर्शित होते हैं वहीं अनेक स्थलों पर इससे जुड़े कुछ नए प्रतीक भी देखे जा सकते हैं। साँझी पर केन्द्रित सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप हमें ब्रज के अलग-अलग स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रतीकों का अंकन दृष्टिगोचर हुआ जिनका सचित्र दस्तावेजीकरण किया गया है। हम जानते हैं कि साँझी का आयोजन कोट बनने तक १६ दिनों का होता है। जिसमें हर स्थल पर एक नए दिन नया चित्र बनता है। प्रतीकों की विविधता की दृष्टि से हमने अलग-अलग स्थानों पर इस परम्परा से सम्बन्धित प्रतीकों की जानकारियाँ संकलित कीं जिसमें इस १६ दिवसीय आयोजन पर केन्द्रित लगभग दो दर्जन प्रतीक भिन्न-भिन्न स्थानों पर दृष्टिगोचर हुए। लोक में जहाँ तिवारी, सोटा बाबा, श्रीराम, पान सुपारी, श्री अंकन, तंतूरा, गदा, गमला, चौपड़ एवं चौक आदि के अंकन मिलते हैं वहीं इसी

६. लोक- पृ. ३८५, भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर।

शृंखला में निम्नानुसार कुछ अन्य कथा चित्र भी मिलते है। हालाँकि प्रस्तुत विवरण किसी कथाक्रम के अनुसार क्रमबद्ध नहीं किया गया है तथापि ब्रज के भिन्न-भिन्न स्थलों पर साँझी मनोरथ में प्रयुक्त अंकनों को इस प्रकार समझा जा सकता है—

स्वस्तिक—

स्वस्तिक आरम्भ से ही प्राणियों के मंगल का प्रतीक रहा है। शास्त्रों के अनुसार इसका मध्य सूर्य तथा चार भुजाएं, चतुर्भुजी विष्णु/चार पुरूषार्थ/चार वेद आदि का अर्थ देते हैं। अपनी इसी विशिष्टता के चलते यह लोक प्रतीक सदियों से लोक समुदाय के मांगलिक प्रयोजनों पर प्रयुक्त होता आया है। ब्रज की साँझी परम्परा में निर्धारित चित्र क्रम के अन्तर्गत स्वस्तिक का उल्लेख विभिन्न अध्येताओं ने किया है जो साँझी के सौभाग्य का परिचायक है। **(चित्र ४८)**

सूर्य और चन्द्र-तारे—

लोक चित्रों के अंकन में सूर्य तथा चन्द्र-तारों की उपस्थिति अनिवार्य सी दिखती है। जीवन की शाश्वतता को प्रदर्शित करने वाले इन प्रतीकों का अंकन अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न पारम्परिक अनुष्ठानों के दौरान किया जाता है। ब्रज की लोक साँझी में गोबर के द्वारा इनके अंकन की परम्परा सैंकड़ों वर्ष पूर्व से ही देखने को मिलती है। परिमाण की दृष्टि से विपुल साहित्य सृजित करने वाले राधावल्लभ सम्प्रदायानुयायी चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जिनके द्वारा अपनी सम्वत् १८३८ की रचना **'ब्रज प्रेमानन्द सागर'** तथा अन्य पदावलियों में साँझी के महत्वपूर्ण पक्षों को रेखांकित किया गया है वहाँ सूर्य-चन्द्र तथा तारों के अंकन की जानकारी भी दृष्टिगोचर होती है। **(चित्र ४९, ६७)**-

> शुक पिक मोर मराल की, हो पंकति रची नवीन हो।
> पुनि शशि जुत उड़गन धरैं, सखी गौर-स्याम परवीन हो।।
> संध्या देवी देवतन हो, रचे अलौकिक रीति हो।
> ताहि निरखि बाती हिवैं, सखी दुहुँनि घनेरी प्रीति हो।।[७]
> गो गोबर सौं माँडिकै, साँझी चीतति बहु भाई हो।
> शशि मण्डल-तारे धरे, नग पंकति कुसुम बनाइ हो।।[८]

७. पद-चाचा श्रीहित वृन्दावनदास वृषभान लली खेलन चली, साँझी मन विपुल उछाह हो... छन्द १७,१२
८. पद-चाचा श्रीहित वृन्दावनदास वृन्दावनरानी गाईए, रावलपति, कुल उद्योत हो... छन्द-२८

पान/दिल की आकृति का अंकन—

पान का अंकन ब्रज लोक साँझी के अन्तर्गत आरम्भ से ही देखा जा सकता है। पितृ पक्ष के दौरान दीवार पर बनाए जाने वाली साँझी परम्परा में पान-सुपारी का अंकन साँझी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने का परिचायक है लेकिन वर्तमान में सिने संस्कृति से प्रभावित होकर पान का यह अंकन कहीं-कहीं दिल की आकृति के निकट जा पहुँचा है। **(चित्र ५०, ५१)**

ॐ का चित्रांकन—

शास्त्र के अनुसार ॐ गूढार्थी ब्रह्म प्रतीक है और उसके तीन अक्षर ब्रह्मा, विष्णु और महेश से जुड़ी सृष्टि, रक्षा और संहार करने वाली शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ब्रज की साँझी में गोबर द्वारा ॐ का अंकन कई जगह देखा जा सकता है। **(चित्र ५२)**

दीपक—

दीपक प्रकाश तथा व्यापकता का प्रतीक है। दीप ज्योति के प्रकटीकरण के साथ मानव संस्कृति का एक नया अध्याय शुरू होता है। अनेक ऋषि-मुनि, विद्वान तथा भाष्यकारों ने दीपक के रूप में 'आत्मज्योति' स्वरूप ब्रह्म की कल्पना की है। साँझी परम्परा के दौरान ब्रज के ग्राम्यांचल में गोबर के द्वारा दीपक का अंकन तथा फूलों की पंखुड़ियों द्वारा उसकी सज्जा देखते ही बनती है। **(चित्र ५३)**

त्रिशूल—

शिव और शिवत्व की परिकल्पना में लोक ने शिव के हाथों में त्रिशूल और डमरू धारण करने की प्रतिकृति अपने मानस पटल पर अंकित कर रखी है। शास्त्र के अनुसार त्रिशूल में त्रिगुणात्मक तत्व विद्यमान हैं जो सत, रज और तम के परिचायक हैं। संभवत: लोक-मन ने शिवत्व के प्रति श्रद्धा तथा आकर्षण के चलते अपने पारम्परिक अनुष्ठानों में इसे अंगीकार किया है। **(चित्र ५४)**

आठ कली का फूल—

अष्टसखी, अष्टकमल तथा अठपहलू (रंग साँझी का अष्टभुजाकार धरातल) ब्रज के लोक परिदृश्य में शुभ माने गए हैं। यहाँ मंदिरों में बनने वाली रंग साँझी के

लिए जहाँ मिट्टी का अठपहलू बनाया जाता है वहीं गोबर साँझी की परम्परा के अन्तर्गत बनाए जाने वाला आठ कली का फूल स्थानीय लोक-मन की श्रद्धा तथा भक्ति का परिचायक है। **(चित्र ५५)**

खजूर का पेड़—

गोबर-साँझी से जुड़ी पारम्परिक मान्यता के अनुसार खजूर का पेड़ अथवा नसैनी तथा इसके ऊपर साँझी का चित्रांकन साँझी के वियोग की दशा प्रदर्शित किए जाने का प्रतीक है। ब्रज के भिन्न-भिन्न स्थलों पर कुंवारी कन्याओं के द्वारा गोबर से इस दृश्य का अंकन देखते ही बनता है। **(चित्र ५६)**

चक्र—

चक्र विष्णु का आयुध है जो रक्षा का प्रतीक है। प्रतीक और उसके अर्थ के प्रति एक परम्परागत श्रद्धा का भाव, लोक अथवा समाज में देखा जा सकता है। साँझी के दौरान चक्र के अंकन के सम्बन्ध में लोक का यही भाव निहित रहता है कि इस मनोरथ के द्वारा साँझी देवी बुरी शक्तियों से हमारी रक्षा करे। **(चित्र ५७)**

मिठाई की डलिया—

गोबर साँझी की परम्परा में मिठाई की डलिया का अंकन किया जाना साँझी के पीहर में उसके खान-पान की उत्तम व्यवस्था तथा सत्कार किए जाने का परिचायक है। ब्रज के अलग-अलग स्थानों तथा भिन्न-भिन्न मौहल्लों में छोटी-छोटी लड़कियों के द्वारा बनाए जाने वाली विविधतापूर्ण डलियाएँ तथा फूल-पत्तियों से उसकी सजावट देखते ही बनती है। **(चित्र ५८)**

बीजना (पंखा)—

साँझी के प्रति श्रद्धा, सेवा और समर्पण का भाव मन में लिए ब्रज के लोक जगत द्वारा इस परम्परा की चित्र शृंखला में बीजना (पंखे) का अंकन ऋतु के अनुसार सेवा भाव का परिचायक है जिसके अन्तर्गत ब्रज के ग्राम्यांचल में कुंवारी कन्याओं के द्वारा सायंकाल गोबर से उत्कृष्ट बीजना (पंखे) चित्रित किए जाते हैं। **(चित्र ५९)**

वृन्दावन-अंकन—

हाँलाकि साँझी के सन्दर्भ में प्रचलित चित्र शृंखला में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता तथापि ब्रजमण्डल के भिन्न-भिन्न स्थलों पर इस अंकन की व्याप्ति पृथक-पृथक रूपों में देखी जा सकती है। ब्रज ही नहीं ब्रज से बाहर इसके सीमावर्ती अंचलों में वृन्दावन के प्रति एक अलग ही आकर्षण देखा जा सकता है। १६वीं शताब्दी के उपरान्त वृन्दावन का सांस्कृतिक वैभव जिस तेजी से बढ़ा उससे यहाँ की ख्याति का अखिल भारतीय विस्तार होना स्वाभाविक ही था। कालांतर में भारतवर्ष की लगभग सभी रियासतों के द्वारा यहाँ कुञ्ज, घाट तथा मंदिर-देवालय बनवाये गये। अपनी इसी विशेषता के चलते यह स्थल एक जमाने में सुन्दरता का पर्याय बन गया। सुन्दरता से जुड़ा इसका यह भाव लोक में आज भी देखा जा सकता है। राजस्थान के भरतपुर एवं करौली जनपद में प्रचलित लोकोक्ति **''वृन्दावन बनि गयो''** इस मान्यता को चरितार्थ करती है। ब्रज की वैष्णव सम्प्रदायों के अन्तर्गत **'ललित सम्प्रदाय'** के देवालयों में बनने वाली साँझी के अन्तर्गत जहाँ एक दिन वृन्दावन का चित्रण किया जाता है वहीं बरसाना के श्रीजी मंदिर में भी साँझी उत्सव के दौरान सूखे रंगों के द्वारा वृन्दावन का स्वरूप दर्शित कराये जाने की परम्परा है। साँझी के दौरान ब्रज की कुंवारी कन्याओं के द्वारा दीवार पर गोबर से **'वृन्दावन'** शब्द चित्रित किए जाने के उपरान्त उसे विभिन्न प्रकार के फूलों से सज्जित किया जाता है जो यहाँ के स्थानीय समाज की श्रीधाम के प्रति उस श्रद्धा का परिचायक है जहाँ साक्षात् श्रीकृष्ण ने कभी अपनी अपनी ग्वाल मण्डली के साथ नाना प्रकार की लीलाऐं कीं। संभवत: अपने इसी श्रद्धा भाव को, ब्रज का लोक साँझी के प्रति इस अंकन के द्वारा समर्पित करता है। **(चित्र ६०)**

धनुष-बाण—

चक्र तथा त्रिशूल के अंकन की तरह ही ब्रज की साँझी परम्परा में धनुष-बाण का चित्रांकन स्थानीय जन-मन की श्रीराम के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति का परिचायक है। जिसके प्रतीक रूप में यहाँ गोबर द्वारा इसका चित्रांकन किया जाता है। **(चित्र ६१)**

पट्टा वाली अम्मा/जनेऊ—

ब्रज संस्कृति के अध्येता प्रभुदयाल मीतल जी ने अपने 'साँझी लोकोत्सव' शीर्षक के अन्तर्गत तथा डॉ॰ हर्षनन्दिनी भाटिया ने 'चित्रांकन ब्रज बनिताओं द्वारा' लेख में ब्रजमण्डल के अन्तर्गत पितृ-पक्ष की अवधि के दौरान बड़े श्राद्ध वाले दिन से पूर्व दौना-पत्तल के चित्रांकन की बात कही है। हमें सर्वेक्षण के दौरान ब्रजमण्डल के बरसाना परिक्षेत्र में पट्टा वाली अम्मा तथा जनेऊ के अंकन देखने को मिले जिसके सन्दर्भ में यह लोकमान्यता है कि घर में अगर अगले दिन दादी का श्राद्ध है तो एक दिन पूर्व पट्टा पर बैठी अम्मा का गोबर द्वारा चित्रांकन किया जाता है ठीक इसी तरह बाबा का श्राद्ध होने पर जनेऊ का अंकन किये जाने की परंपरा है। (चित्र ६२)

गणेश मुख—

गणेश जी को विघ्न विनाशक के रूप में माना गया है। साँझी के १६ दिवसीय कथा क्रम में इस प्रतीक का अंकन संभवत: इसी भाव का परिचायक है कि कन्याओं का यह मांगलिक आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो। इसके चित्रांकन में कुँवारी कन्याओं के द्वारा फूलों की सजावट तथा गणेशजी के नेत्रों का सौन्दर्य देखते ही बनता है। (चित्र ६३)

तुला (बाँहगी)—

साँझी के अन्तर्गत बनाये जाने वाला यह प्रतीक श्रवण कुमार की मातृ-पितृ भक्ति से प्रेरित है। मानवीय संस्कारों से जुड़े इस प्रतीक को साँझी के चित्र क्रम में स्थान देकर संभवत: यही भाव प्रदर्शित किया जाता है। (चित्र ६४)

गिर्राजधरण एवं श्रीकृष्ण—

साँझी के १६ दिवसीय कथा क्रम के अन्तर्गत कहीं-कहीं गोबर के द्वारा गिर्राज धरण लीला अथवा श्रीकृष्ण से चित्रांकन भी देखने को मिलते हैं। यद्यपि साँझी के कथानक में ऐसे किसी प्रतीक का उल्लेख दर्शित नहीं होता तथापि वृन्दावन, बरसाना एवं गोवर्धन आदि क्षेत्रों में यह अंकन देखे जा सकते हैं। (चित्र ६५, ६६)

मोर—

मयूर का अंकन मानव-मन को प्राकृतिक परिवेश के मध्य ले जाता है साँझी के दौरान ब्रज के कई स्थलों पर गोबर के द्वारा तैयार मोर की आकृति लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करती है। (चित्र ६८)

नाव में साँझी—

साँझी उत्सव के अनुसार पीहर में आई साँझी को प्रसन्न चित्त रखने के निमित्त प्राकृतिक परिवेश के मध्य नाव में भ्रमण कराया जाता है। इस कथानक के चित्र में कुंवारी कन्याएं गोबर के द्वारा यमुना की लहर नाव, पतवार और नाव में बैठी साँझी का सुन्दर दृश्य उपस्थित करती हैं। (चित्र ६९)

साँझी-साँझा—

साँझी और साँझा के मिलन स्वरूप चित्रित किए जाने इस अंकन की छटा देखते ही बनती है। ब्रज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में इस अंकन का सौन्दर्य देखा जा सकता है। कुंवारी कन्याओं के द्वारा इसका अंकन किए जाने के उपरान्त साँझी-साँझा को नाना प्रकार के फूलों की पंखुड़ियों से सजाया जाता है तथा सायंकाल प्रतिदिन की भाँति आरती की जाती है। (चित्र ७०)

कोट की तैयारी—

साँझी खेलने वाली कुंवारी लड़कियों में इसके समापन अवसर पर बनाये जाने वाला कोट इनके अद्‌भुत उत्साह का परिचायक है। कोट की तैयारी इनके द्वारा काफी पूर्व से ही आरम्भ कर दी जाती है जिसमें पूरे ब्रजमण्डल में अलग-अलग जगह बालिकाओं का समूह पूरे मनोयोग से साँझी कोट की सज्जा हेतु कार्य करता है। साँझी को भिन्न-भिन्न प्रकार के आभूषणों से सजाने की बात पारम्परिक वाणी ग्रन्थों में भी मिलते हैं—

गहने भाँति-भाँति के गूँथे, आनि फूल रँग-रँग हो।
श्याम सहेली अरू स्यामा के, पहिराए अंग-अंग हो।।
गोपनि के कुल कौं दुलरावति, तात-भ्रात लै नाम हो।
श्रीवृषभान भवन की पौरी, साँझी चीतति भाम हो।।[९]

---

९. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास कृत साँझी पदावली, पद- मिलि गोप कुमारी खेलहीं, साँझी स्यामा के संग हो। छन्द १६/१२

कोट की तैयारी करने के दौरान मिट्टी को गूंथकर उसे लचीला बनाया जाता है तदोपरान्त उससे साँझी के पृथक-पृथक आभूषण जैसे—कौंदनी, कंगन, हार, मुखाकृति, कौड़ी (मिट्टी की), हाथ-पैर, गुजरिया तथा चुटीला (चोटी) आदि तैयार किए जाते हैं। जिनके सूखने के उपरान्त इनको रंगों के प्रयोग से सजाया जाता है। **(चित्र ७१-७८)**

नरवर कोट—

साँझी के आखिरी दिन बनने वाले नरवर कोट से इस परम्परा का सौन्दर्य समझा जा सकता है। सही मायनों में साँझी के शुरूआती दौर में बालिकाओं का जो उत्साह शनै:-शनै: बढ़ता है। यह कोट उस उत्साह की चरम अवस्था है जिसके अन्तर्गत वे मिट्टी की रंगीन कौड़ी, पीतर पन्नी, फूलों की पंखुड़ी एवं विभिन्न रंगों के प्रयोग से इसे सजाती है तथा प्रतिदिन की भाँति सायंकाल इसका पूजन करती है। **(चित्र ७९-८२)**

साँझी के सन्दर्भ में विद्वानों के मत—

साँझी की यह परम्परा ब्रजमण्डल ही नहीं अपितु अलग-अलग अंचलों में पृथक-पृथक रूपों से विद्यमान है जिसके सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों ने साँझी के उद्भव तथा विकास पर केन्द्रित भिन्न-भिन्न बातें कही है।लोक संस्कृति की अध्येयता मालती शर्मा ने साँझी परम्परा का उद्भव एक पौराणिक कथानक के आधार पर निर्धारित किया है। उनके अनुसार लोक जीवन के व्रत-त्यौहार, उपवास, रीति-रिवाज और कथा किवदन्तियों के निर्माण में पुराणों का योगदान और प्रभाव सर्वोपरि है। उन्होंने शिव पुराण में ब्रह्मा की मानसी कन्या संध्या के कथानक को आधार बनाते हुए साँझी की परम्परा को रेखांकित किया है।[१०] निमाड़ी लोक साहित्य के गहन अध्येता बसन्त निरगुणे ने साँझी को साँझफूली नाम से चित्रित करते हुए निमाड़ी किशोरियों से सबसे प्रिय त्यौहार कहते हुए निमाड़ में ही उसके जन्म एवं विकास का होना बताया है।[११] श्री मोहन स्वरूप भाटिया ने साँझी को आदि-शक्ति देवी की प्रतीक पार्वती के लोकगृहीत रूप गौरा

१०. ब्रह्मा की मानस कन्या संध्या- मालती शर्मा।

११. बिखरे रंग निमाड़ के, बसन्त निरगुणे, लोकरंग, शंकर गंज, इन्दौर, १९७६ पृ॰ २२।

तथा एक ऐसी नायिका जो पितृपक्ष में अपने भाई के साथ ससुराल से पीहर आती है, मांना है।[१२] डॉ॰ शंकर लाल यादव की दृष्टि में साँझी दुर्गा का रूप, बालिकाओं की आराध्या तथा संध्या माता है।[१३] डॉ॰ सत्यागुप्ता साँझी को दुर्गा का एक स्वरूप मानती हुई इसका सम्बन्ध रामविजय से हांना बताती है।[१४] श्री कलानाथ शास्त्री ने साँझी को एक लोक परम्परा कहा है।[१५]

राजस्थानी लोक साहित्य के वरिष्ठ अध्येता डॉ.महेन्द्र भानावत ने साँझी के कथानक को बगड़ावत की एक लोकगाथा से जोड़ा है। जिसके अन्तर्गत उन्होंने सेबड़ी नामक ब्राह्मणी तथा हरि जी के विवाहोपरान्त हुए पुत्र बाघ जी की कथा के अन्तर्गत साँझी के लोक इतिहास की जानकारी दी है।[१६]

ब्रज की साँझी से जुड़े कुछ पारम्परिक गीत—

साँझी में आरती के दौरान कन्याऐं अपने भाईयों की मंगलकामना के निमित्त आरती गाते हुए कहती हैं—

आरता री आरता मेरी संजा माई आरता।
सोने का दिया ले कपूर की बाती।।
सुरही कौ घृत जरइ सारी रात। जहाँ पै बैठे मेरे सगरे भाई।।
चिरजीवौ मैय्या के जाए। जाए री जाए गोद खिलाए।।

साँझी के अंकन के बाद सायंकाल पूजन करते समय ब्रज की बालिकाएँ अनेक लोक-गीत गाती हैं, जिनमें उनकी पारम्परिक लोक भावना अभिव्यक्त होती है—

जाग माई, जाग माई, खोल किवार। मैं आई तेरे पूजन द्वार।।
पूजि-पुजंतर बेटी, का फल माँगे? भैया-भतीजे संपति होइ।
भैया चाहिएँ नौ-दस-बीस। भतीजे चाहिएँ पूरे बत्तीस।।

१२. ब्रज लोक कला, सम्पादक हर्ष नन्दिनी भाटिया, पृ॰ ११७

१३. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ॰ २३८

१४. खड़ी बोली का लोक साहित्य, पृ॰ ३७२

१५. राजस्थान वैभव में प्रकाशित लेख 'साँझी कला जो ब्रज में जन्मी, राजस्थान में पनपी, पृ॰ १३१)

१६. साँझी पर मत वैमिन्य और उसका उत्स - डॉ॰ महेन्द्र भानावत, वृन्दावन में आयोजित लोक संगोष्ठी के अन्तर्गत पढा गया शोधपत्र

ब्रज में साँझी के साथ साँझा का उल्लेख भी इन गीतों में मिलता है। सामान्यतया साँझा को साँझी का पति माना गया है, किन्तु इस लोक गीत में उसे अपने भाई के रूप में कथित किया गया है–

साँझी भैना री, का ओढ़ैगी, का पहिरैगी, काहे कौ सीस गुँथावैगी?
मैं तौ सालू ओढूंगी, मिसरू पहिरूंगी, मोतियन की माँग भराऊंगी।

वहीं एक अन्य गीत में लोक अभिव्यक्ति देखिये–

माँ सांजा कहाँ ब्याहे परबेरिया, माँ सांजा कहाँ ब्याहे परबेरिया।।
बेटी असवर-परवल ब्याहे परबेरिया, माँ भाभी कैसी आई परबेरिया,
बेटी नाक चना सी, मौंह मटका सो, घूँघट में घुर्राइ परबेरिया,
माँ भाभी कित्तौ खाबै परबेरिया, बेटी थई की थई उड़ावै परबेरिया,
माँ पानी कितनौ पीबै परबेरिया, बेटी चरस के चरस चढ़ावै परबेरिया।[१७]

ब्रज के लोकगीतों में साँझा को साँझी का पति या भाई सम्बोधित किये जाने के अलग-अलग उल्लेख मिलते है। ब्रज के एक गीत में कहा गया है कि वैसे तो साँझी के पचासों भाई है किन्तु उनमें नौं-दस भाई उसे अधिक प्रिय है और उन नौं-दस भाइयों में भी साँझा उसका प्रिय भाई है–

मेरी साँझी के औरे-दौरे हरी-हरी चौराई
मैं तोइ पूछूँ साँझी भैंना कै तेरे भाई?
मेरे पाँचरी पचास मेरे नौ-दस भाई
अरी नाऊ-दसन कौ अंजन-मंजन,
साँझा मेरौ भाई।[१८]

❀

१७. ब्रज की लोक गाथाएं और कथा गीत, रामनारायण अग्रवाल/डॉ॰नरेशचन्द्र बंसल भाग-२
१८. लोक-कला साँझी: अनेक रूप-अनेक कथाएँ, मोहनस्वरूप भाटिया

साँझी-पदावली
(साहित्यिक पक्ष)

ब्रज की साँझी के लोक पक्ष के साथ ही इसकी देवालयी परम्परा ने साँझी कला को पृथक-पृथक कालक्रम में पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया। ब्रजमण्डल के देवालयों में साँझी ने अपने वैविध्यपूर्ण कलापक्ष यथा पुष्प-साँझी, सूखे रंगों की साँझी, जल के ऊपर सूखे रंगों की साँझी एवं जल के नीचे सूखे रंग की साँझी आदि चमत्कारिक प्रदर्शन के चलते लोगों को सदैव अपनी ओर आकर्षित किया है। ब्रज के देवालयों में प्रतिदिन सायंकाल समाज गायन का आयोजन यहाँ की देवालयी परम्परा का अपना सांस्कृतिक वैशिष्ट्य है जो वर्ष पर्यन्त मनोरथ क्रम के अनुरूप चक्रित क्रम में चलता है। यहाँ पितृपक्ष के दौरान आयोजित साँझी मनोरथ के अन्तर्गत श्रीविग्रह के समक्ष गाए जाने वाले पद इस परम्परा से जुड़े लिखित साहित्य की ओर इंगित करते हैं। साँझी के कला पक्ष से जुड़े साधकों से हमें इस सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलीं।

ब्रज की साँझी परम्परा पर केन्द्रित इस कार्य की समग्रता हेतु तत्कालीन वाणीकारों की खोज एवं उनके द्वारा पृथक-पृथक कालक्रम में सृजित साँझी विषयक पोथियों से विषय सम्मत संकलन हेतु हमें अनेक निजी संग्रहों तथा ब्रज साहित्य से जुड़े पाण्डुलिपिविदों के सहयोग से साँझी से जुड़े एक बड़े साहित्यिक पक्ष की जानकारी मिली। जिसके परिणामस्वरूप साँझी विषयक कुछ पदों का संकलन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। साँझी पर केन्द्रित अब तक हुए कार्यों में इस परम्परा से जुड़े कुछ-एक पदों का उल्लेख कर कार्य की इतिश्री कर दी गई परिणामस्वरूप देवालयी साँझी में लिखित परम्परा से जुड़ा एक बड़ा पक्ष अब तक अनुद्घाटित ही बना रहा है। ब्रजमण्डल में पारम्परिक घरानों से जुड़े लोगों के निजी संग्रह तथा स्थानीय साहित्यिक संस्थानों में बड़ी संख्या में हस्तलिखित ग्रंथ मौजूद हैं। साँझी परम्परा से जुड़ा साहित्य प्राय: अलग-अलग कालावधि में सृजित वर्षोत्सवों एवं विभिन्न वैष्णव साधकों की अल्पज्ञात-अप्रकाशित वाणियों

में संकलित है। इन वाणियों में उत्सव क्रम के हिसाब से साँझी के उल्लेख भी मिलते हैं। ब्रजमण्डल के अनेक निजी संग्रहों तथा स्थानीय विभिन्न संस्थानों में यह उल्लेख देखे जा सकते हैं। प्रस्तुत पदोंके संकलन हेतु हमने वृन्दावन शोध संस्थान सहित रसभारती संस्थान वृन्दावन, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ वृन्दावन, हित परमानन्द पुस्तकालय वृन्दावन, यशोदानंदन मंदिर वृन्दावन, कौशिक जी का संग्रह कामवन, बाबा प्रियादास राधाकुण्ड, सर्वेश्वरदासजी बरसाना एवं मौनी बाबा वृन्दावन आदि के संग्रहों से सामग्री संकलित की है।

साँझी की साहित्यिक परम्परा से जुड़े अधिकांश साधकों का साहित्य विभिन्न पारम्परिक वर्षोत्सवों में संकलित है जहाँ साँझी के साथ ही अन्य विविध मनोरथों से जुड़े पद भी उत्सव क्रम के अनुसार संयोजित होते हैं। जैसा कि हम जानते हैं तत्कालीन दौर में काव्य सृजन करने वाले साधक अपने नाम के स्थान पर लगाई जाने वाली छापों में भी विविधता रखते थे। एक ही रचनाकार की कई छाप होने पर उसकी कोई भी एक छाप अन्य रचनाकार से साम्यता रखने पर अध्येताओं के लिए चिह्नित रचनाकार का साहित्य संकलन दुरूह हो जाता है। ऐसे में अनेक वैष्णव भक्त रचनाकार एवं सुकवियों के साहित्य का संकलन श्रम एवं समय साध्य कार्य है। जिसे नाम-छाप के साथ ही रचनाकार की भाषा शैली तथा अलग-अलग समय में प्रतिलिपित अन्य-अन्य प्रतियों के मिलान द्वारा शुद्ध करने का प्रयास किया गया है। कालांतर में जहाँ ब्रज की साँझी परम्परा के कला पक्ष ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया वहीं इसके साहित्यिक पक्ष से जुड़े वैशिष्ट्य का भान प्राचीन पोथियों से दर्शित देखा जा सकता है। जो ब्रज के विभिन्न धर्म- सम्प्रदायों से जुड़े अनेक वैष्णव साधकों द्वारा पीढी दर पीढी साधनारत रहते हुए निष्काम भाव से रचित किया गया। साँझी विषयक साहित्य से सम्बन्धित अनेक दुर्लभ पोथियाँ आज ब्रजमण्डल ही नहीं अपितु भारतवर्ष के विभिन्न ग्रंथागारों सहित विदेशी ग्रंथागारों में भी देखी जा सकती हैं।

साँझी पदानुक्रमणिका

सूरदासजी कृत साँझी लीला

राधा प्यारी कह्यौ सखिन सों... 48
सखियन संग राधिका बीनत... 48
प्यारी, तुम कौंन हौ री फुलवा... 48

गो० हरिराय जी कृत साँझी लीला

श्री वृषभानु लड़ैती गाइयै... 49
कीरत कुल मंडन गाइयै... 51

श्री नागरीदास जी कृत साँझी लीला

जमुना के कूल-कूल लता... 53
रहे दोऊ वदन निहार-निहार... 54
दुहुँन की अंखियाँ अँखियन... 54

नागरीदास जी कृत साँझी फूल बीनन प्रसंग

साँझी फूल लैन सुख दैन... 54
ऐसे या सघन वन निर्जन... 55
फूलन के बीनबे कौं आई... 55
हम ही कौं चिंता इहि वन... 55
कहा है परायौ सब दीखत... 56
हम हूँ हैं राधेजू के हमैं... 56
फूल हैं हमारे हम लैहिंगी... 56
साहस सँभारि श्याम आगें... 57
फूलन कों गई उत सखी मिल... 57
जेते द्रुम कुंजन कलप-वृक्ष... 57
राधा मन मोहन अगाधा... 58
वृन्दावन आनँद विहार... 58
साँझ समें जमुना के कूले... 58
आई है मलिनियाँ कोऊ... 59
फूलन के उर हार मेल लियें... 59

गो० श्रीहित रूपलाल जी कृत साँझी-लीला

खेलत साँझी लाड़िली सोहे... 60

चाचा श्रीहित वृन्दावन दासजी कृत साँझी के पद

ए रितु शरद सुहाई अरु साँझी... 64
मिलि गोप-कुमारी खेलहीं... 67
शरद रितु आगम गोप-किशोरी... 69
सब ब्रज की शोभा लाड़िली... 71
वृषभान लली खेलनि चली... 74
वृन्दावन रानी गाइये रावलपति... 76
सब सखियनि प्यारी राधिका... 78
ब्रजजीवन-जीवनि लाड़िली... 80
मेरी रूप उजागर लाड़िली... 81
आजु खेलि हो साँझी साथै... 81
खेलति साँझी कुँवरि किशोरी... 83
हरे वरन के सूवटा मिठ बोला हो... 85
खेलति हैं साँझी राधा सखियनि... 87
साँझी आगैं निर्त्त साँवल-गौर... 89
साँझी पूजन श्यामा फूलनि बीनैं... 90
भटू! यह साँझी तेरी तू साँझी की... 90
प्यारी! तेरी साँझी की परवी... 90
अरी तू आई नवेली!... 90
अरी! यह गोप ढुरौनी... 91
अरी! तू घर तजि आवति... 91
झमकि चलीं साँझी चीतनि... 91
कहा नीकी चीतति साँझी... 91
जा दिन तें मेरी अतिलड़ि राधा... 91
साँझी! बड़भागिनि... 92
साँझी की विधि नीकैं जानति... 92
साँझी मंत्र मोहि आवत है... 92
साँझी-सुख तोही तें जु प्रकाश्यौ... 92
श्याम जू सखियन माँझ... 93
अरी-अरी साँझी सुघर ... 93
वारी-वारी मैं किशोरी!... 93
अरे घर! तू जिन रीझै... 93

अरी कोउ जंत्र बनावौ... 94
वृन्दावन फूलनि सौं छायौ... 94
विचक्षन लाई फूल भरि ओली... 94
यह सुख-वर्द्धनि साँझी राधा!... 95
इतहिं साँझी रची उतहिं फूली साँझ... 95
बढ़ि पर्‌यौ साँझी-खेल... 95

चाचा श्रीहित वृन्दावनदास कृत ब्रज प्रेमानन्द सागर 96

श्रीवल्लभरसिकजी कृत साँझी पद

मेरी छैल छबीली लाड़िली... 102

श्रीमदनमोहनदास जी कृत साँझी पद

ए यह शरद मास कल खेल... 109

बिहारिनिदास जी कृत साँझी पद

आजु साँझी रंगमहल... 112

प्रेमदासजी कृत साँझी पद

अरी हेली! रंग रँगीली लाड़िली... 112

श्रीघनश्यामजी कृत साँझी पदावली

श्रीवृषभानु लड़ैती गाईये... 115
कुँवरि लड़ैती खेलहीं... 118

हित परमानंदजी कृत साँझी के पद

साँझी खेलत रंग महल में... 120
प्रीतम दोऊ साँझी खेलत संग... 120
साँझी खेलें जु नवल अलबेली... 120
श्रीवृन्दावन कुंजमहल राधिकावल्लभलाल... 120
श्रीवृषभानु कुमारि किशोरी श्रीराधिका... 121
पूंछति प्यारी जू प्रेम सखी कौं ... 121

श्रीकृष्णवल्लभजी कृत साँझी पदावली

यह वन तुमहीं सों सुहात... 121
मोय अति लागत यह वन... 121

श्रीगुनमंजरी कृत साँझी पद

फूलन बीनन आली... 122

श्रीरामरायजी कृत साँझी पद

मुरली वारे सांवरे नेंक... 122

सूरदासजी कृत साँझी लीला

राधा प्यारी कह्यौ सखिन सों साँझी धरौ री माई।
बिटियाँ बहत अहीरन की मिलि गई जहाँ फूल अथाई।।
यह बानी जानी मनमोहन कह्यौ सबन समुझाय।
भैया बछरा देखे रहियौ मैया छाक धराय।।
ऐसे कहि चले स्यामसुन्दर वर पहुँचे जहाँ सब आईं।
सखी रूप है मिलि लाड़िली फूल लिये हरषाई।।
कर सों कर राधा सँग शोभित साँझी चीती जाय।
षट रस के विंजन अरपे तब मन अभिलाष पुजाय।।
कीरति रानी लेत बलैया विधि सौं विनय सुनाय।
सूरदास अविचल यह जोरी सुख निरखत न अघाय।।[१९]

❀

सखियन संग राधिका बीनत, सुमनन बन माँह।
साँझी पूजन कों आतुर ही ठाड़े कदंब की छाँह।।
सखी भेष दै मोहन कौं, लै चली आपुने गेह।
पूछी कीरति, यह को सुंदरि? तब कह्यौ मेरी सनेह।।
साँझी खेल विदा करि सबकों, दोउ पौढ़े सेज मंझार।
सगरी राति सूर के स्वामी बसि सुख लियौ अपार।।[२०]

❀

प्यारी, तुम कौंन हौ री फुलवा वीनन हारी।।
नेह लगन कौ बन्यौ बगीचा फूलि रही फुलवारी।
आपु कृष्ण वनमाली आये तुम बोलौ क्यौं न पियारी।।
हँसि ललिता जब कह्यौ स्याम सौं ये वृषभानु दुलारी।
तुम्हरौ कहा लगै या वन में रोकत गैल हमारी।।
श्यामा सखा सखियन समझावैं हठ न करौ मेरी प्यारी।
फल द्रुम वन वाटिका सुघर के हमहीं हैं रखवारी।।
राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सम्हारी।
सूरस्याम राधा मुख निरखत एकटक रहे निहारी।।[२१]

❀

---

१९. वर्षोत्सव पद संग्रह यशोदानंदन मंदिर, वृन्दावन
२०. वर्षोत्सव पद संग्रह यशोदानंदन मंदिर, वृन्दावन
२१. वर्षोत्सव पद संग्रह यशोदानंदन मंदिर, वृन्दावन

गो. हरिराय जी कृत साँझी लीला

राग गौरी

श्री वृषभानु लड़ैती गाइयै, कीरति-कुल-मंडन बाल हो।
सोने की सी बेलि हो, प्यारी चंपे की सी माल हो।।
हंस गमनी मृगलोचनी, सोभित सहज सिंगार।
चमकत चंचल चीकने, प्यारी ये सिटकारे बार।।
घूँघर वारे बारन ऊपर, सोभित सुंदर साल।
चंद के फंद परे अहिनंदन, उरझे कंचन जाल।।
अतलस कौ लहँगा कटि गढ़ौ, दरयाई की अँगिया पीत।
उरज सुभट कंचन कबच सजि, आये रति रन जीत।।
कृस कटि केहरि देख दुरे हरि, जेहर तेहर पाँय।
गजगमनी कमनी अवनी, रति रमनी लेति बलाय।।
कर चूरौ ललकै झलकै, पलकें न लगें छबि देख।
अँगुरिन मुंदरी, पोंहचिन गजरा, बाजूबंद बिसेख।।
चंपकली चौकी चमकै, दमकै दुलरी पिय पोति।
चित कों लेत चुराय चाहि कै, बदन चंद की जोति।।
अरुन अधर दमकत दसनावलि, स्याम चपलता सार।
कमल कोस में बैठी पंगति, मानों भृंग कुमार।।
बेसर कौ मोती लटकै, मटकै खटकै पिय प्रान।
स्त्रवन बनी रुचि मनी कनक की, तनक तरकुली कान।।
पिय-तृष मोचन रति-रस-रोचन, चंचल लोचन चार।
कुँवरि किसोर चकोर चहँटुवा, पढ़त चंद चटसार।।
अलिकुल-गंजन, रतिरस रंजन, नैनन अंजन दीन।
क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ, मनु मनसिज के मीन।।
समर सहायक नव रस नायक, सायक धायक नैन।
कीर कुरंग सुरंग कमल कानन सों ठानत ठैन।।
कारी झपकारी भारी बरुनी, बरनें सो कवि कौन।
भ्रौहें सुठि सोहें मोहें, मानों हाव-भाव के भौन।।
सोभित वर बेंदुक कुसुमन की, बेंदी दीनी भाल।
इंदु वधू मानों नवल चंद कों आई मिलि पिय बाल।।
सीसफूल सोहै मोहै, बनी तनक कनक की आड़।
चिबुक चारु मुसिकाय हँसत, जब परत कपोलन गाड़।।

यह बिधि छबि अगाधा साधा, राधा जू सखियन माँझ।
बिटिया बहुत जो गोपन की सँग, खेलत साँझी साँझ।।
गोधूलक बिरियाँ डलिया फूलन की लै चली हाथ।
बीनत फूलन यमुना कूलन, स्यामा जू के साथ।।
एक लिए ओली चोली पर, चाप चिबुक तर चीर।
फूलन तोरत तनहिं मरोरत, जहाँ भ्रमरन की भीर।।
एकन लै लावन्य ललित, पटकी अटकी कटि चीन।
रमक झमक पल्लव नवाय, चढ़ बीनत फूल प्रबीन।।
कुंदी कुंद कनेरन कोमल, निरबारत बाला बेलि।
ललित लवंग लता बनिता पर, रहे झूमिका झेलि।।
जाई जुही केतकी निवारी, चमेली अरु रायबेलि।
फूलन की कर गेंदुक बाला, बन में खेलत खेल।।
मौरसिरी के फूलन की, नकफुली बनावत एक।
स्यामा अभिरामा सुख धामा, खेलत खेल अनेक।।
तिहि छिन कुंज बिहारी जू, दुर देखत कुंजन ओट।
रहे हैं तृणित कैसे जु चितेरे, लगी दृगन की चोट।।
कियौ सखी कौ रूप लाल नें, भर गुलाब दल गोद।
त्रिया रूप धर दरसन दीनौ, मन में मानत मोद।।
निरख निरख वृषभानुनंदनी, बोली वचन रसाल।
सब सिंगार सोहै मोहै तू, को है री नव बाल।।
तू क्यों फिरत अकेली हेली, यह बन यमुना कूल।
नंदगाँम घर साँझी कों हम, बीनन आईं फूल।।
उत्कंठित वृषभानंदिनी, कंठ भुजा उर मेल।
आज अबार भई सांझी कों, तू संग हमारे खेल।।
सखी लई सब बोल गो रंभन, धुनि सुन कान।
बड़ी वार घर जैहै तौ, खीजै बाबा वृषभानु।।
चंदा चंद्रभगा चंद्राबलि, चंचल नयनी चली धाम।
बहुत फूल बीने हैं भटू री, पूजे मन के काम।।
कमल फिरावत गीत जो गावत, आवत घर ब्रजबाल।
फूलन की कर गेंद लकुटिया, फूलन की उर माल।।
माय धाय उर लाय लई, कीरत जू परम प्रवीन।
अरघ बढ़ाय लई घर भीतर, आप आरती कीन।।
मृगमद चंदन केसर सों, स्यामा जू लीपी भीत।
कामधेनु के गोवर सों, रचि साँझी फूलन चीत।।

धूप दीप धरि भोग अमृत रस आप आरती उतारि।
गावत गीत पुनीत किसोरी श्री वृषभानु कुमारि।।
करि कै व्यारू खेलि चलीं, सब अपने अपने धाम।
स्यामा जू और नवल सखी, सुख लूट्यौ चारयौ याम।।
त्रिय बागौ ललिता ही दीयौ, स्यामा पति सुघर सुजान।
'रसिक' रूप धरि केलि करी, सुख-सागर प्रानन-प्रान।।[२२]

राग गौरी

कीरत कुल मंडन गाइयै, वृषभानु नृपति की बाल।
कंचन तन सोहै मोहै, उर पहिरै मुक्ता माल।।
सखी वृंद सब आइ जुरीं, बृषभानु नृपति के द्वारि।
बीननि फूल चलौ बन राधे, नव सत साजि सिंगारि।।
ये सुनि कीरति जू हँसिकै, प्यारी कौ कियौ सिंगारि।
कबरी कुसुम गुही है मानों, उरगन की अनुहारि।।
सीसफूल ज्यों चंद बिराजत, सोभा कही न जाइ।
कोटि चंद वारों मुसिकनि पै, काम रह्यौ मुरझाइ।।
बंक बिराजि रहे भृकुटी-तट, खुटिला स्त्रवनन पास।
यां लपटाइ रहे दोऊ, जनु नैन दरस की आस।।
करन फूल झूमक औ बंदी, लटकन बेंदि लिलार।
नकबेसर मोती अति सोहै, लटकन परम सुढार।।
बदन तमोल अधार अरुनाई, दसन लसत अतिसार।
चिबुक बिंदु मधुकर सुत बैठ्यौ, मानों आसन मार।।
अंजन ऊपर खंजन वारों, नैन चपलता मीन।
कीरतिजू छवि निरखि निरखिकै, नीठि दिठोंना कीन।।
चौकी चमकत मनियाँ दुलरी, चंपकली उर हार।
बाजूबंद पछेली चूरी, कंकन गजरे चार।।

२२. प्रभुदयाल मीतल जी ने इस पद को अपनी पुस्तक गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित किया है, जिसके आखिर में रसिक छाप दर्शित होती है जबकि राधाबल्लभ मन्दिर वैष्णव कमेटी (रासवंश) वृन्दावन द्वारा प्रकाशित वर्षोत्सव द्वितीय खण्ड पृ. ५५५ पर उपरोक्त पद घनस्याम जी के नाम से उल्लिखित है, जिसके आखिर में 'स्याम घन' छाप अंकित है। रसभारती संस्थान वृन्दावन में संरक्षित पाण्डुलिपि पद संग्रह क्र. ६६१ के अन्तर्गत यह पद पृ. १८७ पर मिलता है, जिसमें यह पद एक अतिरिक्त छन्द के साथ स्याम घन छाप से ठीक उसी तरह दर्शित है जैसे राधाबल्लभ मन्दिर द्वारा प्रकाशित वर्षोत्सव में।

पोंहची रतनचौक औ मुँदीर, नख भूषन छबि देति।
श्री कर कमल बिराजत मानौ, उरगन चंद समेति।।
छुद्रघंटिका कटि तट राजति, जेहरी नूपुर पाँय।
अंगुरिनि बिछिया अनबट सोहें, सोभा कही न जाय।।
हरे कसब कौ ल्हैंगा सोहै, कंचुकि केसर अंग।
सारी सुही रँग है मानों, गुलाबाँस के रंग।।
करि सिंगार कह्यौ कीरतजू, जाउ लड़ैती साथ।
अली जूथ में चली परसपर, फूलन डलिया हाथ।।
चलती चाल मराल बाल, श्रीराधा सखियन माँझ।
बीनत फूलनि जमुना कूलन, खेलति साँझी साँझ।।
जाल-रंध्र देखत मन-मोहन, दृष्टि परी ब्रजबाल।
तिरिया रूप कियौ है तबही, आप मिले ततकाल।।
छबि निरखति वृषभानु दुलारी, बहौत करी मनुहारि।
बीनति फूल अकेली हेली, कौ है तू सुकुमारि।।
कौनें गाँव बसति हो सुँदरि, कहा तिहारौ नाम।
आजु अबारि भई है प्यारी, चलौ हमारे धाम।।
नंदगाँव में बास बसति हौं, साँवरी मेरौ नाम।
साँझी मिसि आई हौं या बन, पूजे मन के काम।।
सोंनजुही चमेली चंपा, रायबेलि औ बेलि।
गुलाबाँस के गेंद करे कर, करति परसपर केलि।।
कमल कनैर केतकी निवारौ, सेवति सदा गुलाब।
गुलतुर्रा औ सदासुहागिनि, फूलन की भरि छाब।।
ललिता चंपकलता बिसाखा, स्यामा भामा जेह।
चंदभगा तुंगा चंद्रावलि, आँईं करि अति नेह।।
ठौंर-ठौर सब कहति सखिनि सों, चलौ भटू घर जाँह।
स्यामाजू औ नवल सखी दोउ, गही परसपरि बाँह।।
सोंधे गंध मध्य चंदन मिलि, करति केलि मन भाए।
निरखि देव दुंदिभी बजावत, पुहुपन की झर लाए।।
फूल गेंद सबहिन लिये कर, गावति साँझी गीत।
गज गति चाल चलति ब्रज-सुंदरि, बढ़ी परम रस प्रीत।।
चहुँ दिसि तें सब आइ जुरीं, वृषभानु नृपति के द्वारि।
कीरतजू तब करति आरतौ, राई लोन उतारि।।

कीरति बिहँस कह्यौ मृदुबानी, लली! अली ये कौन।
प्यारी कह्यौ नँदगाँव बसति है, खेलनि आई भौन।।
केसर चंदन अगर अरगजा, मृगमद कुंमकुंम गारि।
कामधेनु कौ गोबर लैकै, साँझी धरति सँभारि।।
धूप दीप करि भोग धर्‌यौ, औ आरति करी बनाइ।
माँगति सीखि सबै ब्रज-बनिता, हाथ जोरि सिर नाइ।।
व्यारू आजु करौ मिलि ह्याँहीं, राधा जू के साथ।
कीरति जू यौं कहति सबन सों, परसों अपुने हाथ।।
कर व्यारू घर गईं सहेली, रह्यौ खेल कौ रंग।
कमल सेज पर पौढ़े दोऊ, साँवरी राधा संग।।
कहा कहौं कछु कहत न आवै, प्रभु कौ यही स्वरूप।
त्रिया बसन ललिताहि दिये हैं, कियौ है हरि निज रूप।।
बरनों कहा यथामति, मेरी रसना एक बनाय।
'हरिदास' प्रभु की यह सोभा, निरखत मन न अघाय।।[२३]

श्री नागरीदास जी कृत साँझी लीला

राग– गौरी

जमुना के कूल-कूल लता रही झुलरी।
तहाँ द्वै सखी हैं नील पियरे दुकूल री।।
गोधूरक बेर इतै ह्वै गइ अबेर में।
देखत ठगी-सी रहीं दोऊ तेहि बेर में।।
बीनत हैं फूल-फूल फलहि लगत हैं।
झमकि झुकावैं झूमि डारन गहत हैं।।
साँवरी औ गोरी छबि सोहैं अलबेली हैं।
सबही ते न्यारी-न्यारी डोलत अकेली हैं।।
बेसर अलक माँझ लट अरुझात हैं।
ताकी सुरझावन में अरुझी ही जात हैं।।

---

२३. अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा द्वारा प्रकाशित पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ में ज्योतिषी पण्डित राधेश्याम जी द्विवेदी के लेख साँझी-कला के अन्तर्गत उक्त पद का अंश छाप पंक्ति सहित, स्वामी हरिदास जी के नाम से उल्लिखित किया गया है, वहीं प्रभु दयाल मीतल द्वारा गो० हरिराय जी के पद साहित्य पर केन्द्रित कार्य के दौरान यह पद हरिराय जी कृत दर्शाया गया है।

मेरी सौं कपट तजि खोल मुख मौन है।
नागरिया मोसौं कहि सखी यह कौन है।।२४

⊛

राग— पूरबी

रहे दोऊ वदन निहार-निहार।
फूलन बीनत श्याम सखी उत इत श्यामा सुकुँवार।।
लता करन में रह गई इत-उत सकै कौन निरवार।
नागरिया मिलि नैन दुहुँन के बड़े ठगन ठगवार।।

⊛

राग— तितला

दुहुँन की अंखियाँ अँखियन माँझ।
अँखियन में ही साँझी खेलत अँखियन फूली साँझ।।
रूप बगीचन फिरत फूल भरी गलबँहियाँ दै अँखियाँ।
गौर श्याम अँखियन की उरझन उरझत नागरि सखियाँ।।२५

⊛

नागरीदास जी कृत साँझी फूल बीनन प्रसंग

कवित्त

साँझी फूल लैन सुख दैन मन नैंनन कौं,
श्यामाजू साथ यूथ युवतिन के धाये हैं।
चलत अधिक छबि छाजत छबीलिन,
रँगीलिन के रंग-रंग पट फहराये हैं।।
नागर निसान नाद नूपुर समूह बाजे,
अंग की सुवासन भ्रमर छुटि आये हैं।
वृन्दावन बीच पाँड़ धरत उठी यों गाड़,
तानौं घनश्याम जान मोर कुहकाये हैं।।१।।

⊛

२४. नागरीदासजी कृत साँझी लीला।
२५. नागरीदासजी कृत साँझी लीला।

ऐसे या सघन वन निर्जन के माहिं मैं तौ,
आवती तौ जानी नाहि जानी जब गाई हौ।
और है न संग कोऊ एक जात युवती हौ,
बिना ही बिचारे जोर जोवन के धाई हौ।।
अब फिर जाहु आप अपने भवन सब,
ठौर सु इकौसी फिरै मदन दुहाई हौ।
किधौं तुम नागरि हौ हमें समुझाय कहौ,
कौन की पठाई यहाँ कौन काज आई हौ।।२।।

⊛

फूलन के बीनबे कौं आई इहि वन मिलि,
बूझिबे की हिय ऐसी धरन क्यों धरी।
टेढ़ी ये चितौन दीसै टेढ़ी-टेढ़ी बातैं कहौ,
टेढ़े ह्वै कै ठाढ़े छली छैल रोपिकै छरी।।
उचित नहीं यहाँ अकेले हौ युवतिन में,
नागर निकस जाहु याही साँकरी गरी।
नातौ अनबोले रहौ छाँड़ि मग मेरे हम,
आवेगी हजार बेर तुमकों कहा परी।।३।।

⊛

हम ही कौं चिंता इहि वन की रहत नित,
नित रखवारे रहैं लाग्यौ चित चेत है।
हम आठौ याम सेवैं काम नृप धरम यह,
सहैं घन-घाम अति तातें हिय हेत है।।
हमहीं ते गहवर हरौ ह्वै रह्यौ है महा,
नागरिया प्यारौ मीन केत रस खेत-खेत है।
हमहीं कों दैकैं कछू लेनों होय सो लेहु यों,
पराये फल-फूलन कों कौन लैन देत है।।४।।

⊛

कहा है परायौ सब दीखत है राधे जू कौ,
बिना ही बिचारे झूँठे वचन उचारे जू।
राधे ही की भूमि यह राधे ही के खग-मृग,
राधे ही कौ नाम रटैं साँझ औ सवारे जू।।
राधे ही के सरवर तरुवर हैं राधेजू के,
राधे ही के फल फूल नागर निहारे जू।
राधे की दुहाई फिरै राधे ही कौ वृन्दावन,
तुम कौन लाला बीच हटकन हारे जू।।५।।

⊛

हम हूँ हैं राधेजू के हमें अपनाय लेहु,
पीवैं मुख सुधा रस देखि-देखि जीजिये।
निकट बुलाइ मोहि पाँयन लगाइ राखौ,
सखी हौ कुँवरिजू की खुनस न कीजिये।।
हारे तुम आगै ये वन द्रुम तुम्हारे अब,
नागरिया दुहूँ ओर रस घन भीजिये।
नीके सनमान कछू करि रखवारन कौ,
पाछे बहु फूलन सौं फूलन कौं लीजिये।।६।।

⊛

फूल हैं हमारे हम लैहिंगी पै तुम्हें कहा,
एपै एसैं टोकिबौ न कीजै बलिहारी जू।
दीनता करत ब्रजराज के कुँवर अब,
पहिले जे बातैं कही ते सब बिसारी जू।।
नीके हौ नागर हौ विमन न होहु तातें,
ह्वैकें निसंक दिस आईये हमारी जू।
वन के विहारी बारी लीजै द्रुम रखवारी,
लाल ये तुम्हारी मनुहारन सों हारी जू।।७।।

⊛

साहस सँभारि श्याम आगें आये प्यारीजू के,
रूप कौ अतुल भार परत न सह्यौ है।
बीच नील अम्बर के वदन मयंक लखि,
चक्रित चितौन में चकोर व्रत लह्यौ है।।
पाँय डिगुलात जात पीत पट छूटि गयौ,
नागरिया परत हिये धीरज न गह्यौ है।
पगे रूप चैनन में बैनन फुरत मन,
लियौ चाहें हाथ मन हाथमें न रह्यौ है।।८।।

⊛

फूलन कों गईं उत सखी मिल जहाँ—तहाँ,
इत कौं रँगीले कछु औरै ढार में ढरे।
रसिक रसाल बाल दयौं चाहैं उर माल,
जब नंदलाल हँसि आगे हाथ लै करे।।
उरझी चितौन कंप-स्वेद-स्वरभंग भये,
नागरिया नागर अनंग रंग सौं भरे।
राधे जू दयौ है हार मोतिन कौ मोहन कौं,
मोहनजू हार होय राधे के गरें परे।।९।।

⊛

जेते द्रुम कुंजन कलप-वृक्ष ये प्रतक्ष,
दुहुँन कौं वाँछित दई हैं निधि भलियाँ।
श्यामा स्याम करें केलि आनँद अलेल मत्त,
बेलि नये नेह की अछेह फूल फलियाँ।।
दम्पति कौ सुख सोई सम्पति है नैनन की,
नागरिया देखि-देखि जीवत हैं अलियाँ।
नेक दिन रात के विहात की न जानी जात,
वृन्दावन होत नित नई रँग रलियाँ।।१०।।

⊛

राधा मन मोहन अगाधा रूप रँग भरे,
भुज भरि झेलि काम केलि सरसाय दी।
खग शुकसारिकादि जकि थकि करि डारे,
नूपुर औं किंकिनी की झनक सुनाय दी।।
दूर ही हटक राखी कुंज द्वार अलि सैंनी,
स्वेद अंग मिली लै सुवास पहुँचाय दी।
हुतीं ललितादि जे लतान ओट नागरि ते,
देख न सकत प्रेम छकन छकाय दी।।११।।

⊛

वृन्दावन आनँद विहार चारु दंपति के,
ताकी दिन रात बात सो सुनि जियौ करौ।
ललित हिडोरा साँझी रंग दीप माला,
फूलन की कुंज रुचि रचना कियौं करौ।।
नित ही वसंत इहाँ होरी चित चोरी चाव,
नागरिया केलि ये सकेलि कैं लियो करौ।
दियौ करौ येई अरु येई सुख लियौ करौ,
येई दिन रैन रस रसिक पियौ करौ।।१२।।[२६]

⊛

राग—झंझोटी

साँझ समें जमुना के कूलें फूल लेत फल पाये री।
लतन ओट सों निकसि अचानक नैंन सों नैन मिलाये री।।
महा मुदित वृषभानु भवन में गावत गीत सुहाये री।
साँझी के पूजन वृन्दावन आवत भये मन भाये री।।[२७]

⊛

२६. नागरीदासजी कृत साँझी फूल बीनन प्रसंग, नागरीदास की वाणी-ब्रज संस्कृति शोध संस्थान। इसकी एक अन्य प्रतिलिपि वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार के क्र० १४०९३-B पर भी प्राप्त होती है जिसमें जेते द्रुम कुंजन कल्प...तथा राधामोहन अगाधा... दो कवित्त दर्शित नहीं होते है।

२७. नागरीदासजी कृत साँझी लीला, बाबा प्रियादास बरसाना के संग्रह में।

पद—

आई है मलिनियाँ कोऊ फूल कोऊ फूल लिये रंग-रंग।
नख सिख लौं अति सोहनी मानौं मोहिनी साँवरे अंग।।१।।
ललित-ललित गति हंस की तन ओढ़ै झीने चीर।
रूप अचम्भौ ह्वै रह्यौ वाके चहुँ दिसि माँची भीर।।२।।
फूल-फूल सों भेट किये जहाँ साँझी रचैं सुकुँवारि।
ताहि लाड़िली रीझि कैं दई मोतिन माल उतारि।।३।।
बाला माला परस कैं भये कम्प रोमांचित गात।
विसमय ह्वै सखियाँ रहीं लखि कन अँखियाँ मुसिकात।।४।।
क्यों कम्पित बूझयौ अली उहि कह्यौ जीरि विवि पानि।
तुम महींद्र वृषभानु कुँवरि हौं दीन पूजा भय मानि।।५।।
ज्यौं-ज्यौं कर प्यारी गहैं कहैं तू मत मानैं भीत।
साँझी चीत नचीत ह्वै बह सकै न साँझी चीत।।६।।
स्वेद सिथिल सियरी भई बह रही थहरि थहाय।
छुवत छबीली की छाँह कों बाकौ तन पिघल्यौ-सौ जाय।।७।।
रीझि व्यथा प्रगटन लगी जब श्यामा निहार।
निज मंदिर लै आइ कैं भरी रंग अंकवार।।८।।
नागरिया रस-रँगमगे दोऊ कुसुम सेज के माँझ।
साँझी पूजत पिय मिले परम सलौंनी साँझ।।९।।[२८]

⊛

सवैया—

फूलन के उर हार मेल लियें कर पंकज फूल फिरावैं।
फूलन की नवलासिन सों कई फूलन की गुहि गेंद चलावैं।।
फूल हियें बिच पीय लियें अलि नागर रंग अलेल सों गावैं।
मेलि के अंस भुजा सुख झेल यौं खेल कैं साँझी श्रीस्यामाजू आवैं।।

दोहा—

नागरि मन भाये भये, चली भवन मिलि बाल।
पायौ फूलन बीनतें, इक रतन अमोलक लाल।।[२९]

⊛

२८. नागरीदासजी कृत साँझी लीला, श्रीजी की कुंज, वृन्दावन
२९. नागरीदासजी कृत साँझी लीला, श्रीजी की कुंज, वृन्दावन

गो० श्रीहित रूपलाल जी कृत साँझी लीला

राग-गौरी

खेलत साँझी लाड़िली सोहे अति अलबेली भाँति हो।
रूप अनूपम मोहनी संग सखी गनन की पाँति हो।।१।।
ललिता ललित सुगंध तेल लै कबरी गूथि सम्हारी।
फूलन सों फूलन की रचना रतन फोंदना भारी।।२।।
सजल सुढार माँग मुक्ता की रचि सिन्दूर बनाई।
सखी विसाखा जिय अभिलाषा सजनी आप पुजाई।।३।।
सीस फूल सुख मूल लाल कौ छत्र सुहाग बिराजै।
बड़रे रतन अमोल जगमगैं कोटि भानु ससि लाजैं।।४।।
रतन बंगना लखत अंगना नैंना रहे लुभाई।
दीप सिखा सम रतन निबौरी लागत परम सुहाई।।५।।
झिलमिल जुत सखि रतन बंदनी झलमलात दुति नीकी।
चित्रा चित्र विचित्र बनाई प्यारी प्रोतमजी की।।६।।
नील-प्रीति मणि मानिक अद्भुत बैना सुभग सम्हार्‌यौ।
मुक्तावलि तासों लगि निर्त्तत रतिपति कौ मन हार्‌यौ।।७।।
रतन जटित करनन में सोहैं कर्णफूल रस झूलैं।
झूमक मुक्ता लगे ढरारे प्यारे अलि अनुकूलैं।।८।।
चंपक लता संवारी रचि-रचि मकर पत्रिका प्यारी।
चंदन बंदन विविध सुगंधन मृगमद बैंदी प्यारी।।९।।
बड़रे विमल सजल द्वै मोती मधि नथ लालहि लीयें।
परम सुहाग भाग की मूरति बसत सदा पिय हीयें।।१०।।
हरित जराइ रतन कौ टीकौ नीकौ कहत न आवै।
सुरख नीलमणि फबी अनूपम लखि सखि हियो सिरावै।।११।।
जगमगात मुख ससि उजियारी प्यारी कुँजन छाई।
निरखत सदा चकोर लाल दृग छिन-छिन लेत बलाई।।१२।।
कंठसिरी दुलरी मधि चौकी दुति दीपत अरुनाई।
पोत-गुँज गति लुंज करत लखि प्रीतम प्रीति बढ़ाई।।१३।।
अद्भुत जोति होत पदकन की पंकति ऊपर आई।
निज प्रति-बिम्ब झलमलै तिन मधि लालन रह्यौ बिकाई।।१४।।

अगनित चन्दमणिनु कौ नीकौ चन्द्रहार मन हारी।
सखी तुंगविद्या पहिरायौ भायौ अति सुखकारी।।१५।।
मुक्तन हार हमेल नगन की लाली चहुँ दिस छाई।
सखी इन्द्रलेखाजू ने अरपी निरखि-निरखि न अघाई।।१६।।
अंगद जुत मखतूल सुहाये भाये सुख के रासी।
लटकत झूमक झूम झुमारे कारे प्रेम प्रकासी।।१७।।
जटित नीलमणि दुहूँ करन में बलयाबलि छवि सीवाँ।
हरित जंगाली छन्न पछेली मणिमय लखि सखि जीवाँ।।१८।।
अद्भुत लाल मणिनु के कंकण हीरन सहित सुहाये।
गजरा द्वै लर बड़रे मोती गोती लाड़ लड़ाये।।१९।।
पद्मराग मणि रतन चौकरी पन्नन चहुँदिस जरिया।
अंगुरिन मुद्रावलि बहु बिध की नगन अमोलन भरिया।।२०।।
छल्ला हरित हरत मन प्रीतम उपमा कहा लगाऊँ।
महँदी लाल पानि नखमणि दुति निरखि-निरखि बलि जाऊँ।।२१।।
अरस परस छबि कौं दरसावत सरसावत मन प्यारी।
फबी आरसी अनुपम अरपी श्रीहित रूप निहारी।।२२।।
मन मोहनी रुणित कटि किंकिणि जटित जराई विराजी।
जेहर तेहर पायल नूपुर निरखि-निरखि रति लाजी।।२३।।
जारी मनुहारी प्रीतम की जरित जराइ जु विछुवा।
अनवट फूल फूलमणि मानिक देत मनोजन सिछुवा।।२४।।
सखी इंदु लेखा लिखि जावक चित्र-विचित्र बनायौ।
चरणकमल नखमणि दुति दीपति पत्र-पत्र प्रति छायौ।।२५।।
सखी रंगदेवीजू रचि-रचि तरुवन रुचिर ललाई।
चरणकमल सुकुँवार सार ये महँदी लगत सुहाई।।२६।।
दसन दाड़िमी कुसुम रंग की सारी प्यारी पहिरें।
लगी किनारी झूम झुमारी उठत छविनु की लहरे।।२७।।
जग-मगात है लहँगा जरकसि अरप्यौ सखी सुदेवी।
अति छबि कहत बनै ना बैना नैना प्रीतम सेवी।।२८।।
नख-सिख सोभा सिंधु लड़ैती बनक बनी सु बनी है।
हित अलि रूप निरखि ललचाने मोहन श्याम धनी है।।२९।।
रतन जटित चौकी पर इहि विधि कुंज विहारिन राजैं।
शोभा कहत न आवत बैनन कोटि काम रति लाजैं।।३०।।

हित एक सहचरि प्रीतम की तानें जाइ सुनाई।
अति उतकंठित लाल विहारी छिन-छिन लेत बलाई।।३१।।
क्यौं हूँ मैं अवलोकौं यह छबि सफल करौं दृग जाई।
जो छिन जात सुफेर न आवत तातें चित अकुलाई।।३२।।
सहचरि भेष धरौ जो प्रीतम तौ निज रूप निहारौ।
और उपाय नहीं जिय आवत आपुन बुद्धि विचारौ।।३३।।
चाह जानि तब लालन मन की ललिता लई बुलाई।
पहलौ जो शृंगार प्रिया कौ सो सबही लै आई।।३४।।
मन भावन अति चावन पहिर्‌यौ शोभा कही न जाई।
नख सिख भूषण भूषित अंग-अंग उपमा गई लजाई।।३५।।
ललित छैल गति ललित त्रिभंगी चलत चाल अलबेली।
सहचरि संग आई जहँ प्यारी अद्‌भुत रूप सहेली।।३६।।
सरस सुगंध मालती माला लाला अलि ने अरपी।
ललिता पाइन डारि विनय करि निज सहचरि कर थरपी।।३७।।
अति सोहन मन मोहन की उनहार लखी मन मानी।
निज कर सौं करि गहि बैठारी निकट प्राण सम जानी।।३८।।
गरबहियाँ दै रूप निहार्‌यौ विवि कर दर्पन लीने।
मुसकन नैन बैन अबलोकन अदल बदल मन कीने।।३९।।
तब रिझवार रीझि श्रीहित अलि दम्पति लाड़ लड़ायौ।
रूप मंजरी कनक थार सजि व्यंजन विविध पवायौ।।४०।।
बीरी दई विसाखा रुचि सौं ललिता सौंधौ डार्‌यौ।
महक्यौ सौरभ कुंजन-कुंजन अलिगन सर्वस वार्‌यौ।।४१।।
चंपक लता चतुर करजोरे विनती करी पधारौ।
अहो लाड़िले अलक लड़ीले साँझी सुख विस्तारौ।।४२।।
रूप-नेह-छवि छके छबीले अंस भुजा विवि दीने।
चलत चाल गजगति अलबेली विवि कर कमलन लीने।।४३।।
लटकि-लटकि मुसिकात जात बतरात कछू मन खोलै।
चितवन रूप-सनेह-प्रेम की चितै-चितै चित तोलैं।।४४।।
पहुँचे फूलन सों फूलन की कुंज लली गुन गावैं।
निरखत पुष्प विविधि बहु रंग के दंपति प्रेम बढ़ावैं।।४५।।

रंग-रँग की डरियाँ बहु भरियाँ फूलन-फूलन अलियाँ।
नवल सखी प्यारी संग तोरत फूलन मानी रलियाँ।।४६।।
जुही मालती जाती मल्ली कुंद कदंब निहारैं।
गेंदुक नवलासी कर कंजन खेलत प्राणन वारैं।।४७।।
मृगनैंनी गजगैनी बाला लाला अलि मन जीती।
धनि-धनि भाग सुहाग आज यह धन्य प्रीति रस रीती।।४८।।
प्रिय गुन गावत कमल फिरावत अलि दंपति लै आई।
पत्र-पत्र प्रति लतन-लतन में रूप घटा छबि छाई।।४९।।
साज समाजन सहित युगल वर पहुँचे निभृत निकुंजा।
निज कर कंज भीत कंचन की लीपी मृग मद पुंजा।।५०।।
चंदन अतर अरगजा चोबा सरस सुगंध मिलायौ।
कामधेनु के गोबर सौं रचि साँझी चित्र बनायौ।।५१।।
चीतत फूलन सौं फूलन सौं अलिगन सुवटा गावैं।
उमग्यौ हिय अनुराग रंग-रस प्रीति रीति दरसावैं।।५२।।
छके छबीले रूप रसासव विवि मुख चन्द्र चकोरी।
सहचरिगण उडगण चहुँदिशि तै चितै-चितै चित चोरी।।५३।।
धूप दीप करि अर्घ भोग धरि अंचर वारत माई।
करत आरती तन सिंगारती रूप घटा छवि छाई।।५४।।
भरि-भरि ओलिन सुमनन वारत करि प्रणाम सिर नायौ।
विनती करी दुहुँ कर जोरें मन अभिलाष पुरायौ।।५५।।
लाल लड़ैती इहि विधि साँझी थरपी संध्या देवी।
रस-संकेत होत हित चित कौ दंपति सुख की सेवी।।५६।।
नवल सखी अरु कुँवरि लाड़िली करि ब्यारू सुख लीनौ।
जूठन थार नवल सखी बागौ हित अली रूपहिं दीनौ।।५७।।
बीरी माल लाल सब कौं दई विदा भई अलि सबहीं।
शरद निसा सुख विलसैं दंपति तलप बिराजे जबहीं।।५८।।
निभृत निकुंज सहचरि वंशी जू ततसुख सेवा कीनी।
उद्दीपन संपत्ति सकल सुख अरपी सेज नवीनी।।५९।।
हित अरु सुरत सनेह चाह सुख सहचरि श्रीहित संगा।
रूप मंजरी चरण पलोटत नव-नव प्रेम अभंगा।।६०।।

जो यह साँझी फूलन पूजै फूल सहित फल पावै।
नित्य विहार उपासन आस न और कहूँ ठहरावै।।६१।।
विष्णी-ब्रजदासी विवि मिलि कें बिनती अतिसय कीनी।
साँझी नित्य विहार प्रकासी श्रीहित रूप प्रवीनी।।६२।।
जो इहि विधि या साँझी ध्यावै गावै वाँछित पावैं।
जै श्री रूपलाल हित कुंज बिहारी-बिहारिन जू अपनावैं।।६३।।[३०]

चाचा श्रीहित वृन्दावन दासजी कृत साँझी के पद

राग गौरी

ए रितु शरद सुहाई, अरु साँझी शुभ वार।
ए सबकैं मन-भाई, सुनि मेरी प्रानअधार।।टेक।।
एहाँ सुनि मेरी प्रानअधार, बन्यौं संजोग भलौ री।
पुहुप-वाटिका चलौ, राग मिलि गावति गौरी।।
साँझी फूलनि-चीतिये हो, बाबा जू कैं द्वार।
नैंननि यह सुख देखिये हो, आजु बड़ौ त्यौहार।।१।।
एहाँ डारौ सकल सुगंध, कुमकुमा-चंदन गारौ।
तासौं लीपौ भीति, प्रथम चलि ठौरु विचारौ।।
मन वांछित फल पाइयैं हो, जो कीजै इहि सेव।
सुनौं कुँवरि वृषभानु की, यह साँझी साँचौ देव।।२।।
एहाँ चलि मेरी प्रानअधार, अबै कछु गहरु न करियैं।
लाइ फूल रँग-रंग, सबेरी साँझी धरियैं।।
निकसीं मिलि ब्रजसुन्दरी हो, गहवर वन की ओर।
लावनि छोरि मोरि कटि उरसैं, कीनी सबहिनि झोर।।३।।
एहाँ आसपास ललितादि, मध्य वृषभानु-दुलारी।
सखी-अंश दियैं बाहु, चलनि पर गज-गति वारी।।
अतरौटा अति फबि रह्यौ हो, तनसुख सारी सेत।
पवन परसि अंचन उड़्यौ, लखि मनमथ भयौ है अचेत।।४।।
एहाँ रति-रम्भा अरु सची, रमा कैसैं सम पावैं।
नख-मनि-जोति-प्रकास, शशिनु के निकर लजावैं।।

३०. गो० रूपलालजी कृत साँझी - रसभारती संस्थान, वृन्दावन।

रूप-उजागर नागरी हो, सकल त्रियनि-सिरताज।
सखिनु-वृन्द मधि राजहीं, मनु उड़गन मधि उड़राज।।५।।
एहाँ आगैं बैठे लाल, बाल कौ वेष बनायैं।
धाइ चढ़े गिरि सिखर, टेरत पुनि भुजा उचायैं।।
आगैं आवौ भामिनी हो, वचन सुनौं चित लाइ।
बिछुरि गई मो संग की, मोहि लीजै साथ लगाइ।।६।।
एहाँ हरषि भानु की कुँवरि, आपुने निकट बुलाई।
पूछति करुना सहित, कौंन तुम कहाँ तें आई।।
वह देखौ गिरि-सिखर पै हो, सुबस बसत नँदग्राम।
भूलि परी हौं जिय डरी हो, कहौ तौ चलौं तुम धाम।।७।।
एहाँ बहुत करी मनुहारि, आपुनी साथिनि कीनी।
नातौ जिय में मानि, प्यार करि भुज गहि लीनी।।
नाम कहौ वर भामिनी हो, रहौ हमारैं पास।
प्रात होत घर पठैहैं हो, जिनि जिय होहु उदास।।८।।
एहाँ स्याम सहेली नाम, वाम! सुनि सब कोऊ जानैं।
औरौ नाम अनेक, प्रगट सब यही वखानैं।।
बीरी बदली परस्पर हो, गईं सघन वन-कूल।
निरवारति चलीं द्रुम-लता, हो तोरनि लागीं फूल।।९।।
एहाँ कोउ ऐंड़ी उचकाइ, गहति ऊँची सी डरियाँ।
कोउ इक काँधैं चढ़ीं, गोद फूलनि सौं भरियाँ।।
कोउ बेलिनु गहि झूलहीं हो, कोउ विटपनि चढ़ीं धाइ।
वन घन अति शोभा बढ़ी, हो वरनत वरनी न जाइ।।१०।।
एहाँ स्याम सहेली सुघर, कुसुम-कंचुकी बनाई।
अधिक हेत सौं लाइ, कुँवरि राधे पहिराई।।
एकनि रचि माला गुही हो, पचरँग फूल मिलाइ।
एकनि गूँथी किंकिनी, हो बेलि चमेली लाइ।।११।।
एहाँ फूलनि-कवरी गुही, फूल कर छटी सुहाई।
काहू सुघर तरौंना, फूलनि रचे बनाई।।
नख-सिख भूषन फूल के हो, फूलनि-गैंदुक हाथ।
साँझी बिरियाँ जानिकैं, हो सबहि भईं इक साथ।।१२।।

एहाँ एकनि कैं कर कमल, अमल फेरति वर बाला।
खेलति घर कौं चलीं, गीत गावति जु रसाला।।
प्राननाथ दुलरावहीं हो, प्रान-पियारी भाम।
हौं बलि तिहिं औसर सखी, जब आईं बाबा जू कैं धाम।।१३।।
एहाँ दिपति फटिक मणि भीति, बड़े रावर की पौरी।
सींची नीर गुलाब, अरगजा-लीपि किशोरी।।
दुहुँ साथिनि साँझी धरी हो, भाँति-भाँति चित लाइ।
देखति भूली सारदा, हो सुरपति हेरि हिराइ।।१४।।
एहाँ चहुँ दिसि तारे धरे, मध्य में चन्दा सोहै।
विधि मन संसै भयौ, दुहूँ दिसि पुनि-पुनि जोहै।।
वच्छ-हरन जब सुधि कियौ तब, मिट्यौ हियैं कौ सूल।
देव-दुंदुभी बाजहीं, हो बरसनि लागे फूल।।१५।।
एहाँ मूरति जुगल बनाइ, जटित किये माणिक-मोती।
पट-भूषन पहिराये, लगि रही जगमग जोती।।
बहु मेवा-पकवान धरि हो, हित सौं भोग लगाइ।
कुँवरि सँजोयौ आरतौ तब, सब मिलि लागीं पाँइ।।१६।।
एहाँ माय-सहित पुर-वधू, सबै मिलि कौतिक आईं।
साँझी-रचना देखि, कुँवरि की लेति बलाईं।।
हरषि भानु की घरनि तब हो, नेगी लये बुलाइ।
डला भरे पकवान के हो, दिये नँदगाँव-पठाइ।।१७।।
एहाँ संध्यादेवी पूजि, भाँमिनिनु यह वरु माँग्यौ।
सुनत सुधा-सम वचन, सबनि कौ हिय अनुराग्यौ।।
कुशल गोप-कुल की सदा हो, रहौ सुख-सम्पति ग्रेह।
श्रीराधा-मोहन-जोरी अविचल, नित बाढ़ौ नव नेह।।१८।।
एहाँ बाबा जू कैं भवन, गईं जब गोप-कुमारी।
कीरति दियौ पकवान, सबनि कौं भरि-भरि थारी।।
पहिराईं रँग चूनरी हो, साँझी बढ़ती वार।
सखिनु सहित भोजन कियौ, हो आनँद-निधि सुकुमारि।।१९।।
एहाँ पौढनि हित अभिराम, धाम गिरि ऊपर राजै।
तहाँ सुन्दरि कियौ गवन, संग निजु सखी-समाजै।।

ललिता मोंहन जानिकैं हो, पौरी हटके जाइ।
सैंननि पद-वंदन कियौ हो, रसिक कुँवरवर राइ।।२०।।
एहाँ पलट्यौ जबहिं सिंगार, तबहि जाने नँदलाला।
सकुचि दियौ पट ओट, निरखि मुसिकानी बाला।।
सुख-संगम-आनँद बढ्यौ हो, रहे अंश-भुज-मेलि।
श्रीहरिवंश प्रताप तें हो, वरनी यह रस-केलि।।२१।।
एहाँ परम हितू हित रूप, सहचरी रंध्रनि-लागीं।
जीवनि जुगल-बिहार, कौंन तिन सम बड़भागी।।
वृन्दावन हित हिय बसौ हो, गौर-श्याम अभिराम।
ब्रजमण्डल सूबस बसौ हो, वरसानौं-नँदगाम।।२२।।[३१]

⊛

राग गौरी

मिलि गोप-कुमारी खेलहीं, साँझी स्यामा कैं संग हो।
मन लीयैं हित चित दियैं, सखी अति प्रवीन सब अंग हो।।१।।
तोरनि निकसीं फूल फूल सौं, करि-करि सरस सिंगारि हो।
त्रियनि-तिलक तिन मध्य किशोरी, शोभा-निधि सुकुमारि हो।।२।।
तनसुख-सारी घूमघूमारी, कंचुकि सबनि बनी री हो।
अतरौटा अति रंग रह्यौ लसि, छबि नहिं जाति भनी री हो।।३।।
भूषन हू भूषित भये अँग-अँग, कहाँ लगि छबिहि वखानौं हो।
जोवन-नृप-छबि-छटा मदन कौं, देत चुनौंती मानौं हो।।४।।
गनि-गनि बितये द्यौस लाल जब, दिन साँझी कौ आयौ हो।
ललितै-भेद जनाय पलटि, सहचरि-सिंगार बनायौ हो।।५।।
जानत हित की रीति सखी, रचि माला लाल बनाई हो।
अधिक सनेह जनाय कुँवरि सौं, ललिता जाय मिलाई हो।।६।।
देखत ही हित बढ्यौ परस्पर, मन भयौ आनँद भारी हो।
फूली-फूली फूलनि-तोरति गहि-गहि ऊँची डारी हो।।७।।
लाड़ भरी बतरानि दुहुँनि की, कर वर बेलि निवारैं हो।
मृदु मन भोरी कुँवरि किशोरी, पुनि-पुनि वदन-निहारैं हो।।८।।
गिरि की खोरि सघन वन वीथिनु, कुसुम-वृन्द विगसाने हो।
जाति अनेक कहाँ लगि वरनौं, ग्रन्थनि प्रगट वखाने हो।।९।।

---

३१. वर्षोत्सव पद संग्रह – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

प्रफुलित भये सबै तिहिं औसर, तोरति ब्रज की बाला हो।
फूलनि सौं गुहि बैंनी-चोली, फूलनि की रचि माला हो।।१०।।
नृपति करी वृषभानु-नन्दिनी, मंत्री सहचरि स्याम हो।
लै-लै आईं भेंट फूल-फल, सब मिलि करत प्रनाम हो।।११।।
फूल सुगन्ध केवरा कौ रचि, ललिता चँवर बनाय हो।
रायबेलि कौ छत्र छबीलौ, धर्‍यौ कुँवरि सिर आय हो।।१२।।
फूल-दलनि कौ रच्यौ सिंहासन, आनि तहाँ बैठायौ हो।
एक छरी लियैं आगैं ठाढ़ी, एकनि चँवर ढुरायौ हो।।१३।।
एकनि भौंह चढ़ाइ निहारति, एकनि निकट बुलाय हो।
एकनि रीझि दई उर-माला, एकनि तन मुसिकाय हो।।१४।।
वरन-वरन फूलनि कौ गहनौं, पहिरि कुँवरि मेरी राधा हो।
श्यामसखी कैं कर पर कर धरि, चली छबि-सिन्धु अगाधा हो।।१५।।
भरि-भरि झोरी फूल किशोरी, सबै भईं इक ठौरी हो।
मन-भावनि दुलरावति गावति, राग महा रस गौरी हो।।१६।।
श्रीवृषभान-भवन की पौरी, साँझी चित्र बनाये हो।
फूलनि-चीति हरषि अति मन में, पट-भूषन पहिराये हो।।१७।।
चन्दा सहित धरे तारागन, नग बहु भाँति लगाये हो।
सुनि-सुनि उमहि सकल पुर वासी, साँझी कौतिक आये हो।।१८।।
बड़भागिनि कीरति महारानी, बहु पकवान पठायौ हो।
भाजन पूरि धरे श्यामा जू, हित करि भोग लगायौ हो।।१९।।
कंचन-थार सँजोइ आरतौ, करति आपु कर प्यारी हो।
करि प्रनाम वृषभान-भवन सब, आईं गोप-कुमारी हो।।२०।।
एकनि कैं कर चूँबति रानी, एक अंक भरि लेति हो।
एकनि वदन-अँगोछति हित सौं, एकनि आदरु देति हो।।२१।।
अति मन मुदित भान जू की घरनी, हियैं प्रेम-रस-भीनी हो।
पट-भूषन पहिराये बालनि, व्यारू सब मिलि कीनी हो।।२२।।
पाटम्बर-पकवान महरि-घर, अति हित मानि पठायौ हो।
आगैं ह्वै लीनौं नँदरानी, मान्यौं हरषि बधायौ हो।।२३।।
पौढनि हित अभिराम धाम की, वरनौं कहा निकाई हो।
श्रमित जानि दै संग सखी, कीरति तहाँ कुँवरि पठाई हो।।२४।।

रस भरे बैंना चंचल नैंना, समुझि प्रिया मुसिकाई हो।
निरखि-निरखि निहचै जिय जानी, प्रीतम की चतुराई हो।।२५।।
विलसत रजनी प्रमुदित सजनी, हरि-राधा रस-रासि हो।
श्रीहरिवंश-कृपा तें वरन्यौ, कौतिक प्रेम-विलास हो।।२६।।
नित नव केलि प्रानबल्लभ-सँग, मोपै कहत न आवै हो।
जाकौ अन्त न लहै सारदा, शेषहु पार न पावै हो।।२७।।
जुगलकिशोर-चरित चरनांबुज, शिव-सनकादिक ध्यावैं हो।
वृन्दावन हित रूप सहेली, नित प्रति यौं दुलरावैं हो।।२८।।[३२]

राग गौरी

शरद रितु आगम गोप-किशोरी, हरषीं अति मन माँहिं हो।
बनिठनि गृह-गृह तें जुरि आईं, भानु-भवन कौं जाँहिं हो।।१।।
सब मिलि राधे जू सौं बोलीं, वचन सुधा-समतूल हो।
साँझी खेलनि के दिन आये, चलि बलि ल्यावैं फूल हो।।२।।
ललिता रुचि-सिंगार बनायौ, नख-शिख अति छबि देत हो।
आज्ञा दई कुँवरि तब ऐसैं, चलिये वट संकेत हो।।३।।
सब मिलि निकसीं गोप-कुमारी, मध्य रँगीली बाल हो।
शोभित सखी चहूँ दिसि ऐसैं, मनहुँ रूप की माल हो।।४।।
सुहृदअली-अंशनि-भुज दीयैं, धरति चरन लड़काइ हो।
मनौं नव कंचन-बेलिनु महियाँ, चन्द रह्यौ अरुझाइ हो।।५।।
गुंजत मधुप महा मद माते, पवन परसि आये धाय हो।
प्रेम-परायन सहचरि आगैं, तिनहिं निवारति जाय हो।।६।।
अँग-अँग सुंदरता की सीवाँ, वरनत कवि न अघाँहिं हो।
उपमा और त्रिया त्रिभुवन की, पग हूँ परत लजाँहिं हो।।७।।
सुख देखनि हित प्रानपियारे, आये पलटि सिंगार हो।
ललिता कह्यौ नई यह सहचरि, रीझि दियौ उर-हार हो।।८।।
प्रथम हुते सबही विधि मोंहन, पुनि धर्‍यौ मोंहिनी वेष हो।
थकित भये खग-मृग वन जेते, छबि कहत बनैं नहिं लेस हो।।९।।
वदन निहारि चकित भईं स्यामा, पुनि लई निकट बुलाय हो।
सब गुन-कुशल रूप की आगरि, नित खेलौ हम सँग आय हो।।१०।।

३२. वर्षोत्सव पद संग्रह – रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

तब उठिछ बोली स्यामसहेली, मो जिय हूँ यह आस हो।
जो तुम्हरैं मन ऐसी आई, तौ छिन तजौं न पास हो।।११।।
बहुत दिननि की यह अभिलाषा, तुम दरसन कैं काज हो।
सो भई भेंट अचानक वन में, सफल भये दृग आज हो।।१२।।
पुनि मुख बीरी देत परस्पर, हँसत लसत बतराति हो।
प्रेम-चरित्र निहारि सखीजन, मन में अधिक सिहाति हो।।१३।।
नवल किशोरी नव सहचरि की, बनी जोट अनकूल हो।
दोउ मिलि सघन लता निवारति, तोरति कर वर फूल हो।।१४।।
डार-गहन-मिस-गहि उचकावत, ऊँचे फूल बताइ हो।
मन कैं गूढ मनोरथ पुरवत, प्रगट न सकत जनाइ हो।।१५।।
गहने भाँति-भाँति के गूँथे, आनि फूल रँग-रंग हो।
श्यामसहेली अरु स्यामा के, पहिराये अँग-अंग हो।।१६।।
सब तन बने कुसुम-आभूषन, चलीं भवन मिलि खेलि हो।
शोभित भईं परस्पर बाला, मनु फूली हैं कंचन-बेलि हो।।१७।।
गोपनि कैं कुल कौं दुलरावति, तात-भ्रात लै नाम हो।
श्रीवृषभानु-भवन की पौरी, साँझी चीतति भाम हो।।१८।।
तिहिं छिन मेवा बहुत मँगायौ, अरु अगनित पकवान हो।
हित सौं हित कैं भोग लगायौ, आड़ौ अंबर तान हो।।१९।।
नेह आरतौ सरस सँजोयौ, प्रेम देव आराधि हो।
तब सब मिलति परस्पर बाला, पूजी मन की साधि हो।।२०।।
सो पकवान भान जू की रानी, डाली-हँड़ा भराइ हो।
श्रीब्रजराज-घरनि-घर-पठयौ, नेगिन सीस धराइ हो।।२१।।
अरु परिवार बड़े सब बाँट्यौ, मानि बड़ौ त्यौहार हो।
साँझी खेलि कुँवरि घर आई, कीरति-प्रान-अधार हो।।२२।।
लै कर अंचल वदन अँगोछ्यौ, मैया लेति बलाइ हो।
आदर दै सबकौं बैठायौ, पुनि भोजन करवाइ हो।।२३।।
कीरति सखी बहुत सँग देखी, ललिता लई बुलाइ हो।
सदन सुदेश शिखर गिरिवर की, दियौ पौढनि हेत बताइ हो।।२४।।
जहाँ द्रुम पारिजात के फूले, बोलत मोर-मराल हो।
हेमलता नवपल्लव मौरी, लपटीं ललित तमाल हो।।२५।।

इन्द्रनीलमणि कंचन-जरियाँ, बिच-बिच लागे लाल हो।
चन्द्रकांति मणि फटिक जगमगैं, संभ्रम भूलीं बाल हो।।२६।।
तिहिं ठाँ ललित लड़ैती जू आईं, कछुक सखी लै साथ हो।
लक्षन देखि प्रिया पहिचाने, अपनैं प्राननिनाथ हो।।२७।।
अति रस विवस दोऊ पिय-प्यारी, बढ़्यौ सुख-सिन्धु अनूप हो।
ओट भईं रन्ध्रनि अवलोकति, सहचरि सब हित रूप हो।।२८।।
श्रीहरिवंश-कृपा-बल वरन्यौं, परम प्रेम कौ खेल हो।
वृन्दावन हित नित यह बाढ़ौ, रसिकन-हिय-रस-बेलि हो।।२९।।[३३]

❁

राग गौरी

सब ब्रज की शोभा लाड़िली, श्रीराधा जाकौ नाम हो।
नित आनन्द नयौ बढ़ै, श्रीरावलपति कैं धाम हो।।१।।
साँझी चीतनि कैं मते, वन-निकसीं भरि अनुराग हो।
गोप-सुता हुलसीं सबै, देखति वन-कौतुक बाग हो।।२।।
नख-सिख-नवसत साजिकैं, जननी पै आज्ञा लेत हो।
घर-घर विपुल बधावनौं, सुख-द्रवति कुँवरि कैं हेत हो।।३।।
कीरति पौरी आइकैं, ललिता सौं कही समुझाइ हो।
हौं बलि वेगहि आइहौ, वन ल्यावौ फूल-बिनाइ हो।।४।।
वृन्दनि-वृन्दनि सहचरी, बनि आईं श्रीराधा-लार हो।
रानी-दृग शीतल भये, मन बाढ्यौ मोद अपार हो।।५।।
ओलिनु भरि मेवा दई, कीरति कहैं वचन-पियूष हो।
सब मिलि भोजन कीजियौं, वन फिरति लगै जब भूख हो।।६।।
उमड्यौ छबि-वारिधि मनौं, जब सब गवनी मिलि संग हो।
सहज निकाई छबि-छटा, जहाँ मुरझत निकर अनंग हो।।७।।
गिरि गोवर्धन तरहटी, जल-झरना रोचक नाद हो।
शुक-पिक-मोर-मराल बहु, कोलाहल सुर सुख-स्वाद हो।।८।।
वन-उपवन फूल जहाँ बने, श्रीराधा-आगम जानि हो।
तहाँ बिहरत नव लाड़िली, रचे खेल विविध रुचि मानि हो।।९।।
फूल मुकट रचि काछिनी, ललिता अति गुन-गन-ग्राम हो।
प्यारी-तन सिंगारिकैं, करैं लीला सुन्दर श्याम हो।।१०।।

३३. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

चरन चरन पर राखिकैं, नागरि कटि-ग्रीवाँ मोरि हो।
भुज-तर चाँपैं लकुटि कौं, मृदु वचन कहति दृग-ढोरि हो।।११।।
धरी अधर मृदु बाँसुरी, पुनि सप्त सुरनि आलाप हो।
शिव-समाधि विथकित भये, विधि कौ भूल्यौ सुनि जाप हो।।१२।।
सखी! सुघर संगीत गति, पुनि उघरत करुना भाइ हो।
निर्त्तति कीरति-नन्दिनी, नँदनँदन-भेष बनाइ हो।।१३।।
पुनि कोऊ मानिनि भईं, तिनकौं बंदत ह्वै दीन हो।
हँसैं लसैं कौतिक करैं, सखि अति ही गुननि-प्रवीन हो।।१४।।
आगैं भानु-सुता छली, गिरि-घाटी रोकी आनि हो।
भरीं खेल आनन्द अति, दानी ह्वै माँगति दान हो।।१५।।
ये कौतिक सब नन्द-सुत हो, देखि छके अति रूप हो।
छल-कोविद तन साँवरे, कियौ सहचरि-वेष अनूप हो।।१६।।
मिलन-चौंप हिय अरवरत हो, ताकत विविध उपाइ हो।
ललितै लखि एकांत में, सब दीनौं मरम जनाइ हो।।१७।।
तब ललिता तिहिं संग लै, प्यारी सौं बोली आइ हो।
यह कन्या काहू गोप की, गिरि-पूजत नित चित लाइ हो।।१८।।
अब साँझी पूजनि कहति, जैसी तुम्हरी रसरीति हो।
देहु अधर-खंडि बीरी भटू, याकैं तुमसौं अति प्रीति हो।।१९।।
पुनि-पुनि वदन निहारिकैं, प्यारी कहति रस-भरी बात हो।
धनि विधना जिन तू रची, सखी! नख-सिख कमनी गात हो।।२०।।
ललकि मिले दृग दृगनि सौं, मन सौं मन अरुझाइ हो।
दुहुँ हिय वारिध नेह कौ, कछु बाढ़्यौ सहज सुभाइ हो।।२१।।
झमकि चीं कुंजनि स्घन, अति प्रमुदित बीनति फूल हो।
निकसति वीथिनु साँकरी, कछु खिसि-खिसि परत दुकूल हो।।२२।।
कुसुमित लतनि नवावहीं, जे सुघर सहेली श्याम हो।
चुनति कली नव लाड़िली, दुति मृदु करजनि अभिराम हो।।२३।।
सौरभ लै धाये मधुप, प्यारी जू मानति शंक हो।
दृग-तन चंचल छबि बढ़ी, लागीं श्यामसखी कैं अंक हो।।२४।।
हियैं पुलकि रोमांचि तन, सकुचि चुरावत पीय हो।
कहत प्रिया सौं पहिल ही वह, हौं डरपी अति जीय हो।।२५।।

पुनि सबही चहुँ ओर कौं, फैलीं शोभित वनराय हो।
गोदैं फूलनि सौं भरी, गहने बहु रचति बनाय हो।।२६।।
कोउ सरवर-जल-पैठिकैं, लाईं कमल-कुसुम बहु रंग हो।
बासर थोरौ जानिकैं, जुरि आईं सब इक संग हो।।२७।।
पहिरैं भूषन फूल तन, अरु तामें फूली साँझ हो।
रूप-जलद मनु ऊनयौ, आवैं राधजू सखियनि माँझ हो।।२८।।
लटकि-लटकि दोऊ सखी, घर चलीं मन्द गति गैंन हो।
रूप-गर्व मद छाँड़िकैं, पद-लोटत रति जुत मैंन हो।।२९।।
प्रथम पौरि महाभानु की, आईं जब कुँवरि किशोरि हो।
चम्पा रानी आरतौ तब, कियौ लली कौ दौरि हो।।३०।।
निकसत जिहिं-जिहिं गोप कैं, द्वारैं ह्वै अतिलड़ि आइ हो।
महा प्रेम भरि आरतौ, सब गोपी करति बनाइ हो।।३१।।
महाराज वृषभानु कैं, सुन्दरि जब आईं ग्रेह हो।
नग न्यौछावर माय नें, किये पूरित परम सनेह हो।।३२।।
श्यामसखी श्यामा लली, सौरभ जुत लीपी भीति हो।
शशि-मंडल तारा-सहित, दोऊ मिलि साँझी चीति हो।।३३।।
अगर धूप बहु दीप धारि, पूजा कौ रचत विधान हो।
पाक विविधि मेवा-सिता, धर्‍यौ भोग परम हित मानि हो।।३४।।
आरति वारति प्रेम सौं, सब गावति मंगल गीति हो।
बन्दि परम आनन्द कैं, जाँचैं अमित परस्पर प्रीति हो।।३५।।
देखि कुँवरि के प्रेम कौं, जननी-मन अति सुख पाइ हो।
लेत वारनैं मुदित ह्वै, अपने कर दुहुँनि जिमाइ हो।।३६।।
उघरि परी पिय-चातुरी, रमैं तलप सुघर सर हंस हो।
ललित केलि वरनी यथा, मति दीनी श्रीहरिवंश हो।।३७।।
नवल कुँवरवर सुख-गहर में, पैरत रति-रस-सूर हो।
वृन्दावन हित रूप बलि, दोउ कोक-कलानि-गरूर हो।।३८।।[३४]

⊛

३४. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

राग गौरी

वृषभानलली खेलनि चली, साँझी मन विपुल उमाह हो।
आगम लखि रितु सरद कौ, वन देखनि फूलनि चाह हो।।१।।
नवसत साजैं सहज ही, छबि उपमा कहत बनैं न हो।
चरन-अग्र शोभा सखी, लखि मुरझत कोटिक मैंन हो।।२।।
वल्लव-कुल सुंदरि जिती, हो अगनित जाकैं लार हो।
रूप-गहर गुन-आगरी, तन कियैं सुभग सिंगार हो।।३।।
श्याम सखी कौ रूप धरि, ललिता सौं भेद जनाइ हो।
बड़े गोप की नन्दिनी कहि मिली कुँवरि सौं आइ हो।।४।।
प्रीति गहगही देखिकैं, गुन लक्षन रूप अपार हो।
नेह ललक सौं भेंटिकैं, पुनि बहुत करी मनुहार हो।।५।।
जूथनि मिलि गावति चलीं, नाद-स्वाद भरीं रंग हो।
श्यामसखी राधा लली, मधि नाइक दोऊ संग हो।।६।।
श्रीदामहिं दुलरावहीं, बेटी कुल मंडन भूप हो।
जब निकसीं गिरि तरहटी, उनयौ मनु वारिद रूप हो।।७।।
कुंजनि में दमकैं दुरैं, सब मगन खेल आनन्द हो।
लतनि ओट ऐसैं लसैं, घन अगनित राका-चन्द हो।।८।।
फूलनि तोरति फूल सौं, गहवर वन करति विनोद हो।
उपरैनी कटि सौं कसैं, सब शोभित कियैं प्रमोद हो।।९।।
कोउ काँधैं चढि तोरहीं, कोउ एड़ी उचकाइ हो।
कोउ लतनि गहिकैं खरीं, कोउ चढति विटप पर धाइ हो।।१०।।
कोउ झूलति जोवन छकीं, कोउ फूलति गेंद रचाहिं हो।
वन कौतिक कहत न बनैं, लोचन कैं रसना नाहिं हो।।११।।
पारिजात तरु आदि दै, सब बेलिनु तें लै फूल हो।
विविध भाँति खेलनि रचैं, सखि गौर-श्याम-अनुकूल हो।।१२।।
कुसुमनि के भूषन रचे, सचे सबनि अँग-अंग हो।
गेंद-छटीनु खेलति चलीं, साँझी विरियाँ लखि संग हो।।१३।।
ठाढ़ी ऊँची पौरि पै, रानी कीरति हेरति बाट हो।
छबि-सागर लहरैं बढ़ीं, मनु आवति दिपति लिलाट हो।।१४।।
अंचल वदन अँगोछिकैं, जननी पीवति जल वारि हो।
मलयज-केशरि गारिकैं, साँझी कौ थान सँवारि हो।।१५।।

गोप नृपति वृषभानु की, हो कौतूहल अति पौरि हो।
साँझी चीतति लाड़िली, सब देखनि आईं दौरि हो।।१६।।
शुक-पिक-मोर-मराल की, हो पंकति रची है नवीन हो।
पुनि शशि जुत उड़गन धरैं, सखी गौर-स्याम परवीन हो।।१७।।
संध्या देवी देवतन हो, रचे अलौकिक रीति हो।
ताहि निरखि बाढी हियैं, सखी दुहुँनि घनेरी प्रीति हो।।१८।।
मुसिकति ठाढी जोरि कर, हरै सजल कोटि घन ओप हो।
इत निदरति दामिनि-निकर, दोउ सुकृत-पुंज कुल गोप हो।।१९।।
जे मूरति साँझी रचीं, गौर-स्याम जुग पानि हो।
तिन कौतिक विथकित भये, सखी छाये अमर-विमान हो।।२०।।
फूलनि चीती विविध विधि, नग पंकति रची है सुदेश हो।
दुतिधर-जोति सबै दबैं, मन शंकित भयौ है राकेश हो।।२१।।
प्रेम-विरंचि रची जहाँ, ब्रजमंडल सृष्टि अभूत हो।
ताहि निरखि विस्मय निपट, जड़ होतु कमल कौ पूत हो।।२२।।
साँझी विपुल प्रकाश लखि, सुर-मुनि भये कौतिकहार हो।
कुसुम-वृष्टि करि घोष पै, बाजैं दुंदुभि जैजैकार हो।।२३।।
अगर धूप सौरभ विविध, अर्पति हित कौ पान हो।
कनक थार मेवा भरैं, भोग मधुर पकवान हो।।२४।।
आराधत हित देव कौं, सखी स्याम प्रेम उर पूर हो।
गौर तेज तन देहु मम, रति मति सनेह सुख भूर हो।।२५।।
मनहीं मन विनवत दोऊ, कछू न सुनियत बैंन हो।
गावति सखी बधावने, ललिता लखि फूलति नैंन हो।।२६।।
आरति वारति प्रेम सौं, करि नग न्यौछावरि देति हो।
भान-घरनि आनंद छकि, भूरि बलैयाँ लेति हो।।।२७।।
पहिराईं परिवार-पुर, गोप-सुता बहु भाँति हो।
गोदनि भरि मेवा दईं, रानी फूली अंग न माति हो।।२८।।
कीरति अपने हाथ सौं, भोजन दुहुँनि कराइ हो।
न्यारी जारी रतन-मणि, पौढीं चित्रसारी जाइ हो।।२९।।
चरित देखि चौंकी कुँवरि, प्रीतम हँसि रहे निहारि हो।
वृन्दावन हित रूप बलि, इहिं कौतिक मिथुन-बिहार हो।।३०।।[३५]

⊛

३५. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

राग गौरी

वृन्दावन रानी गाइये, रावलपति-कुल उद्दोत हो।
साँझी अवसर जानिकैं आनन्दित तन-मन होत हो।।१।।
गोप-सुता हुलसीं सबै, आईं रचि सुभग सिंगार हो।
बहु मूरति मनु अनुराग की, सिमटीं वृषभान-दुवार हो।।२।।
हँसि भेंटति नव लाड़िली, सब प्रथम बधाई देत हो।
साँझी पूजैं प्रीति सौं, चलिये वन फूलनि हेत हो।।३।।
प्यारी जननी पै गई, सादर आज्ञा लेत हो।
फूलनि हित सब सखी मिली, हम जैहैं वट संकेत हो।।४।।
कीरति कीरति अति हरषी हियैं, हो सुनत सुता के बैंन हो।
करज चटकि लै वारने, कह्यौ खेलौ बलि सुखदैंन हो।।५।।
नवसत ललिता नें सजे, मेरी कुँवरि लड़ैती अंग हो।
घर-घर मंगल घोष में, लै निकसी सखियनि संग हो।।६।।
दिन साँझी कौ जानि पिय, छिपि बैठे मारग-तीर हो।
दृगनि भूख त्यौं-त्यौं बढ़ति, ज्यौं-ज्यौं उमड़ी छबि-भीर हो।।७।।
मधि नाइक राधा लली, जब चली छकी आनन्द हो।
कोटि कला जुत उदित मनु भयौ, अवनी राका-चन्द हो।।८।।
कै यह विरची मेघ सौं हो, मंजुल दामिनि ओप हो।
मनु लै चलीं मनाइकैं, बहु तड़ित छिमावति कोप हो।।९।।
गेंद उछारति गगन तन हो, ओटि लेति कर धाइ हो।
तन तें रूप उमड़ि चलतु, जब अंचल खिसत सुभाइ हो।।१०।।
जगमगात झीने वसन, हो विलुलित बैंनी पीठि हो।
विवस लाल ह्वै जात हैं, जब परत अचानक दीठि हो।।११।।
किधौं कुहू तम की सुता, शशि पाछैं करति बिहार हो।
किधौं कनक छबि चौहटे, खेलै पन्नगराज-कुमारि हो।।१२।।
रस-मूरति आनँद-लता हो, रूप-अवधि गुन-रासि हो।
पिय-मन मंगल वर्द्धनी, मुख श्रवति सुधा मृदु हासि हो।।१३।।
सुवटा मल्हकि मल्हावही, हो गावति मीठे राग हो।
फूलनि तोरति फूल सौं, वन फिरति भरी अनुराग हो।।१४।।
इहिं शोभा विचलित भये, पिय परम रसिक मणिराइ हो।
मिलन चौंप चित में बढी, सहचरि तन वेष बनाइ हो।।१५।।

पुनि पाछैं टेरनि लगी, हो ऊँची भुजनि उठाइ।
हौं बेटी बड़े गोप की, पुनि दैहौं तुमहि बताइ हो।।१६।।
कीरति जू मोसौं कही, हो तू वन वेगहिं जाइ हो।
कुँवरि संग ह्वैकैं सखी लावौ बहु फूल बिनाइ हो।।१७।।
यह सुनि हरषी नागरी, लखि रूप गुननि समतूल हो।
चलीं लतनि निरवाहीं, दोउ हिलमिलि तोरति फूल हो।।१८।।
नव-नव कुंजनि शोभा-पुंजनि, बेलि सहेलि नवावैं हो।
ऊँचे फूल बताइ स्यामसखि, काँधैं कुँवरि चढावैं हो।।१९।।
सफल मनोरथ भये प्रेम-पथ, मरम न जानैं कोइ हो।
कहा कहौं शोभा उर सुख-गोभा, प्रमुदित मन-मन होइ।।२०।।
कोउ बेली कोउ द्रुम अलबेली, चढ़ीं परम छबि पावैं हो।
नव जोवन के जोर मरोरत, खेल विविध दरसावैं हो।।२१।।
अति मन मोदनि भरि-भरि गोदनि कुसम बहुत रँग बीने हो।
गहवर वन दुरि-दुरि खेलन में, कौतिक नाना कीने हो।।२२।।
बासर थोरौ जानिकैं, बोली सखि परम सुजान हो।
रानी कीरति मारग हेरहीं, अब कीजै वेगि पयान हो।।२३।।
फलनि सहित बहुत फूलनि लै, जुरि आईं सब वर बाल हो।
गेंद-छटी रचि कंचुकी, कुसुमनि गुहि पहिरी माल हो।।२४।।
अति कोविद नई सहचरी, श्यामा जू करी प्रसंश हो।
गौरी गावति घर चलीं, दै श्यामसखी भुज अंश हो।।२५।।
प्रथम पौरि पग धरत ही, रानी कीरति जू सुधि पाइ हो।
लीनी अरघ बढ़ाइकैं, पुनि करति आरतौ माइ हो।।२६।।
भीतर पौरी भवन की, स्यामा जू रचति विधान हो।
केसर-चंदन-अरगजा, लीपति साँझी कौ थान हो।।२७।।
गो-गोबरि सौं माँड़िकैं, साँझी चीतति बहु भाइ हो।
शशि मंडल तारे धरे, नग पंकति कुसुम बनाइ हो।।२८।।
चन्दा लखि चन्दा थक्यौ, उड़गन लखि भूले गौंन हो।
विधि भूल्यौ लखि चातुरी, रचना पटतर दैंउ कौंन हो।।२९।।
प्रेम देव मूरति लिखी, हो दुहुँ साथिनि मन लाइ हो।
मेवा बहु पकवान पुनि, सब हित सौं भोग लगाइ हो।।३०।।

आराधत हित-रीति सौं, हो सुघर सहेली स्याम हो।
अहो देव वरु दीजिये, झर फुरहि गौर तन नाम हो।।३१।।
दोऊ विनवति प्रेम सौं, हो कोऊ न पावत पार हो।
कुँवरि उतारति आरती, तब वन्दति बारंबार हो।।३२।।
कीरति लखि आनँद भरी, हो भूरि बलैयाँ लेति हो।
कौतिक भूलीं पुर-वधू, नग वारि लली पर देत हो।।३३।।
बाँट्यौ पुर परिवार में, हो बहु मेवा पकवान हो।
पुनि पठयौ ब्रजपति-घरनि, हो विशद बधावौ मान हो।।३४।।
कीरति पहिराईं सबै, हो गोप-सुता करि प्रीति हो।
करि भोजन भवननि चलीं, सब गावति मंगल गीत हो।।३५।।
श्यामसखी-राधाकुँवरि, मिलि गईं आपु सुख-धाम हो।
पलटत वसन प्रगट भई, जो करी चतुरई श्याम हो।।३६।।
कौतिक विशद बिहार सुख, हित रूप दृगनि रह्यौ छाइ हो।
सजनी रजनी प्रेम की, हित वृन्दावन बलि जाइ हो।।३७।।[३६]

श्री गुसाँईं किशोरीलालजू की भेंट कौ पद

सब सखियनि प्यारी राधिका, मिलि खेलति साँझी खेल हो।
प्यारी निकसी संग समाज लै, गहि पहुपवाटिका-गैल हो।।१।।
लाल सहचरि वेष बनाइकैं, ठाढे निपट साँकरी बाट हो।
प्यारी ललितै बूझति प्रथम ही, तुम जाति कहाँ की हाट हो।।२।।
तब हँसि बोली वृषभानुजा, तू को है कमनी गात हो।
आजु साँझी औसर प्रथम दिन, कछु समुझि न बूझत बात हो।।३।।
यह सुनि चौंकी आतुर भई, मोहि सीख देहु क्यौं जाँउ हो।
मेरैं साँझी पूजन नेम सौं, और दूर नंदीश्वर गाँउ हो।।४।।
प्यारी बहुत मान दैकैं कह्यौ, तू खेलि हमारैं साथ हो।
काहू बड़े गोप की नन्दिनी, यौं कहि गहि लीनौं हाथ हो।।५।।
तुँगविद्या पुनि बूझनि लगी, परकासौ अपनौं ठाम हो।
प्यारी ऊँचौ कर करि ग्राम दिशि, कह्यौ श्यामसुंदरी नाम हो।।६।।
मुख देखत दृग सीतल भये, बाढ़ी अधिक हियैं की लाग हो।
प्यारी फूलनि तोरति फूल सौं, वृषभान नृपति कैं बाग हो।।७।।

३६. चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

कुन्द निवारी-केतकी, चंबेली चम्पा जाइ हो।
प्यारी मधुर माधुरी मालती, सेवती मोतिया राइ हो।।८।।
प्यारी पारिजात पुनि केवरा, लियैं कुसुम गुलाबनि माल हो।
प्यारी सरवर पैठि कमल लये, पघुला गुहि पहिरी माल हो।।९।।
वन द्वै-द्वै ह्वै बीनति भईं, कुसुमनि गहि बेली भाम हो।
श्यामा सँग अलि मन भाँवती, वन मिली परम अभिराम हो।।१०।।
प्यारी वन उपवन सरवर जिते, लिये फूल बहुत रुचि मानि हो।
सखि गहने नाना विधि रचे, भईं पहिरि एक ठाँ आनि हो।।११।।
प्यारी दुरादुरी कौ खेल पुनि, खेलति गहवर वन माँहिं हो।
भई श्यामसुन्दरी कुँवरि दिशि, दोउ दुरनि एक सँग जाहिं हो।।१२।।
प्यारी बदि-बदि दाव सबै कहैं, देखैं को न दिखाई देह हो।
श्यामा सुख-धामा छिपि गईं, जहाँ सघन लता वर ग्रेह हो।।१३।।
तब आइ मिलीं बहु सहचरी, ढूँढ़ति रहीं हारि विचार हो।
प्यारी हारीं हम जीतीं जु तुम, अब भई चलनि घर वार हो।।१४।।
सुनि अरवराय निकसीं तबहि, ललितै हँसि उत्तर देत हो।
हम खोजति गिरि वन धातु बहु, साँझी चीतनि कैं हेत हो।।१५।।
प्यारी बैठि मणिनु के चौंतरा, कियौ नन्द-सुवन कौ वेष हो।
तुम को हौ री संपति सहित, फिरौ अकरि परायैं देश हो।।१६।।
प्यारी गिरि घाटी रोकति भई, ठाढ़ी ललित त्रिभंगी रीति हो।
धरि अधर अमी भरि बाँसुरी, गावैं मोंहन गौरी गीत हो।।१७।।
पुनि हँसति लसति आनँद भरीं, चलीं गोपइन्द्र कैं धाम हो।
प्यारी सुवटा मल्हकि मल्हावहीं, राधा सँग सुंदरि श्याम हो।।१८।।
प्यारी निकसति जिहिं-जिहिं गोप की, अरु पौरी आगैं जाइ हो।
सखि तहाँ-तहाँ सजि-सजि आरतौ, वे गोपी करति बनाइ हो।।१९।।
पुर-वीथिनु अति कौतिक बढ्यौ, भयौ गृह-गृह मंगल ठाट हो।
छबि-भीर बहीर जु प्रेम मनु, घर पहुँचि सकति नहिं बाट हो।।२०।।
प्यारी बासर शेष कछू रह्यौ, आईं भान-भवन की पौरि हो।
कीरति कीने दृग-पाँवड़े, लई वदन चूमि उर दौरि हो।।२१।।
रानी सचि रचि राखे पाक बहु, पट माधिक केसरि रंग हो।
प्यारी लीपि भीति साँझी धरी, लै श्यामसुन्दरी संग हो।।२२।।

प्यारी तारागन शशि जुत धरे, रची सन्ध्या देवी देव हो।
दोउ नेह देव आराधहीं, धरि भोग करी बहुत सेव हो।।२३।।
प्यारी आरति वारति प्रेम सौं, मन मुदित होति सुखदानि हो।
सब सखिनु सहित वंदन कियौ, अरु पुनि हँसि जोरे पानि हो।।२४।।
सब नर-नारी कौतिक छके, यह रचना देखि अभूत हो।
सखि! निरखि व्योम विथकित भयौ, जासौं कहत कमल कौ पूत हो।।२५।।
पुनि कीरति गृह बोलीं सबै, भोजन पय पान कराइ हो।
रानी पहिराईं गोपनि-सुता, दियौ मेवा गोद भराइ हो।।२६।।
प्यारी पौढनि मणि मन्दिर चलीं, ललिता कछु भेदहि पाइ हो।
हरि पट गहि रोके हँसि मिले, छाँड़े बहुत विनय कराइ हो।।२७।।
रजनीमुख सुख पूरित भये, जै श्री किशोरीलाल रचि सैंन हो।
वृन्दावन हित अलि रूप रस, पीवैं सादर भरि-भरि नैंन हो।।२८।।[३७]

⊛

राग- गौरी

ब्रजजीवन-जीवनि लाड़िली, साँझी हित बीनत फूल हो।
प्यारी स्यामसखी वन में लखी, गुन-वैस-रूप समतूल हो।।१।।
कलपवृक्ष तरु-बेलि जे, तिनतें कुसुम लियैं निरवारि हो।
गावति-खेलति घर चलीं, भूषन तन फूल सिंगारि हो।।२।।
कीरति दै आदर लईं, साँझी रचि भवन-दुवार हो।
कुलकति-पुलकति प्रेम सौ, धरि भोग आरती वार हो।।३।।
साँझी देव अराधिकैं, जाँचैं अमित परस्पर हेत हो।
सखिन सहित कीरति-लली, करि भोजन दृग सुख देत हो।।४।।
सैंन-भवन निवसित भईं, पिय-छल उघर्‌यौ तिहिं वार हो।
वृन्दावन हित रूप बलि, रजनी रस-रंग-बिहार हो।।५।।[३८]

⊛

३७. चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
३८. चाचा श्रीहित वृन्दावनदासजी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

राग- गौरी

मेरी रूप उजागर लाड़िली, भरी साँझी खेल उमंग हो।
वन गहवर गिरि तरहटी, बीनैं फूल सखी बहु संग हो।।१।।
यह सुनि नागर नन्द कौ, धरि कपट जुवति-तन-रूप हो।
कुसुम-कली ओली भरैं, भेंटी बेटी रावल-भूप हो।।२।।
फूल-गेंद कुसुमनि-छटीं, तन सजि गावति चलीं ग्रेह हो।
साँझी चीती भोग धरि, पुनि करि आरति भरि नेह हो।।३।।
कीरति सबनि जिमाइ पुनि, पट-अभरन दै करि हेत हो।
वृन्दावन हित रूप बलि मिलि, वर बिहार-सुख देत हो।।४।।[३९]

⊛

राग- गौरी

आजु खेलि हो[४०] साँझी साथै।
उठि मुहि आदरु दीजियैं, गहि लीजै मेरौ हाथै।।टेक।।
नंदगाँव की पाहुनी, आई हौं तुम पास।
अधिक खिलार जु मैं सुनी, यातैं उर बढ्यौ है हुलास।।१।।
तुहूँ चतुर मैं हूँ चतुर, इहिं नातें की रीति।
उघरि परैं गुन आजु ही, जब साँझी धरिहौं चीति।।२।।
प्रिया हँसी सजनी हँसीं, ढीठ साँवरैं अंग।
बिनु मिलाप बातैं करैं, वन में अति कौतिक रंग।।३।।
कारेनु कैं उर कपट अति, न्याइ कहत सब कोइ।
सावधान ललिता! रहौ, यह मति वैसी ही होइ।।४।।
ललिता! हौं सूधी बहुत, सब तजि आई ग्रेह।
तुममें घटती रीझ की, करौ दीननि सौं न सनेह।।५।।
मृदु चित लरजी लाड़िली, लई आपु ढिंग बोलि।
तोहि सौंह बाबा-वीर की, बात हियैं की खोलि।।६।।

३९. वर्षोत्सव – रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन
४०. ब्रज के ग्राम्यांचल में आज भी कन्याओं के मध्य साँझी के आयोजन बात 'साँझी खेलने' शब्द से ही सम्बोधित किए जाने की परम्परा है।

सत्य कहौं प्यारी सुनौं, रह्यौ चहौं तुम लार।
नित नव खेल खिलाइहौं, तुम जो रीझौ रिझवार।।७।।
सबकैं मन आनँद भयौ, सबनि दियौ अति मान।
भई वन-देवी दाहिनी, मिली सजनी परम सुजान।।८।।
ऊँचे फूल बिनाइहौं, कन्ध चढ़ौ सुकुमार।
ओली भरि लेहु चौगुनी, पुनि रचौ कुसुम बहु हार।।९।।
वगरि गईं वन चौंप सौं, फूल चुननि कैं लोभ।
कर गहैं गोरी-साँवरी, हिय नेह अंकुरी गोभ।।१०।।
कर कोमल, कोमल लता, कोमल कली जु लेति।
कुसुम-डार गोरी तकैं, साँवल नवाइ तिहिं देति।।११।।
जुही-बेलि ऊँची चढ़ी, अतिलड़ि रही निहारि।
काँधैं धरि लई साँवरी, कह्यरौ लेहु फूल निरवारि।।१२।।
रोमांचित तन होत ही, प्यारी सकुची जीय।
पन्नग दृष्टि पर्‍यौ भटू!, उतरौं संकित हौं हीय।।१३।।
हँसि-हँसि दोउ मारग लगी, भयौ कम्प तन स्वेद।
बात जनाई और ही, नहिं कह्यौ हियैं कौ भेद।।१४।।
कुसुम वगरि परे बाट में, जुरीं सहेली आइ।
सुघर साँवरे अंग की, तिन भूषन रचे बनाइ।।१५।।
सब पहिरीं रुचि आपुनी, खिल्यौ रूप मनु बाग।
साँझी बिरियाँ जानिकैं, चलीं गावति भरि अनुराग।।१६।।
मैंन-सैंन-करवँट दियौ, देखि रूप सुनि गान।
दुहुँ साथिनि साँझी धरी, रचि-रचि अपने पानि।।१७।।
भाँति-भाँति रचना रचीं, कौतिक जहाँ अनेक।
देखत विस्मित होत हैं री, जिनकैं विपुल विवेक।।१८।।
भोग धरैं विनती करैं, नमो प्रेम निजु देव।
प्रीति परस्पर जाँचहीं, कहैं मानि हमारी सेव।।१९।।
श्यामा जु वारति आरती, होत परम कौतूह।
दीपनि अस रचना करी, मनु भू-सुत उदित समूह।।२०।।
मैया-कर भोजन कियौ, वांछित सखिनु दिवाय।
भानु-भवन मंगल जितौ, मो रसना सकति न गाय।।२१।।

साँझी माँझी खेल जो, रस विलसनि की चाड़।
सैंन भवन न्यारैं गईं, तब उघर्‍यौ औरै लाड़।।२२।।
मंगल रजनीं सुख-सनीं, सजनी रीझीं देखि।
श्रीहरिवंश-प्रताप तें, रस वरन्यौ गूढ़ विशेषि।।२३।।
यह गाऊँ यह ही सुनौं, याही की जिय आस।
हित रूपी क्रीड़ा दुरी, लखि बलि वृन्दावनदास।।२४।।[४१]

⊛

राग- गौरी

खेलति साँझी कुँवरि किशोरी। नवसत सजैं अंग नव गोरी।।१।।
आगम सुभग सरद रितु जान्यौं। लली अली सबकैं मन मान्यौं।।२।।
बाला अंग अलंकृत करिकैं। आईं गावति पास कुँवरि कैं।।३।।
जिनकी सुनि छबि छटा निकाई। विधि हू भूलि गयौ चतुराई।।४।।
भाल विशाल रूप अस फूल्यौ। मनसिज घरनी जुत मद भूल्यौ।।५।।
ऐसी वल्लव-कुल नव बाला। शोभा-निधि गुन गहर विशाला।।६।।
ते वृषभान भवन में डोलैं। अगनित दामिनि मनहुँ कलोलैं।।७।।
कीरति कहति वचन रस-वलिता। साँझी लली पुजावौ ललिता।।८।।
यह सुख देखनि हित ब्रजरानी। आजु आइहैं मैं यह जानी।।९।।
सुनि-सुनि महरि बढी मन साधा। देखौं साँझी चीतति राधा।।१०।।
गहरु न करि मेरी प्राननि प्यारी। लावौ फूल जाइ फुलवारी।।११।।
यह सुनि सबहिं भवन तें निकसीं। गावति कूजति मधुरितु पिक सीं।।१२।।
सबतें आगैं भान-दुलारी। रूप-भार हू सौं जो भारी।।१३।।
लटकि चलनि पर हौं बलि कीनी। जिन त्रिभुवन की छबि सब छीनी।।१४।।
करि ओली बोली मृगनैंनी। वट संकेत कुसुम तरु-सैंनी।।१५।।
तहाँ हरि छिपि बैठे चढ़ि तरुवर। अतुलित रूप भरत दृग-सरवर।।१६।।
खेलति-खेलति जहाँ गजगैंनी। आई पियहिं परम सुख दैनी।।१७।।
फैलि गईं कानन चहुँ ओरैं। विहँसि-विहँसि सब फूलनि तोरैं।।१८।।
लतनि बीच सब दिसि रहे मुख लसि। मनहुँ घटनि तें उदित निकल शशि।।१९।।
जोवन आगम रूप गहेली। बेलि गहि झूलति अलबेली।।२०।।
फूलनि हेत फिरति वन झमकीं। बहुत बदरिनु मनु दामिनि दमकीं।।२१।।

---

४१. वर्षोत्सव के पद, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

भरि-भरि गोदनि खेलनि खेलति। तकि-तकि गेंद परस्पर मेलति।।२२।।
वगरत कुसुम कुलाहल करईं। बीन-बीन पुनि ओलिनु भरईं।।२३।।
कोउ मानिनि ह्वै बैठति वन में। कोउ ह्वै दीन परति चरननि में।।२४।।
कोउ गुहि फूल-माल पहिरावति। कोउ कर जोरि निहोरि मनावति।।२५।।
करैं सु क्रीड़ा ब्रीड़ा परहरि। तोरति फूल परम कौतिक करि।।२६।।
उत तें आवति मोहन-जनिता। जाकैं लारैं अगनित बनिता।।२७।।
देखि सबै आगैं उठि धाईं। हरषि महरि लै कंठ लगाईं।।२८।।
गदगद सुर पुलकित तन भारी। राधा जू महरि भरी अँकवारी।।२९।।
अंचल वदन अँगोछि लली कौ। हियौ द्रवित सुख भाग फली कौ।।३०।।
चलीं संग लै ब्रजपति-घरनी। निगम हू थाह न जिहि शुभ करनी।।३१।।
जसुमति-आगम कीरति विकसी। गोपिनु-वृन्द साथ लै निकसी।।३२।।
दुहुँ दिसि तें आवनि हित घुमड़नि। रूप-उदधि मनौं मिलिनैं उमड़नि।।३३।।
कीरति महरि अंग भरि भेंटी। रूप-बेलि मनु प्रेम लपेटी।।३४।।
ललकि मिलीं दोउ मंगल मूरति। जोऊ प्रेम सकल जग पूरति।।३५।।
आईं मिलि रावलपति-पौरी। अरघ दैंन कौं गोपी दौरीं।।३६।।
श्रीवृषभान भेंट बहु दीनी। करि आदर रावर में लीनी।।३७।।
पाछैं तें सुनि मोंहन धाये। भेष पलटि बनितनि में आये।।३८।।
अस कछु कौतिक रूप बनायौ। काहू रंचक भेद न पायौ।।३९।।
तुँगविद्या लखि कर गहि लीनौं। ताकौं भेद आपुनौं दीनौं।।४०।।
तिन प्यारी सौं जाइ मिलाई। सब गुन कुशल सखी हौं लाई।।४१।।
पुनि जस गदित गोप कोउ रानौं। ताकी सुता सुघर यह जानौं।।४२।।
साँझी-चीतनि निपुन महाई। मैं याकी जहँ-तहँ सुनी बड़ाई।।४३।।
सुनि चौंकी गोरी मन भोरी। बहुत करति मनुहार किशोरी।।४४।।
मृगमद-केशरि-चन्दन गारति। लीपि फटिक मणि भीति सँवारति।।४५।।
गो-गोबर सौं चीतति रचि-रचि। कुसुम पाँखुरिनु विधि सौं सचि-सचि।।४६।।
शुक-पिक-मोर-मरालनि-पंकति। धरि शिशुमार-चक्र नीकी गति।।४७।।
कहुँ लाल कहुँ रचे श्याम नग। कहुँ हीरा कहुँ मोती पन्नग।।४८।।
नव ग्रह विधि सौं चीते ऐसैं। विधि हू भूल्यौ विधिता जैसैं।।४९।।
मूरति उभय रचीं जुग पानन। विस्मै सबै होत लखि आनन।।५०।।
अगर धूप सौरभ करि मंडित। वरु माँगति दोउ प्रेम अखण्डित।।५१।।
विविध भाँति रचि भोग धरे हैं। मणि प्रकास बहु दीप वरे हैं।।५२।।

प्रेम भरीं जब साजति आरति। सब सखि पुहुप अंजुली वारति।।५३।।
जगमग जोति उदोति भई है। सकल लोक में पूरि गई है।।५४।।
सुरपुर अति आश्चर्ज भयौ है। विधि मन संशय अधिक दयौ है।।५५।।
अज नीकी विधि समुझि लई है। ब्रज लीला सब प्रेम मई है।।५६।।
चढ़ि विमान नभ कौतिक हरषत। बजत दुंदुभी कुसुमनि बरसति।।५७।।
इहिं विधि पूजन करि मुख रजनी। पुनि-पुनि मिलति परस्पर सजनी।।५८।।
प्रेमदेव कर जोरैं वंदित। बाला भईं परम आनन्दित।।५९।।
यह सुख निरखति ब्रजपति-रानी। विप्र-वधू धन दै सनमानी।।६०।।
कीरति नग न्यौछावरि कीनौं। द्विज असीस सुनि तिनकौं दीनौं।।६१।।
साँझी रचना महरि निहारति। भान-लली पर सर्वसु वारति।।६२।।
अपनौं भाग अपार मनावति। इहिं छिन सुख कौ पारु न पावति।।६३।।
जसुमति रानी कीरति मैया। लेत कुँवरि की भूरि बलैया।।६४।।
प्रेम विवस दोउ गदगद वानी। सुकृत-उदधि पैरति महारानी।।६५।।
मणि-चौकी बैठीं छबि पावति। पट-भूषन सबकौं पहिरावति।।६६।।
सुंदरि सबहि महरि ढिंग बोली। बाँटति मेवा भरि-भरि ओली।।६७।।
एकत भईं सबै ब्रज-गोपी। श्री हू तें अधिक भाग जे ओपी।।६८।।
कीरति सादर सबहि जिमावति। जूथनि मिलि सब मंगल गावति।।६९।।
हित हेत की गारी सुनि-सुनि। होति मुदित हरि-जननी पुनि-पुनि।।७०।।
बहु सनमान सुखित भई जसुमति। कियौ विश्राम जानि रजनी गति।।७१।।
अष्ट सखिनु मिलि लाड़गहेली। भोजन कियौ सँग श्यामसहेली।।७२।।
पुनि नैंननि आलस लखि भारी। पौढनि हित गवनी चित्रसारी।।७३।।
पिय की उघरि परी चतुराई। नागरि समुझि कछुक सकुचाई।।७४।।
प्रेम खेल की हौं बलिहारी। वदत बिहार-बिहार बिहारी।।७५।।
विशद बिहार जनित सुख रजनी। प्रमुदित निरखि रूप हित सजनी।।७६।।
वृन्दावन हित यह जस गायौ। श्रीहरिवंश कृपा तें पायौ।।७७।।
साँझी पूजि फूल सौं गावै। यह रस रहसि प्रेम जुत पावै।।७८।।[४२]

❀

राग- धनाश्री

हरे वरन के सूवटा।। मिठ बोला हो।।
करि मेरौ इक काज।। कीर मिठ बोला हो।।
साथिनि मेरी साँवरी।। मिठ०।। सो कित विरमी आज।। कीर०।।१।।

४२. वर्षोत्सव के पद, चाचा श्रीहित वृन्दावनदास, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

तू उड़ि वाके नगर जाहु।। मिठ०।। कहियो वचन सुनाइ।। कीर०।।
सुघर सिरोमणि तू सखी।। मिठ०।। ल्यावौ संग लगाइ।। कीर०।।२।।
गिरि पर ऊँचौ गाँमरौ।। मिठ०।। ताही कैं मधि वास।। कीर०।।
तू लै आउ मनाइकैं।। मिठ०।। जो वह होइ उदास।। कीर०।।३।।
साँवल वाकौ नाम है।। मिठ०।। खोजि लीजियो गेह।। कीर०।।
वरसानैं पग धारिये।। मिठ०।। साँझी मानि सनेह।। कीर०।।४।।
वह भूखी है प्रीति की।। मिठ०।। सुनत आइहै दौरि।। कीर०।।
साँझी सुविधि सम्हारिहै।। मिठ०।। बाबा जू की पौरि।। कीर०।।५।।
आज्ञा लै सुवटा उड्यौ।। मिठ०।। उचरत राधा वदन।। कीर०।।
सुनत भये बस प्रेम के।। मिठ०।। प्रीतम मोंहन मदन।। कीर०।।६।।
धनि बड़भागी सूवटा।। मिठ०।। पल्यौ कौंन कैं धाम।। कीर०।।
सरबसु तो पर वारनैं।। मिठ०।। दृढ़ रुचि राधा नाम।। कीर०।।७।।
वह साँवल कही भामिनी।। मिठ०।। यह नन्दन नर भूप।। कीर०।।
खग देखत कौतुक छक्यौ।। मिठ०।। वाही कैसें रूप।। कीर०।।८।।
पावनसर-तट कलपतरु।। मिठ०।। विरम्यौ ताकी डार।। कीर०।।
बनितनि फिर्‌यौ निहारिकैं।। मिठ०।। सबही नगर मँझारि।। कीर०।।९।।
कोउ नगर इहिं साँवरी।। मिठ०।। सो मोहि आदर देहु ।। कीर०।।
कह्यौ जु मेरी स्वामिनी।। मिठ०।। सो संदेश सुनि लेहु।। कीर०।।१०।।
लाल समुझि जिय अरवरे।। मिठ०।। आये पलटि सिंगार।। कीर०।।
सुवटा कह्यौ सँदेशरा।। मिठ०।। गवने ताही वार।। कीर०।।११।।
अनुरागी सुवटा उड्यौ।। मिठ०।। आयौ पुर वृषभान।। कीर०।।
लायौ सजनी साँवरी।। मिठ०।। दैकैं बहु सनमान।। कीर०।।१२।।
कर पै राखि चुगावहीं।। मिठ०।। भूरि वारनैं लेत।। कीर०।।
तू खग मेरे प्रान सम।। मिठ०।। करत अधिक हिय हेत।। कीर०।।१३।।

आवति देखी साँवरी।। अनुरागिनि हो।।
फूलनि जाकैं अंग।। मुदित श्रीराधा हो।।

फूलनि सौं ओली भरैं।। अनु०।। खेल बढ़ावनि रंग।। मुदित०।।१४।।
नैंननि सौं नैंना मिलैं।। अनु०।। साँझी मुदित खिलार।। मुदित०।।
अरी पाहुनी साँवरी।। अनु०।। कहाँ विरमी सुकुमारि।। मुदित०।।१५।।
आजु चाह मेरी करी।। अनु०।। अब छिन तजौं न पास।। मुदित०।।
मिलि साँझी चीतनि लगीं।। अनु०।। हिय बढ्यौ अधिक हुलास।। मुदित०।।१६।।

रजनीमुख शोभित कियौ।। अनु०।। गावति गीत सहेलि।। मुदित०।।
रचना इहिं विधि सौं रची।। अनु०।। विधि-रचना पग-पेलि।। मुदित०।।१७।।
सुखहिं बटोरति परस्पर।।अनु०।। विधि विधान सब करत।। मुदित०।।
या साँझी के खेल में।।अनु०।। उर वर आनँद भरत।। मुदित०।।१८।।
पिय-अभिलाष पुजावनी।। अनु०।। कहा करौं अधिक प्रसंश।। मुदित०।।
अति गरुवौ रस विलसिवौ।।अनु०।। लखि कृपा जु श्रीहरिवंश।। मुदित०।।१९।।
लाल छली भोरी प्रिया।।अनु०।। प्रेम जहाँ परधान।। मुदित०।।
नित खेलैं नित भूलहीं।।अनु०।। जद्दपि कलनि-निधान।। मुदित०।।२०।।
यह सुख अलि-दृग भोगता।। अनु०।। बलि हित रूप विनोद।। मुदित०।।
वृन्दावन हित जाँचहीं।।अनु०।। दीजै ओटत गोद।। मुदित०।।२१।।[४३]

❁

राग- गौरी

खेलति हैं साँझी राधा, सखियनि-साथ री।
गैंदुक-कुसुम छरी, सोहैं सब हाथ रही।।१।।
वन कमनीय संकेतवट मूल री।
सचि-सचि धरे तहाँ, रँग-रँग फूल री।।२।।
सघन लतनि दुरि, बैठी सखी साँवरी।
बूझति बिशाखा को है, कहा तेरौ नाम री।।३।।
साँझी कौं कुसुम लैंन, आई वन माँहिं री।
कहाँ मेरैं संग सु सहेली सुधि नाहिं री।।४।।
संकित ह्वै बैठि रही, अति भयभीति री।
संग मो लगाइ लेहु, करौ सखि प्रीति री।।५।।
भागिनु मिली हौ कहौ, अपनौं हूँ नाम री।
काकी तुम बेटी हौ, बसति किहिं ग्राम री।।६।।
नाम है बिशाखा, वरसानौं मेरौ वास री।
भानु की लड़ैती राधा, रहौं ताकैं पास री।।७।।
प्यारी कौं सुनाये सखी साँवरी के बैंन री।
कौतिक या कुंज माँहिं, चलि देखौ नैंन री।।८।।
मुदित भई हैं प्यारी, सुनि यह बात री।
जाइकैं निहारी सखी, साँवल गात री।।९।।

४३. वर्षोत्सव के पद – चाचा श्रीहित वृन्दावनदास, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

धनि वह देश जहाँ, भई उत्पन्य री।
धनि कुल तात-मात, किये धनि-धन्य री।।१०।।
वेगि उठि आउ सखी!, चलि मो लार री।
परखी मैं साँझी की तू, अधिक खिलार री।।११।।
कहि गहि लीनौं हाथ, मानैं जिन संक री।
लिखे हैं विधाता पूरे, भाग भाल अंक री।।१२।।
फूलनि चुनति दोऊ, मानति हैं मोद री।
गौधूरक-वार तौलौं, भरि गई गोद री।।१३।।
गावति चली हैं गौरी, पुर वृषभान री।
शोभा-सिन्धु बाढ़्यौ ताकौ, होतु न वखान री।।१४।।
पौरी ठाढ़ी हेरैं मग, कीरति माइ री।
अंचल अँगोछ्यौ मुख, लेति हैं बलाइ री।।१५।।
चंदन-वंदन-गौरा, घसि लीपी भीति री।
सुरभी के गोबर सौं, साँझी धरी चीति री।।१६।।
दाहिनैं सहेली स्याम, वाम दिशि गौर री।
ऐसे रचे चित्र, भई सारदा हू बौर री।।१७।।
कौतिक उमाहै गोपी, आईं दौरि-दौरि री।
तरुन-विरुध बाला, जुरीं भानु-पौरि री।।१८।।
करनि कौं चूँवैं, रीझि-रीझि ढोरैं ग्रीव री।
कहैं भई राधा, शोभा-चातुरी की सींव री।।१९।।
भागिनु मिली है सखी, वन आजु स्याम री।
याहू में समान दीसैं, गुन अभिराम री।।२०।।
धूप-दीप कीनी पूजा, विधि संजोग री।
अंबर दै आड़ौ धरैं, नाना विधि भोग री।।२१।।
गावौ री सहेली साँझी, सादर लड़ाइ री।
बाबा जू कैं पुर-देस, कुशल मनाइ री।।२२।।
ललिता कहत औरौ, मंगल नवीन री।
साँवरी सहेली आजु, आई है प्रवीन री।।२३।।
मगन भईं हैं बाला, अधिक उमाह री।
मानौं आजु बाढ़्यौ प्रेम-सिन्धु प्रवाह री।।२४।।

पूजिकैं मनावैं गावैं, गीतनि अनूप री।
धनि-धनि साँझी देव, प्रेम कौ सरूप री।।२५।।
भोग कौं उसारि प्यारी, अरप्यौ तँबोल री।
आनक-मृदंग बाजैं, ढोलक औ ढोल री।।२६।।
औरौ बहु बाजे साजे, जै जै धुनि होति री।
आरति उतारैं स्यामा, जगमग जोति री।।२७।।
साँझी कौं प्रनाम करि, मिलैं धाइ-धाइ री।
दियौ पकवान स्यामा, गोदनि-भराइ री।।२८।।
स्यामा जू की साथिनि, गईं हैं भानु-ग्रेह री।
कीरति जिमाईं प्यारी, सहित सनेह री।।२९।।
जामिनी कौ जाम बीतै, गईं न्यारैं भौंन री।
छदम उघरि पर्‌यौ, कहौं मुख कौंन री।।३०।।
मुसिकैं सहेली, धरि चिवुकनि आँगुरी।
लाल की ढिठाई देखैं, भई मति पाँगु री।।३१।।
क्रीड़त तलप-सर, मनु जुग हंस री।
यह सुख सर्वसु है, श्रीहरिवंश री।।३२।।
आजु की सरवरी है, मंगल कौ ऐन री।
साँझी कौं सफल कियौ, दियौ सुख सैंन री।।३३।।
आजु धनि बासर, भई है धनि राति री।
हित रूपी सम्पति, बटोरी हू न जाति री।।३४।।
याही सुख माँझ राखौं दृग-उरझाइ री।
वृन्दावन हित जीऊँ, यही जस-गाइ री।।३५।।[४४]

❀

राग- गौरी, झंझोटी तथा काफी, ताल-मूल

साँझी आगैं निर्त्त साँवल-गौर करति हैं।
सजनी लेत वारनैं सबही, अविचल रहौ यह जोरी, उर-आनन्द भरति हैं।।
भरि अनुराग गुनीली गावति, मनहुँ भानु के भौंन, अभी-समूह झरति हैं।
अहा-अहा सबकैं मुख सुनियत, सुघर दोऊ संगीत, गति नौतन जु धरति हैं।।
ब्रज-सुख बढ़ौ बढ़ौ जु तात-घर, बढ़ौ ससुर कैं धाम, गोप-वधू उचरति हैं।
वर दैंनी संझा भई वानी, बाढ़ौ कुँवरि-सुहाग, सुनि पुनि-पुनि उछरति हैं।।

४४. चाचाजी की वाणी – रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

इकटक वदन निहारत सादर, दोऊ अति रिझवार, नहिं दृग-पलक परति हैं।
वृन्दावन हित रूप वारनैं, यह कौतिक रस-केलि, सागर रंग तरति हैं।।[४५]

राग- आशावरी

साँझी पूजन श्यामा, फूलनि बीनै, आवति सँग लियैं अलियाँ।
बाँसन की बहु रंगन चीतीं, सबकैं हाथनि, सोहैं कुसम भरीं डलियाँ।।
साँझी सुघर मल्हावति गावति, करति अलंकृत पुर की गलियाँ।
वृन्दावन हित रूप साँवरी, सजनी हिलिमिलि, रचति खेल विधि भलियाँ।।[४६]

भटू! यह साँझी तेरी, तू साँझी की, मन-क्रम-वचन उपासी।
मुहि विश्वास बढ़ौ है तेरौ, आवै दूर तें, खेल रचै सुख-रासी।।
भाग्य बली दरस्यौ जु परस्पर, रंचक कबहुँ न होहु उदासी।
वृन्दावन हित रूप बढ़ी, प्रभुता मो-तोकौं, सबहि दैंहिं स्यावासी।।[४७]

प्यारी! तेरी साँझी की परवी, देश भयानैं, सबनि उमाहौ दीनौं।
यह शिशुमार-चक्र मनौं तीरथ, रच्यौ नीकी विधि, विधिना हू संभ्रम कीनौं।।
नैंना जात्री भये जु सबके, फल मन-वांछित लीनौं।
वृन्दावन हित रूप साँवरी, सजनी सौं मिलि, खेल उपायौ नवीनौं।।[४८]

अरी तू आई नवेली! करि जिन ऊधम, सूधैं साँझी खेल।
कबहूँ चोर-भाँवरी सी देइ, कबहुँ कुँवरि जू कैं, चलति अंश-भुज-मेलि।।
हम तौ लक्षन पहिचानैं, कुल की लज्या आई पेलि।
वृन्दावन हित रूप करति है, बुधि-बल सबसौं, बोलत ठेलाठेल।।[४९]

४५. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
४६. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
४७. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
४८. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
४९. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

राग-ईमन, चौतालौ

अरी! यह गोप ढुरौनी, ऐसी मिली वन, मनु साँझी फल दीयौ।
को है चतुर लोक में ऐसी, वारौं यापै, रिझै सबनि इन लीयौ।।
साँझी-चित्र रचति है कर वर, विधि को लिखन सब फीकौ कीयौ।
वृन्दावन हित रूप धन्य यह, राधा ही कैं सम, मैं परच्यौ दुहुँ हीयौ।।[५०]

राग-कल्याण चौतालौ

अरी! तू घर तजि आवति, श्यामसहेली, धनि साँझी खिलवार।
तेरे गुननि प्रसंशति श्यामा, तोमें मोंहिनी, विद्या कछु निरधार।।
को प्रवीन वृषभान-सुता सम, सो तोहि चाहत बारंबार।
वृन्दावन हित रूप तोकौं, साँझी दियौ परचौ, राखी कुँवरि तब लार।।[५१]

राग-परज, ताल-आड़

झमकि चलीं साँझी चीतनि, तात-महल जहँ धवल।
ओली भरैं कुसुम-पँखुरिनु सौं, संग सहेली नवल।।
उड़गन सहित धर्‍यौ शशि-मंडल, साँझी साँझ रचैं कर-कमल।
वृन्दावन हित रूप खेल कौ, जाकैं साँचौ अमल।।[५२]

राग-परज

कहा नीकी चीतति साँझी, बड़े-बड़े नैंननि वारी।
अबही कुँवरि जू लाईं वन तें, यह जस करि है भारी।।
सब सखियन सनमान देति है, वरन साँवरे लगौंनी महा री।
वृन्दावन हित रूप रिझौंनी, रिझाई चतुर-मणि प्यारी।।[५३]

राग-गौरी श्री, चौतालौ

जा दिन तें मेरी अतिलड़ि राधा, साँझी पूजन नेम लयौ है।
ता दिन तें मंगल या ब्रज में, होत नित नयौ,
अरु गिरि देव दयालु भयौ है।।

५०. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५१. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५२. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५३. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

सासु-गेह-पगु धारे जबतें, तब तें सुख ह्वाँ नित जु नयौ है।
वृन्दावन हित रूप कुशल पुर, देश जु करिनी,
कुँवरहि अचल सुहाग दयौ है।।५४

⊛

राग-विहाग, ताल-आड़

साँझी! बड़भागिनि, साँवल माँगति दान दै।
तू रजनीमुख वर्द्धि सदा सुख, विनती सुनि यह कान दै।।
हौं मन-क्रम-वच जाँचत तोकौं, गोरी तैं सनमान दै।
वृन्दावन हित रूप बढ़ै रुचि, मुरली राधा-गान दै।।५५

⊛

राग-गौरी, चौतालौ

साँझी की विधि नीकैं जानति, परम विचक्षन स्याम सलौंनी।
तैं पाई राधा सी साथिनि, पाक भोग धरि,
तो हिय जानी प्रीति अगौंनी।।
मन सौं अराधि आरती उतारति, तो सी ऐसी भई न हौंनी।
वृन्दावन हित रूप अवधि दोउ, कौतिक रचनीं,
धन्य-धन्य कुल गोप दुरौंनी।।५६

⊛

राग-गौरी, चौतालौ

साँझी मंत्र मोहि आवत है, कहैं और सौं यह दुख पावै।
को है अति उदार मति ऐसी, तन-मन-धन दैकैं अपनावै।।
सोरह तिथि भरि पूजै याकौं, अचल सुहाग कन्त मन भावै।
वृन्दावन हित रूप साँवरी, यौं कहिकैं कर जोरि मनावै।।५७

⊛

साँझी-सुख तोही तें जु प्रकाश्यौ, तें साँझी-फल पायौ।
परम सुहाग दैंन यह कहियतु, शुभ रजनीमुख, सो नीकैं दरसायौ।।
प्रथम लाभ मिली श्यामसहेली, यह परचौ राधे! मो मन-भायौ।
वृन्दावन हित रूप अवधि बनी, जोरी दुहुँनि की, लखि हिय-नैंन सिरायौ।।५८

⊛

५४. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५५. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५६. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५७. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५८. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

श्याम जू सखियन माँझ, चीतति साँझी कर वर।
धर्‌यौ शिशु-मार-चक्र नीकी विधि, संग सहेली श्याम,
दिखि-दिखि मुदित परस्पर।।१।।

शशि-उर मध्य कलंक जु रेखा, राखी परम प्रवीन,
हँसी तब साँवल हर-हर।

कर चूमति पुनि लेत बलैया, धनि वृषभानु-कुँवरि,
तो सम को इहिं भुव पर।।२।।

हौं रीझी तो कर-लाघवता, मोहू देहु सिखाय,
जे गुन तुम उर-अंतर।

ओटत गोद सुघर श्यामा पै, होतु परम अधीन,
कहै मुख-वचन मनोहर।।३।।

नगर-वगर देखीं बहु साँझी, अस कौतुक कहुँ नाहिं,
जो देख्यौ मैं इहिं घर।

वृन्दावन हित रूप अतिलड़ी, लई प्रेम-परचाइ,
खेलत खेल जु डारि डर।।४।।५९

⊛

अरी-अरी साँझी सुघर खिलारिनि, मन थिर नाहीं, दृष्टि फिरत तिरछौंहीं।
टरति न नैंक दाहिनी-बाईं, मैं परखी है, रहति कुँवरिजू की सौंहीं।।
सबनि डर्‌यौ सौ पायौ तो मिलि, मोहि लगति कछु उर-उरझौंहीं।
वृन्दावन हित रूप सवादिन, रंग साँवरी, फिरति आपुनी गौंहीं।।६०

⊛

वारी-वारी मैं किशोरी! कर-लाघवता, तेरी सी न निहारी।
कै यह मिली भाग्य बल सजनी, तन चटकीले, साँझी चीतनिहारी।।
आई निपट डार की सी टूटी, शोभा-निकर गुनीली भारी।
वृन्दावन हित रूप धन्य, विधना किहिं रचिपचि, जोरी यह जु सँवारी।।६१

⊛

अरे घर! तू जिन रीझै या साँझी पै, रूमि झूमि आवै।
मैं चीती है चित में ऐसी, देव-वधूनि लजावै।।१।।

५९. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६०. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६१. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

वरज साँवरी अपने कन्त कूँ, तेरौ वचन मन-भावै।
धीरज बाँधि निहारि दूर तें, जिन दृग-नीर बहावै।।२।।
याकौ लाड़ करनि दै मोकूँ, दई दया उपजावै।
वृन्दावन हित रूप आजु यह, अपनौं प्रगट दिखावै।।३।।[६२]

❁

राग-अपनौ

अरी कोउ जंत्र बनावौ, इष्ट मनावौ, खेल बिगारै न मेहरा।
या साँझी सब देखैं जीवति, सुख में परै ज्यौं न छेहरा।।१।।
आजु की राति देहु मुँह माँगी, कहि साँवल तेरौ कन्त एहरा।
गरजत है कछु प्रेम छक्यौ, दामिनि उछरति तजि ग्रेहरा।।२।।
सबकौं वरु दैहै मनवांछित, मोहि जानि परी निसंदेहा।
वृन्दावन हित रूप करौ सब, यासौं परम सनेहरा।।३।।[६३]

❁

राग-विहाग, ताल-आड़

वृन्दावन फूलनि सौं छायौ।
चलहु सखी फुलवा बीननि कौं, साँझी कौ दिन आयौ।।
प्रेम मगन ह्वै साँझी चीतौ, पचरँग रंग बनायौ।
वृन्दावन हित रूप सखी! तुम, करिये लाल मन भायौ।।[६४]

❁

राग-ईमन, ताल-आड़

विचक्षन लाई फूल भरि ओली।
या साँवल कौं देव-वरु दरसत, प्यारी जू मिलि हँसि बोली।।१।।
भूषन रचि पहिराये अपु कर, और कुसुम रचि चोली।
दृगनि दियौ अंजन कजरौटी, बटुआ में तें खोली।।२।।
कहति प्रीति की भूखी कोउ सखि, मोहि करौ बहनोली।
हँसिकैं कह्यौ बिसाखा री यह, ढीठ बुद्धि मैं तोली।।३।।
बड़ी वार की आई वन हौं, ढूँढति तुमकौं डोली।
हौं जु अपूरब क्यौं तुम सजनी, करति हौ बोली ठोली।।४।।

६२. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६३. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६४. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन

बहुत दया करि स्यामा उर तें, चौकी दई अमोली।
वृन्दावन हित रूप करौ मोहि, साथिनि ओटति ओली।।५।।[६५]

❁

यह सुख-वर्द्धनि साँझी राधा!, तैं हीं पूजि मनाई।
लावौ फूल रचौ नीकी विधि, बहुरि कुशल सौं आई।।१।।
संग लेहु ललितादिक साथिनि, मैया बलि-बलि जाई।
सुखित भई ब्रजरानी, तेरी सुनि-सुनिकैं चतुराई।।२।।
काल्ह कहाँ तैं नई पाहुनी, संग साँवरी लाई।
तेरैं ही समान चीतति है, मेरैं हू मन भाई।।३।।
हौं रचिहौं पकवान भोग धरि, कीजै प्रीति महाई।
वृन्दावन हित रूप दैंन वर, बढै सुहाग सदाई।।४।।[६६]

❁

इतहिं साँझी रची उतहिं फूली साँझ,
अधिक फूले तहाँ सखिनु के टोलना।
गौर अरु स्याम तन-मन जु फूले अधिक,
सुहथ शशि रच्यौ लै रतन निरमोलना।।
आपु निर्मित कियौ रीझि रहीं आपु ही,
चौंप सौं हीय की चातुरी-खोलना।
वृन्दावन हित रूप परस्पर मान दै,
अरी साथिनि! अरी! कहि बोलना।।[६७]

❁

राग-गौरी

बढ़ि पर्‌यौ साँझी-खेल, बढ़ि सुख बेलि चली।
रजनी बढ़्यौ सुहाग, पुनि रितु शरद भली।।१।।
सब तन बाढ़ी ओप, रची दीपनि-अवली।
साँझी-रचना देखि, रीझी स्यामअली।।२।।
हौं जु धन्य भई आजु, सुनि हो भानु-लली।
गोप-सुता त्यौहार, तैं करी रंग रली।।३।।

६५. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६६. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन
६७. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

साँझी-पूजन प्रेम, फैल्यौ गली-गली।
रंग वरषि पर्‌यौ आजु, सबकी आस फली।।४।।
साँझी-महिमा भूर, तेरैं उर-उझली।
वृन्दावन हित रूप, गति-मति सब बदली।।५।।[६८]

❁

चाचा श्रीहित वृन्दावनदास कृत ब्रज प्रेमानन्द सागर

गोप दुलारिनु को जु अब, आयौ प्रिय त्यौहार।
सांझी सब चीतन लगीं, तात भवँन दरबार।।१।।
तिन में राधा मुकट मणि, सब भई ताकें लार।
सांझी कौ दिन जांनि कैं, आंईं साजि सिंगार।।२।।
सनय सनय एकत भईं, कीरति अजिर मझार।
राधा सौं सब यौं कहति, साँझी खेलन बार।।३।।
एक सुभाव जु चाव इक, एक वैस समतूल।
कुँवरि माइ अग्याँ जु लै, निकसीं तोरन फूल।।४।।
कीरति मेंवन कोंथरी, भरि दई सब के हाथ।
भूख लगै तब जेंइयौ, सबहिं बैठि इक साथ।।५।।

सब हिनु करीं दुकूलनि झोर। कुसमनि खोजति हैं चहुंओर।।६।।
जहाँ जहाँ देखें फूली डार। तहाँ तहाँ करैं सबैं किलकार।।७।।
आवौ री तुम दौरी सबै। बहुत फूल हम पाये अबै।।८।।
तिनहिं तोरि कैं आगें चलैं। करैं खेल कौतूहल भलैं।।९।।
कहूं बेलि फूलि नवि रहीं। तिनकी डरियां जाइ जु गहीं।।१०।।
कोउ ऊँची ते हाथ न आवैं। इक लै एकनि कंध चढावै।।११।।
तिन तें लिये तोरि विधि भलीं। पुनि ताहू पें आगें चलीं।।१२।।
पहुँची प्रेम सरोवर तीर। कुसुम बहत पै भवँरनि भीर।।१३।।
वे ऐसी विधि गुँज जु करैं। मनु रखवारे तोरत लरैं।।१४।।
अरी भटू अब कीजै कहा। इनको देखि डरैं हम महा।।१५।।
प्यास लगी गई अँचवन नीर। बैठी करी मंडली जु तीर।।१६।।
कोऊ इक राधा कें ढिग गई। ऐसे वचन कहति सो भई।।१७।।
प्यारी जो अब अज्ञा दीजै। भूख लगी तो भोजन कीजै।।१८।।

६८. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

पात पलासनि तोरि जु लावौं। दौंनाँ अपने करनि बनावौं।।१९।।
खोलि कोथरी दोंना भरौ। ऐसी विधि सब भोजन करौ।।२०।।
खोजि मिष्ट फल बन तें लावैं। ते राधा के हाथ गहावैं।।२१।।
जेंवति कुँवरि भरी अहलाद। कहैं भटू यह अधिक सवाद।।२२।।
ऐसे फल चुनि लावौ और। कौंन वृक्ष उपजें किहि ठौर।।२३।।
लावैं पावैं अचवैं नीर। आगें चली सखिनु लै भीर।।२४।।
फूलनि लोभ गईं संकेत। लखि वन कमनी बढ्यौ हिय हेत।।२५।।
जहां कुशमनि के झुकि रहै झवा। मानौ खुले छबिनु के डबा।।२६।।
प्यारी बैठीं वट की छांहीं। अति आनन्दित भई मनमाँहीं।।२७।।
फूलनि सौं ओली भरि लईं। गहने सुहथ रचति सब भईं।।२८।।
पहिरैं कुँवरि सबनि पहिरावैं। वन कौं कौतिक अति मन भावैं।।२९।।
मधुरे बाजे बाजत आवैं। वधू वृन्द मिलि मंगल गावैं।।३०।।
आई एक सहेली भगी। ऐसें कहन कुँवरि सौं लगी।।३१।।
को आवति यह जाति जु कहां। हम चलि कौतिक देखैं तहां।।३२।।
उनि में ते आईं इक बाल। कहन लगी सो वचन रसाल।।३३।।
री तुम निपट ऊजरे गात। दांमिनि अरु ससि निकर लज्यात।।३४।।
काकी बेटी का पुर रहौ। मोसों साँची बात जु कहौ।।३५।।
यह वृषभाँन नृपति की लली। याकें संग ये जु सब अली।।३६।।
आईं फूल लैंन के हेत। अति कमनी इहि बन संकेत।।३७।।

निरखि निरखि भामिनि कहति, धन्य तात पुनि माइ।
जाके गरुवे रूप ने दियौ, वन तिमिर नसाइ।।३८।।
हौं नित काँनन सुनत ही, आजु लखी भरि नैंन।
या अति लडि के रूप पै, वारौं रति युत मैंन।।३९।।
पुनि बूझन ललिता लगी, तुम जु बसति किहि ग्रांम।
अगनित बनिता वृन्द संग, जाति कौंन से कांम।।४०।।
यह रानीं ब्रजराज की, आई हैं इहि हेत।
पूजन कौं अपनें सुहथ, देवी वट संकेत।।४१।।
यौं कहि कैं पाछें हटी, मिली संग में जाइ।
कही बात सब महरि सौं, कांन लागि समुझाइ।।४२।।

बिनु पूजें हीं फल मिल्यौ, आगें परत न पाइ।
धनि संकेत निवासिनि वांछित दियौ दरसाइ।।४३।।
जसुमति के हिय जिय बढ्यौ, सुनि आनन्द अकूत।
उरकौ उरझयौ पहिले ही, जाइ कुँवरि सौं सूत।।४४।।
देवी पूजन कौं दई, विप्र वधू जु पठाइ।
राधा ओर चलीं रवँकि, मुरलीधर की माइ।।४५।।
बैठी सखियनि वृन्द में, रूप की आनन्द पुंज।
महरि देखि दहली सुअंग, किहिं विधि मिलिये कुंज।।४६।।

चली महरि साहस धरि कैं। पहुँची निकट सु आइ कुँवरिकैं।।४७।।
मन की बात सु कासौं कहैं। बार बार विधना तन चहैं।।४८।।
मेरी ओर लरजियौ दई। फल प्रापति की बरियां भई।।४९।।
है देवी तू साँची महा। तेरी महिमाँ बरनौं कहा।।५०।।
हों नहि सकी चरन लगी आइ। मन अभिलाषा दई पुजाइ।।५१।।
नख सिख रूप विलोकनि लगी। नैंननि भूख सतगुनी जगी।।५२।।
कुँवरि लई गोदी बैठारि। बढ्यौ रूप नहि सकति निहारि।।५३।।
कहति अति लडी मो घर चलौ। दिहु सबहीं कौं आनन्द भलौ।।५४।।
मैं देखी जू जनमी जबै। तब तें दई मिलाई अबै।।५५।।
बूझौं सुनौं सन्देश कांन। उहां बनैं नहिं आवन जाँन।।५६।।
कबहूं हेरि वदन तन रहैं। कबहूं गाढे अंकनि गहै।।५७।।
कबहूं रीझि वारने लेंहि। शिर कर राखि असीसें देहि।।५८।।
पुनि आठौं भाननि की बेटी। बोलि बोलि सब हीं उर भेंटी।।५९।।
सब कौ लाड बिना मित कर्‌यौ। सब के माथे कर वर धर्‌यौ।।६०।।
ललिता मधुर कही तब बानी। हम कौं अज्ञा दीजै राँनी।।६१।।
साँझी पूजन कौ दिन आज। आईं फूल तोरने काज।।६२।।
तोरति फूल अधिक बढ़ि आईं। बहुरि कृपा करि तुम बिरमाईं।।६३।।
हमकौ बेगि विदा अब दीजै। आपु नन्द पुर गवन जु कीजै।।६४।।
कीरति छिनु न विसारति जाहि। कैऊ घरी बीति गईं ताहिं।।६५।।
अपने मन करि उनि मन बूझयौ। जसुमति कौ सति भाव जु सूझौ।।६६।।

रानीं लै रही अंक में, सबल ह्वै रह्यौ प्रेम।
कहौ जु सूझें कौंन कौं, साँझी पूजन नेंम।।६७।।

नाम हिता तो माइ कौ, सुनि अति लडि वृषभाँन।
कहियो पा लागन जु मम, दै कै बहु सनमान।।६८।।

ललिता मो बिनती सुनि लीजौ। रानीं सौं ऐसें कहि दीजौ।।६९।।
प्रथम बचन की बरियाँ भई। लाइक तुम सु नाइ हम दई।।७०।।
कुँवरि चलन कौं अति अरवरैं। तब हीं रानीं हिय गहवरै।।७१।।
जिहि तिहि विधि सुरझाइ जु लई। मन धीरज धरि अज्ञाँ दई।।७२।।
धरें नन्द पुर सन्मुख पाइ। मुरि मुरि इतकौं देखति जाँइ।।७३।।
यह लै फूल चलीं घर तात। महरि लाड की करति जु बात।।७४।।
जहाँ जहाँ देखैं कमनीं ठौर। कुँवरि खेल तहां तहां रचै और।।७५।।
तौरैं फूल कुँमद कुँमुदनी। सरवर धसी कोऊ इक जनी।।७६।।
वै लै लै जु पारि पै धरैं। कोऊ इक ताकी चोरी करैं।।७७।।
कोऊ इक कहैं ताहि समुझाइ। और लाउ री फिर धसि जाइ।।७८।।
वे धसि लाइ लाइ कैं देंहिं। बांटि बांटि यह सब हीं लेहिं।।७९।।
बरियाँ बड़ी भई जब लखी। कीरति एक पठाइ सखी।।८०।।
उनि सब कह्यौ सन्देसौ आइ। मारग हेरति तुमरी माइ।।८१।।
सुनि सब आतुर गति सौं चली। गौरी गावति सब हीं अली।।८२।।
एकत भईं बडत्री अरु छोट। मनु सोभा को दरसतु कोट।।८३।।
सब मुद भरी मल्हावैं बीर। वरनी परै न छबि की भीर।।८४।।
पौंरी भान पाउ जब दियौ। मैया हरखि आरतौ कियौ।।८५।।
लाड सहित आँकौं भरि लई। अंचल वदन अँगोछति भई।।८६।।
केशरि चन्दन लीपी भीति। गो गोबर धरि साँझी चीति।।८७।।
चहुं दिसि गोबर कोटि जु सच्यौ। मधि सिसु मार चक्क पुनिरच्यौ।।८८।।
रवि ससि मंडल इहि विधि धर्‌यौ। लखि विधि मन सन्देह जु पर्‌यौ।।८९।।
चहुँ दिसि चीते अगनित तारे। बड़डे ग्रह कर आपु सँवारे।।९०।।
विच विच फूल बीच नग पांति। कुँवरि धरे रचि नीकी भांति।।९१।।
सब में दरसति ऐसी ओप। उपमा मानों करियति लोप।।९२।।
सब में दरसति ऐसी ओप। उपमा मानों करियति लोप।।९३।।
श्री राधा के साथिनि साथ। सब चीतति अप अपने हाथ।।९४।।
अगर धूप सौरभ करि चरची। खेल मांहि अति लडि मन परची।।९५।।
जल गुलाब चहुँ दिशि छिरकाइ। दीपक पंकति धरी बनाइ।।९६।।

सबै कहैं लघु वैस जु अहा। कर चतुराई कहिये कहा।।९७।।
सब कोउ अस परसंश जु करैं। सुनि कीरति उर आनन्द भरैं।।९८।।
आरज गोपिनु लै कै संग। आँइ देखन मन जु उमंग।।९९।।
लली हाथ लगीं चूम्बन माइ। रीझी पुनि पुनि लेत बलाइ।।१००।।
सकुचि कुँवरि लइ दृष्टि दुराइ। हिय फूलनि वरनीं नहिं जाइ।।१०१।।
कह्यौ कुँवरि तब मृदु मुस्काइ। मैया दीजै भोग मँगाइ।।१०२।।
मेवा बहु पकवाँन मँगायौ। लली भली विधि भोग धरायौ।।१०३।।
साथिनि सुघरनि ऐसो गायौ। मनु साँझी कौ टेरि बुलायौ।।१०४।।
कर जौरें विनवति सब ऐंसे। साँझी होहि प्रसन्न सु जैसे।।१०५।।
ठांडी सबहि ध्यान सो करैं। मुख तें मनहुँ मंत्र उच्चरैं।।१०६।।
अखिल कलनि की स्वामिनि जाहैं। लीला बाल मगन भई सोहैं।।१०७।।
भोग उसार्‌यौ जल अँचवाइ। बीरी अर्पी पुनि चितचाइ।।१०८।।
बाढी आरति करन हुलास। सब सिमिटीं जु कुँवरि के पास।।१०९।।

किधौं कि शीतल दामिनि, किधौं निकर ससि जोति।
सजि आरति ठाढी भईं, तन दुति जगमग होति।।११०।।
आरति वारति कुँवर जु, पुहपांजुलि सखी कोइ।
मन करि आरधति सबै, पंच नाद धुनि होइ।।१११।।

मिलति परस्पर नवँनी करि करि। ग्रीवा बाहुँ लाड सौं धरि धरि।।११२।।
यौं रजनी मुख पूजन कियौ। खेल विनोद सन्यौ सुख हियौ।।११३।।
कीरति सबनि भवँन लै आई। कनक सूत ओढनी उढाई।।११४।।
आलिनु भरि भरि मेवा दई। सब राधा ढिग बैठति भई।।११५।।
कीरति कहति गई किहिं दिश बन। बेटी तू कछु श्रमित भई तन।।११६।।
मैया देखीं कुंजैं कमनी। प्यारी लागी बन की अँवनी।।११७।।
बढि गईं वट संकेत जु कूल। ओलिनु भरि भरि तोरे फूल।।११८।।
तहाँ इक कौतिक पर्‌यौ जु सूझि। सो तू अब ललिता सों बूझि।।११९।।

सखी कहति हम बन गईं, फूलनि तोरन हेत।
महरि जु आईं पूजिवै, देवी वट संकेत।।१२०।।
आरज गोपी संग बहु, करति उच्च स्वर गान।
हम उनिके कौतिक लगीं भूलीं आंवन जाँन।।१२१।।

आई चतुरा नारि इक, हम सौं गई बतराइ।
भेद भाव उन महरिकौं सब हीं दियौ जताइ।।१२२।।

जब राधा की खबर जु पाई। तब रांनी पाछें फिर आई।।१२३।।
कुँवरि हि लखि विहवल भई महा। सरस्यौ प्रेम सु वरनौं कहा।।१२४।।
आँकौं भरि कै भेंटी प्यारी। करन लगी परशंसा भारी।।१२५।।
सब कौ लाड बहुत विधि कीनौं। करजनि चटक वारनौं लीनौं।।१२६।।
अपु घर लै चलिवैं मन कीयै। हम जु समझि तब ऊतरू दीयौ।।१२७।।
साँझी पूजन की यह वार। रांनी समझि लेहु निरधार।।१२८।।
मारग देखति होइगी माइ। हम पै क्यौं अब बिरम्यौ जाइ।।१२९।।
महरि लगाइ रही यौं छाती। जैसें रंक न बिसरै थाती।।१३०।।
जब हम चलिवै कौ अकुलानीं। तब अज्ञां दीनी ब्रज रांनी।।१३१।।
तुम कौं बहु पा लागन कह्यौ। पुनि सन्देश कहि दृग जल बह्यौ।।१३२।।
राधा जननी लाइक जैसी। मोहि सूझैं जग में ऐसी।।१३३।।
मेरो अपनौ पन दृढ़ करि हौ। इत उत मन अभिलाष सुभरि हौ।।१३४।।

वचन किये जे परस्पर, हम तुम खिले सु चित्त।
राँनी ते सुधि कीजियौ, हौं सुधि करत जु नित्त।।१३५।।

कीरति सुनि कैं हियें सिहाँनी। महरि हियें की लाग सुजाँनी।।१३६।।
राधा बरनी आपु मुख बाँनी। कैसी लाइक व्रजपति राँनी।।१३७।।
कुँवरि सकुचि कै चुप ह्वै रही। ललिता ने जु कथा सब कही।।१३८।।
कोमल ह्दैं गिरा सुख सनी। उर उदारता दरसी घनी।।१३९।।
हम सौं प्रीति करी यह भांति। इक मुख सों बरनी नहिं जाति।।१४०।।
समाचार कहै जसुमति जिते। ललिता बरन सुनाये तिते।।१४१।।
सांझी की जु जात सी लागी। देखन आवैं सब अनुरागी।।१४२।।
कीरति पूरब सुक्रित कर्‌यौ। राधा प्रगटी सो लखि पर्‌यौ।।१४५।।
अस रचना प्यारी कर देखी। विधि हूं ते चातुरी विशेषी।।१४६।।
व्यारू सुहथ कराई माइ। जल अचमन करि पौढी जाइ।।१४७।।
सोरह तिथि भरि खेलीं इहि विधि। दिन दिन बढ्यौ प्रेम आनन्द निधि।।१४८।।
दिन दिन के जु खेल बहु न्यारे। सब विधि लग सबनि कौ प्यारे।।१४९।।
परिवा परब मनावति भई। भान सरोवर तीर जु गई।।१५०।।

बाजे बाजैं मंगल गावैं। श्री राधा सांझी जु सिरावैं।।१५१।।
भुज भरि भरि जु परस्पर मिलीं। मेवा बांटति अति सुख झिलीं।।१५२।।
वन्दन करि करि घर कौं आंई। कीरति सबहिं सखी पहिराइ।।१५३।।

राधा पद सेवति रहै, मंगल मूरति वंत।
वृन्दावन हित रूप निधि, आनन्द निकर न अन्त।।१५४।।
तात माल के लाड युत, कीनी खेल प्रशंस।
बाल विनोद प्रचुर करे, स्वामिनि श्री हरिवंश।।१५५।।[६९]

श्रीवल्लभरसिक जी कृत साँझी पद

राग गौरी

मेरी छैल छबीली लाड़िली मेरौ छैल छबीलौ लाल हो।
लियें छैल छबीली सहचरी खेलें छबीले ख्याल हो।।मेरी०।।१।।
वानी बानी यों भई धनि वनरानी रंग।
साँझी महल माँझी बनिज अलि मिलि पिया साँझी संग।।२।।
कह्यौ विसाखा सुखद्रुम साखा मंजुल भाषा चैन।
आजु सुकुँवारी जू कुँवरि साँझीवारी परवा ऐन।।३।।
सजि सिंगार बैठी ही चौकी चौकी योंकी प्रीति।
जो परवारी तोपर वारी फुलवारी चलि मीत।।४।।
भूषन छौनी मद गज गौनी धरि स्याम सलौनी नाम।
ललिता रस सलिता हित-बलिता ल्याई पूरन काम।।५।।
भोरी गोरी यों कह्यौ यह कोधौं री तेरे संग।
मोतन निरखत हरखत परखत वरषि श्याम घन रंग।।६।।
कही ललिता यह साँझी चीतन रीतन नीतन जोर।
गीतन सौं जीतन-जीतन सौं ल्याई इहि ओर।।७।।
श्याम सलौंनी सखी लखी हरषी राखी अपने साथ।
कुंज बाग अनुराग भागभरी चली हाथ धरि हाथ।।८।।
करे मोद विनोद कमोदिन निकसी संग अली अनेक।
हुलसीं-हुलसीं लसी अतुल जुग बदन शशी रस एक।।९।।

६९. ब्रज संस्कृति शोध संस्थान वृन्दावन, पोथी निधि अभिलेखागार, (डिजिटल संग्रह, छतरपुर)

मन लेनी पिक बैनी की बैनी सुदेनी की रही झलि।
ऊँची गुही जुही के फूलन सों जुही के फूलन सों फूलि।।१०।।
श्याम रंग रैनी चढ़ी तनैनी बैंनी मैनी की ढार।
छुटी है अपार सिंगार भार रस के नहिं टूटी धार।।११।।
चोटी हेम रतन जोटी नितंब पर लोटी आनि।
मानौं भूषन लपटे लपट भुज की लटकि-लटकि लपटानि।।१२।।
देखी चोटी श्याम फोंदा सँग लोटी झंझोटी-सी काहुक पाइ।
गोरी दई पीट पाछे तऊ लेत है पीठहि दीठ लगाइ।।१३।।
बैना मैना छवि सैना लै लूटत रस एनान।
पिय हीरा लै-लै हीरा निजु भरि राख्यौ हीरान।।१४।।
करनफूल करनन भूलत इहि तूल न भूषन जानि।
स्याम पनन मिसु स्याम पनन सों वाम कान लगे आनि।।१५।।
रूप भूप पकरीं सकरीं जकरीं निकरीं इक जाति।
बाँधी मुक्तानु की बंदी-बंदी वाननु क पाँति।।१६।।
झूमि-झूमि रहे झूमक धूम करत कपोल पर आय।
करनफूल वस्यौ श्याम करन, फूल करन देत छुवाय।।१७।।
नैन लैन छवि पाइक नाइक सायक सम चल्यौ है उमंग।
ता छवि पाइक के पाइक की झूमक मिस झमकी है जंग।।१८।।
सुरक जु उर कहँ धुरकहँ पैठि चतुरकहँ जीत्यौ जाइ।
बैठी आड़ौ दै तकिया छकिया तकि याहि पिया सरसाइ।।१९।।
कबहूँ चोबा बेदी बाल भाल जोवा जो वाकौ साम।
सो वाके बस होवा घर खोवा को वाके धाम।।२०।।
लाल-लाल दल की बेदी ललकी झलकी दई वाल।
लिख्यौ विधाता भाल विलास सु झलकत लाल रसाल।।२१।।
हारे अनियारे विषहारे सानन धारे बान।
वे अजान लै नहीं जानत चख लै दै जानत प्रान।।२२।।
खंजन मीन प्रवीन लीन बन हीन लीन उपमान।
कुँवर कुरंग तुरंग दौर चख ओर चकोरन आन।।२३।।
चख उपमा आसन कमलासन आसन निजु तनु कीन।
विमल जु हृदय कमल कमलज कौ धूल कमल मुख दीन।।२४।।

मदन सिंगारे चख मतवारे कजरारे कजरा दीन।
तारे मधि धारे प्यारे कों भारे कारे कीन।।२५।।
जिन अँखियाँ में बखियाँ-सी दै रखियाँ अखियाँ की दौर।
जिन सखियाँ ये अँखियाँ लखियाँ अखियाँ लखियाँ नहिं और।।२६।।
नैनन राजत नव युवराज विराजत सैनन कांति।
तानैं पलक वितान तरुनी अरु नीकी वरुणी झालर झुलि जात।।२७।।
लहलहात-सी जुटीं जुटी भृकुटीं कुटिल लकुटी कर फेरि।
नायक अनंग नचावत अंग नाइक-नाइक मति हेरि।।२८।।
भौहे चढ़ीं गढ़ी धों किहि-विधि पढ़ीं कुटिलता कोरि।
गरब अरब छबि बढ़ीं कढ़ी मति बढी गढी लेहि तोरि।।२९।।
शुक नासा स्वासा सुगंधि आसा अलि फिरे चहुँ कीद।
नासा हँसि बैठे नासा दासायित लहि आमोद।।३०।।
दौर मनोरथ की पथकी सुथकी नथकी छवि जोहि।
दृष्टि परी रसके चसके न सकैं चलि मोहि।।३१।।
नथ मनमथ कौ रस रसिकन की दृष्टि पथन चढ्यौ जाय।
यह अकथ कौतुक जु थक्यौ है दृष्टि पथ कौं लेत चढ़ाय।।३२।।
गोल जु गोल गपोल अमोल तमोल रँगन झलके।
लेत है अमोल तोल बिनु पल में लोल परन पलकें।।३३।।
दर्पन सम सुनि दर्पन पन गहि गई कपोलन भूमि।
निपट सुपटु दृष्टिन पग रपटत चपटि रही तिहिं भूमि।।३४।।
लाल अधर लालन मन अधरहि अधर सुरंग धरे।
हँसन में श्याम दसन दरसन कैसे उज्वल रसन भरे।।३५।।
पिय चोंपन-चोंपन सों निरखत चख सोंपन पन लीन।
खोंपन-खोंपन कर कौं मन्मथ मन कौं पनि पण कीन।।३६।।
तिल-तिल में लखि तिल-तिल सम किय वदन प्रयागहि पीय।
आइ तिल ह्वै कपोल चढ़्यौ सुचि रस मढ़्यौ सोवत जीय।।३७।।
आयौ फुख गहने चहने मन चिबुक लौं सुचि रस मह नेंकु बोरि।
गहनों सौ लखि करि गहनों लहनों जु विंदु कियौ मोरि।।३८।।
लटकी लट खटकी अटकी मन कहों घटकी उपमान।
चकफेरिन सों चख के फेरन की खेलन की मदन चौगान।।३९।।

श्याम सारी में मोतिन वारी हेम बारी कानन माँझ।
तासों जुरी जु अलक मनों घन बिजुरी अरु फुरी तारा घुरी साँझ।।४०।।
ककरेजी सारी में सुघर करेजी सोहे हेम फूल।
जकरेजी जार सिंगार रसिक अकरेजी मानत फूल।।४१।।
उरजन पर जनु परत लखी कंचुकी पर बंद सुदेस।
पक्षि किशोर वे ह्वै उड़े सपक्ष गिर परे विपक्ष शिशु देस।।४२।।
अतलस लहँगा हेम खत लसत लिखे मत लसत है प्रेम।
लखि पिय मन घूमत-घूमत यह क्यौं धौं घूमत गहि नेम।।४३।।
एक ओर ते उलटि छोर सिर छर्‍यौ जोवन के जोर।
मिले अलक झलकन सवाद लै हले बादले छोर।।४४।।
कियौ उदोत स्याम पोतनु की ज्योतिनु की बस लाल।
महिं सिंगार नदी न कँपत तप तपत मन लाल।।४५।।
लरी लरीं जु सतलरी की धरी ग्रीव छबि भरी तीय।
लिये सिधारे भारे व्रत धारे प्यारे मिलि टूटन जीय।।४६।।
लखि चंपक बरनी कै भली चंपकली निकली कहें लाल।
भई तरुनी यह तरुनीन में कौतिक चंपक तरुनी डाल।।४७।।
जिहि जगमगात मधि नायक कांति सुभाँति उरवरी पाँति।
सोहैं सो हमेल करि केलि अस उर झेलि झलकाँति।।४८।।
कलस कला रस गुन उर बाला हाला रसाला दीन।
झुली ह्वै बिहाला मुक्तन माला लाला मतवाला कीन।।४९।।
चोली गहे चख पै द्विवली त्रिवली रस अति बली मेंन।
लखि चोरी तहाँ ऐन बनी निकसें न मैंन सैंन बैंन।।५०।।
मोरन लगिया अँगिया लगिया कौ, पिया कौ हिया भयौ बौर।
धर्‍यौ मोरि मरोरि करोरि रसिक वर मोर मरोरत मोर।।५१।।
मुहरा कंचुकि मुहरा धरि जुहरावै बुधि बल मीन केत।
पिय मनसूवन दुहरावै मुहरा तन मुहरा जे हेत।।५२।।
बैठ्यौ बाँह माहिं गड़ि पैठ्यौ ताइत ऐंठ्यौ स्याम स्वतंत्र।
तामें सुवरण चित्र मित्र चख चित्र समान करन के मंत्र।।५३।।
बाजू में बाजूबंद रतन झवा झूलत मखतूल।
करें इहि बाजूकौं बाजूहि बंद शोभा जु चढ़ै न डीठ मूल।।५४।।

स्याम पोत सुवरण पोतनु मिली को तिहि उपमा होत।
रीझि लपटन भुज लपटन दंपति अंग जोत।।५५।।
कर गुजरी मकरध्वज री जरियाँ जु जरी मनों जानि।
मणि बेलि गची रति केलि सची ललची चख लाल की आनि।।५६।।
लाल मूँगा ह्वै बिध्यौ गूँगा काहू गायौ न नवीन।
कर मोतिन छर सित जोतिनु हो तिनहूँ करत रंगीन।।५७।।
रतन चौक मधि लाल नोंक छबि रतन सोक की भाँति।
हाथ लालन कियौ हाथ लालन की बद्धी के लालन की कांति।।५८।।
महँदी हाथ महँदी तिहि दीये हाथ लाल करि चित्र।
तासों नेह लगाइ जगाइ रँगन सों रँगाइ नैन करे मित्र।।५९।।
स्याम छलन की छबि बलयन उछलन पहुँची-पहुँची जाय।
पिय अँगुली रँगुली सँगु लीय पहुँचन पकरन के भाय।।६०।।
रतन मुद्रिकन मुद्रित किय नृप क्षुद्र करन दान गान।
निज कर निकरन सों जु करन कों दिय सुवरण कौ दान।।६१।।
मीना रंगीना आरसी नवीना सखी प्रवीना जानि।
यह आगे ह्वै-ह्वै वदन मदन सदनहि बनबावत आनि।।६२।।
छिंगुनी ऊपर छल्ला नूपुर भूल भूपर मनौं छबि जात।
गाढी तार बँधी कौतिक ह्वै गोल बोलत डोलत न चुचात।।६३।।
कटि अटके सफा नेफा में नफा चख जाँनि।
राखे सँवारि करि वर नितंव अंवर ह्वै जघनन आनि।।६४।।
सघन जघन सु मदन के सदन लखि रीझ पचाई न जाय।
अतरौटे की सलौंटें ह्वै चख लोटे पाँइन आय।।६५।।
रतन गूजरी लखि छवि जोरा जो राख्यौ ठौरान।
नृप रसिक महा उर बस्यौ लस्यौ दरस्यौ लै छत्र मुक्तान।।६६।।
पाँइन पायजेव सौं बजाय मुल्याइ लिये हैं जेव।
तिन मन रतनन की धन की धरन की पायजेव करी जेब।।६७।।
जाली की चुटकी ह्वै गौर छबि छुटकी घुटकीं नैन।
मनों मित्र कमल दल अमल अँगुलिनु छानि अमल लग्यौ दैन।।६८।।
रागी अनवट भट छवि लागी पागी ज्ञान डरात।
ये चढ़े अँगूठन गूंठन परबत मनि कूटन चढ़ि जात।।६९।।

इहि बिधि बनि ठनि चली अली रँग रली भलीं छबि भीर।
पुंजन-पुंजन गुंजत अलि जित मंजुल कुंज समीर।।७०।।
भई झनक-झनक पुनि ठनक उपवन में बनक अपार।
मोहद धुनि दोहन सों हद तजि फूल्यौ षट ऋतुसार।।७१।।
भई फूलन फलन दलन पल्लवन लता बनिता इक सार।
बहु फूलन लहि फूलीं-फूलीं झूलीं-झूलीं गहि डार।।७२।।
लता प्रतानन मध्य भुज लता गहत लता भ्रम भूलि।
कुसुम दलन भ्रम अधर दलन की होत दलमलन फूलि।।७३।।
अधर रस चखी श्याम सखी लखी बोली ठोली भाषि।
करें तमासे मधु रस गाँसे वासे फूलन चाखि।।७४।।
श्याम सलौनी भई अगौनी वौनी के समतूल।
लौनी अंस चढ़ी नीकें धुर फूल।।७५।।
तब रही पींडुरी करन मींडुरी कही न हींडुरी मूल।
बीनत एक चढ़ी ही चढ़ी पुनि चढ़ी दुहुँन कर फूल।।७६।।
गुलतुर्रा की डाँड़ी बैंना पैं माँड़ी छाँड़ी भुलाइ।
मद गज गौनी की गज गौनी अलि, निजु गों लीनी बलाइ।।७७।।
एकन फूलन सों री चोंरी रचि गोरी पर ढोरी आन।
सोंधे डोरी डोरी भोरी भोंरन में भई भहराँनि।।७८।।
पटुका फूल सुपट काहू लटकाए अंस दुहुँ ओर।
बद्धी की भाँतन लटके मटके सटके कटि छोर।।७९।।
भरि-भरि झालन मालन गुहि-गुहि मालिन ल्याई न थोर।
लै-लै जनेउवाँ डारी बालन व्यालिनि हालन जोर।।८०।।
चलीं खेलि फूल लै लटकत मटकत अटकत साँझी रंग।
तब नवललाल-सी अबला लसी नवला सी फेरी संग।।८१।।
गोरी-गोरी गावहिं चौंर ढुरावहिं आवहिं साथ।
कोई सिंगार-हार की गेद खिलार उछारहि मारहिं हाथ।।८२।।
कोयल-सी नरगिस के कूजन लै कोई लसीं कूँजि उमंग।
धरे संस्रित अवतंस रसिक अवतंस अंस धरि अंग।।८३।।
इहि विधि अलबेली बेली-सी खेली अलि-अलि रंग।
आई महल माँझ साँझी कों चहल पहल लियें संग।।८४।।

एकन पन्न की भीतन पै गुलाब रस भिन्ना छन्ना फेरि।
मृग मद गारे सों लै सुधारे चंदा तारे हेरि।।८५।।
जे करत उज्यारे हरत अंध्यारे सब सिर धानि जानि।
ते तिय सन्मुख लागे कारे विधु-तारे धारे मानि।।८६।।
पीत फूल सनके चीतत रँग चीतत मीत सहेलि।
तरे कोई लै कोइल फूल धरे भरे कोई लखि चख झेलि।।८७।।
चीतत नीके लाल बनी के फीके लागत फूल।
तब ढाँपत नीके अँगुरी के गोरी के अधरन मूल।।८८।।
हँसि-हँसि परत अधर परसत दरसत सिर कुसुमन आँहि।
तब कहें होत है बरजन चीतन गरजन बरजन अलि बलि जाँहि।।८९।।
तब कर उचाइ वर चाइ धाइ चौकी चढ़ि चीतत आइ।
अलि उर चौकी उकसत गौंकी कर चौकी देत बैठाइ।।९०।।
रंजत चलत ललित कर पल्लवन हरित पल्लवन लाइ।
बचे बीच में सचे रचे गचे सुवरन पत्र मँगाइ।।९१।।
यों चीते पचरंग अंगन में जगमगे रँगमगे लगे विधु विंब।
मनों भूषन भूषित निरदूषन बहु मुख भूषन प्रतिविंब।।९२।।
फेरि करैयन चीते तरैयन लेहि बलैयन आलि।
छला छन्न धुनि जीत अमीतन जीतन जीतन हाल।।९३।।
दूजी अलि मिलि चीतन पूजी-पूजी सबकी आस।
गीतन गावहि मीत मल्हावहिं प्रीति बढ़ावहिं हास।।९४।।
श्याम सखी कर करषी हरखी सखी मंगली आइ।
सेवी कों सुख देवी देवी की मूरति धरी मध्य बनाइ।।९५।।
षोडस विधि सों नव निधि रिधि सों सिधि सों पानि पुजाइ।
भोग धरे वाकों मेवा सेवा फल कहि मुसिक्याइ।।९६।।
करत आरती लिये थारती जै-जै भारती संग।
दीप-दीप की दीपति रीझी दीपन मिसु वारत अंग।।९७।।
सबन सीस नवायौ गोरी पै कहायौ मंत्र सुहायौ येह।
नमो देवि जय देहि-देहि मम श्याम सनेह अछेह।।९८।।
तब श्याम सखी मन उमह्यौ प्रेम गह्यौ ज्ञान रह्यौ नहिं देह।
देवि जय देहि-देहि मम गोरी नेह अछेह।।९९।।
तब चौंक परी चितई हित वचन नचन में रचन पण जोर।
विहँसि परीरस भरी खरी सिगरी लखि नवल किशोर।।१००।।

कोऊ दीपहि ल्याई ढिंग घिरि आईं हुलसाईं सुकुँवारि।
वदन निहारे उरज उघारें हारें-हारें वारे रिझवारि।।१०१।।
तब अलि काहू चलि काहू मिसु पलका हू लिये बैठाइ।
पाग जरकसी कसी लसी सिर कल कलँगीहि भुलाइ।।१०२।।
नीमा छवि सीमा ग्रीवा धरि ग्रीवा धार्‍यौ पीय।
सुवरण बूटी पर चख टूटी लुटी छुटी नहि तीय।।१०३।।
सोहे सिर जूरे कर चूरे मोती चूरे मोदक पानि।
बाँटहि मोदन सों चहुँ कोदन गोदन भरि मेवान।।१०४।।
धरे रतन थारमें आनि-आनि पकवान थान अलि आन।
सोहें आनन ही सों लगे हिलगेहि खबावनि खानि।।१०५।।
तहाँ लीन अली अलिन जु लीन ह्वै बीना में मीनकेत की बात।
पान खात लपटात गात उरजात परस सरसात।।१०६।।
आसब झोकन आसन रोकन हसि अलोकन मोद।
कोक कलान के ओक दुहुँन के को कहि सकै विनोद।।१०७।।
लखि साँवल-गौर अमंद चंद रति द्वन्द सुछंद बिहार।
बढ़े रस सागर परन पढ़े मन कढ़े चढ़े न करार।।१०८।।
जिनके इहि रस मन गसि जुगल महल बसि निकसि न बनहुँ लखाँहि।
बल्लभ रसिक ते महल साँझी माँझी छकि जाहिं।।१०९।।[७०]

❀

श्रीमदनमोहनदास जी कृत साँझी पद

ए यह शरद मास कल खेल सम्पदा लायौ।
ए लखि मन उमगायौ सब मिलि मतौ उपायौ।।
ए हाँ सब मिलि मतौ उपायौ आयौ औसर नीकौ।
साँझी खेल खिलावैं अपने प्यारी-पी कौं।।
यौं सब अली विचारिकैं हो आईं दम्पति पास।
विनय करत कर जोरिकैं हो सब मन अधिक हुलास।।
शरद सुहाई आई सुषमा नव वगराई।
चाहत तुमहिं लड़ावनि प्यारी फूलन लाई।।
सब मिलि चलिये फूल कौं हो देखौ फूली साँझ।
फूलनि सौं फूलनि बिनैं हो अपनी ओलिनु माँझ।।

---

७०. वल्लभ रसिक जी की वाणी, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

सघन कुञ्ज कमनी ते मल्लिका मृदु अरनी तें।
तोरि फूल मन चीते आइ सुठि साँझी चीतें।।
आयौ मन कौ भाँवतौ हो साँझी कौ त्यौहार।
सन्ध्या सुफल सु कीजिए हो रसद परम दातार।।
सुनत सखिन के बैन चैन पिय-प्यारी पायौ।
अति आनँद उरन बढ़्यौ उझलि नैननि में आयौ।।
मुसकि कह्यौ हित स्वामिनी हो तुम मो सब सुखदान।
मोहि रूची वेगहि चलौ हो सन्ध्या अति नियरान।।
एकत ह्वै सब चलीं मध्य हित दम्पति लीने।
मानहुँ उड़गन मध्य युग्म उड़पति छबि दीने।।
गावत सब मिलि संग में हो कोकिल सुर अवहेलि।
गवनी गहवर बीच जहँ हो लदे सुमन तरु-बेलि।।
भ्रमर करत गुञ्जार जहाँ मुदमय मनहारी।
शीतल-मन्द-सुगन्ध बहत मारुत रूचिकारी।।
खिली चमेली-मालती हो रायबेलि सुखमूल।
गिने परत नहिं कहि सकौ हो अलि-संकुल बहू फूल।।
प्रीतम के मन आई कछु सेवा सुख लीजै।
सखि बनि साँझी चीति प्रिया जू कौं सुख दीजै।।
हौं हूँ लाऊँ तोरिकैं हो फूल सघन उहि कुंज।
और न कोऊ चुनि सकै तहँ छाइ रहे अलि पुंज।।
आयुस लै प्यारी ते चाह भरे हिय भारी।
भरे उमाहन हीय चले रस निपुण बिहारी।।
मोद विनोदन सी करत हो चलीं इतहि सुकुमारि।
फूलि उठे दृग सबनि के हो नव-नव फूल निहारी।।
विविध रंग के फूलनि तोरति सब सहचारी।
हँसति-हँसावति खेलत किलकारत अति भारी।।
गोद भरी बहु फूल सौं हो बहु फूलन मन माँहि।
कुंज महल अब चलहु सब हो साँझी सुख विलसाहिं।।
पूछी प्यारी अरी नवेली कहँ तें आई।
अबलौं लखी न तेरी जैसी सुन्दरताई।।

अतिहि लजौंहे नैन में वह कहत कछू मुख मौन।
बिनु बोले रौ रो करत रस सखी नई यह कौन।।
कर गहि लीनौं श्यामसखी कौ श्यामाप्यारी।
गावत गौरी राग चलीं सँग सब सहचारी।।
पहुँची निज हित कुंज में हो सखिन नई अगवानि।
सखी लखी सँग में नई हो सबै करत उनमान।।
अरी नवेली! वारि करै जिन बोलीं प्यारी।
कला कुशल साँझी की करि अब प्रगट यथा री।।
स्वेत सुमन लै वह रचै हो अद्‌भुत उड़गन पाँति।
निरखत छबि उड़गन कबहुँ हो कबहुँ प्रिया नख काँति।।
उरझे से रहि जात तहाँ साँवरि के नैना।
तबै सखी सब कहत अरी साँवरी! रचैना।।
मन की डोर न कर रही हो तन को करै सम्हार।
रोम-रोम फूलन छई हो प्यारी रूप निहार।।
असुधि ससुधि सी होत समुझि पुनि-पुनि फिसली सी।
ज्यौं ज्यौं मनहिं समेटत त्यौं त्यौं गति चपली सी।।
ज्यौं त्यौं उछरी डूबिकैं हो चख भये चपल चकोर।
साँझी में शशि रचत है पै लखत प्रिया-विधु ओर।।
पुतरी सी ह्वै गई न देखै टुक इत उत री।
प्रिया वदन-विधु माँहीं टिक गईं नैननि-पुतरी।।
अहो स्वामिनी! कहा भयौ ये कौतिक नवल अनूप।
साँझी की रचना करत भई आपुहि साँझी रूप।।
गहवर में तें निकसि तबहि बोलीं हित स्वामिनी।
तुम सब नीकैं देखौ परम कुशल हो भामिनी।।
याकी पुतरिन हम लख्यौ हो प्रिया तिहारौ रूप।
हमें सबै जानी परै ये पीय रसिकवर भूप।।
उमगि अंक भरि लीने प्यारी प्रीतम नागर।
लखि सखि विथकित रूप रसिक के रूप उजागर।।
(श्री) हित अलि विवि सम्हराय तब हो दीयौ छदम बढ़ाय।
प्राणनि पोषे मुदित मन, हो व्यारु दुहुँनि कराय।।

पुनि पौढ़ाये तलप केलि के अति अनुरागी।
हित चिन्तक सब अलीं चलीं रन्ध्रनि में लागी।।
श्री हित दम्पति सुख सेज पै हो कीये विविध विलास।
सोये मुदु छतियान लगि हित मदनमोहन बलि दासि।।[७१]

बिहारिनिदास जी कृत साँझी पद

आजु साँझी रंगमहल खेलैं पिय-प्यारी।
सखी रूप श्याम कीनैं ओलीन पुहुप लीनैं, एक तें एक सरस उजियारी।।
सखी के जूथ चहुँ ओर सोहत हैं, गावत परस्पर रंग रह्यौ भारी।
कोकिला जलत मृग मधुप कमल शशि, केहरि लजित दाड़िम दुति हारी।।
गौर-श्यामल सोहैं निरखत मन मोहैं, इहि विधि शरद निशा सुखकारी।
बिहारिनिदासी राजत वृन्दावन तहाँ, नित राधिका-नवल गिरिधारी।।[७२]

प्रेमदासजी कृत साँझी पद

राग-गौरी

अरी हेली! रंग रँगीली लाड़िली, प्यारी खेलति साँझी साँझ हो।
लियैं ललित सँग सहचरी, नव कुंज महल कैं माँझ हो।।१।।
लाल रसाल रुमाल माँहिं लै, फूले फूल सुरंग हो।
मदन-सदन कौं रचन चले रचि, रचत तलप नव रंग हो।।२।।
तब लगि ललिता ललित लली सौं, कही बात हित जानि हो।
सुनौं कुँवरि! मिलि खेलैं साँझी, यहै खेल रसखानि हो।।३।।
सुनति सखी के वचन छबीली, फूली उठी मन माँहिं हो।
रमकि झमकि चमकति चपला सी, हँसि-हँसि परति उमाँहिं हो।।४।।
नीलाम्बर सारी तिय-तन जुत, हेम पुहुप अरु सेत हो।
सुन्दर सरस श्याम घन में मनौं, वग-उड़गन छबि देत हो।।५।।
अँगिया अरुण बनी कटाव की, कसी कुचनि पर खैंचि हो।
मनु अनुराग-जाल में लीने, चक्रवाक से ऐंचि हो।।६।।
लहकि हरित लहँगा लाग्यौ कटि, लेत घेर मन घेर हो।
लावनि लागे मुक्तावलि फिरैं, लगि लावनि कैं फेर हो।।७।।

---

७१. मदनमोहन जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
७२. वर्षोत्सव के पद - राधाबल्लभ मंदिर, वृन्दावन

सीसफूल सौं लगि मुक्तालर, लगी तरौंननि जोर हो।
मनौं सूर छबि-चकरिनु खेलत, कियैं रूप की डोर हो।।८।।
चंचल नैंन समात न अंचल, विहँसत वदन अनूप हो।
मानौं चंद फिरावत कमलनि, बरसावत रस-रूप हो।।९।।
नासा की तिलक तूल न पावत, फूल्यौ तिल-तिल होय हो।
तन पिसाइ तऊ नेह भयौ इति, मुँह न हिलायौ सोय हो।।१०।।
कंचन की बनी नीलमणी सौं, नासा ललित लवंग हो।
सुवरन चंपक लियैं भली विधि, पियत रंग सौं भृंग हो।।११।।
आतप में तपि जपा जप्यौ जप, हौंन अधर सम आय हो।
सूर प्रवीन भाति हिय ताकैं, दई कलौंस चढ़ाय हो।।१२।।
रचित पान रसखान दसन-दुति, रहे अरुनता-पूर हो।
मानौं रूप-सिन्धु में पैरत, मुक्ता रँगे सिन्दूर हो।।१३।।
कर मँह दी मँहदी की बैंदी, बाढ़ी अमित उदोति हो।
मनौं कमल में बैठीं बनिठनि, चन्द्रवधू करि जोति हो।।१४।।
पग की सम करिवे कौं आये, थलज-जलज छवि-सींव हो।
ताही तें कंटक में डारे, उपजत तहीं सदीव हो।।१५।।
कुसुम-छरी सी खरीं छरछरी, कुसुम-छरी कर-लेत हो।
अली भली रस रली लियैं सँग, आई कुसुम-निकेत हो।।१६।।
अलबेली इक धाई आई, कहति श्याम सौं बैंन हो।
चलौ कुँवरि कौ कौतुक देखौ, सफल करौ निजु नैंन हो।।१७।।
अरबराइ चल्यौ लाल ख्याल हित, बाल भेष धरि मीत हो।
मनौं बाल कैं ध्यान लाल भयौ, कीट-भृंग की रीति हो।।१८।।
श्यामसखी कौं लखि श्रीश्यामा, मोहित ह्वै बतराय हो।
को है री! तू रहति कहाँ, तेरौ नाम कहा सुखदाय हो।।१९।।
सुनि प्यारी! हौं तोपर वारी, तूही मेरैं प्रान हो।
मोहि कहति सब राधादासी, तेरी सखी सुजान हो।।२०।।
तब ललना लड़काय बाहु निज, पिय-अली ग्रीवाँ डारि हो।
श्याम फूल चुनैं गौर चुनति त्यौं, गौर श्याम फुलवारि हो।।२१।।
रँग रँलियाँ अलियाँ झिलमिलियाँ, लै रँग डलियाँ पानि हो।
बीनत कलियाँ बहु विधि खिलियाँ, करत मधुप-सँग गान हो।।२२।।

सौंनजुही के सो न जुही के, सौंनजुही लै फूल हो।
बैंनी छबि-सैंनी गुहि अलकनि, धरति जु ही के फूल हो।।२३।।
चुनति मोतिया चंद-जोतिया, मोतिया रद चमकाय हो।
करत ख्याल रचि माल बाल कौं, पहिराई हुलसाय हो।।२४।।
पीत चमेली सित रास झेली, अलबेली अलि बीन हो।
पाइजेब रचि पाइनु डारी, पहुँची पहुँचनि कीन हो।।२५।।
मृदु मल्ली चन्दन मल्ली की, कल किंकिनि अलि ल्याई हो।
बाँधत कटि में कटे झुके हरि, लखि-लखि तिय मुसिक्याई हो।।२६।।
मौलसिरी कौं सिरी दई अलि, ताके फूलनि तोरि हो।
तिनकी बैंदी रची भाल पर, लाल-बाल-रँग-बोरि हो।।२७।।
फलीं डारि नवाइ नारि नव, चुनति फूल रस-मूल हो।
ललित लतनि गहि लटकति तिन पर, झमकत झौंरा फूल हो।।२८।।
फूली फुलवारी में सजनी, फूली साँझ सुहात हो।
अरस परस फूलनि के भूषन, पहिरति फूलीं गात हो।।२९।।
फूलनि की गेंदैं-नवलासी, रचीं नवल नव भाँति हो।
खेलति खेल बचाय धाय धपि, कुलकि-कुलकि किलकाँति हो।।३०।।
कमल-मुखी दृग-कमल नचावत, ल्याईं कमलनि भाम हो।
लै कर-कमल फिरावति गावति, आईं साँझी-धाम हो।।३१।।
हीर-भीति लै नीर सुगंधनि, धोई पौंछि बनाय हो।
लाल गुलाल अरगजनि लै-लै, लीपति बाहुँ चढ़ाय हो।।३२।।
मृगमद घोल अमोल अनूपम, केशरि कलित पिसाय हो।
रचत उभय मूरति मनमोंहन, गौर-स्याम छबि छाय हो।।३३।।
कंचन के फूलनि सौं चीती, मूरति साँवल वाम हो।
मूरति गौर श्याम कर चीतत, लै-लै फूलनि श्याम हो।।३४।।
हितरूपा अलि कहत लली सौं, ये हित देवीदेव हो।
मन-वच-क्रम करि पूजौ इनकौं, सफल हौंहि सब सेव हो।।३५।।
धरति भोग भामिनि गजगामिनि, भरि-भरि कंचन-थार हो।
मोदक मकरंदी मधु मेवनि, रचि-रचि धरति सँवार हो।।३६।।
कनक-कचौरा धरे भोग भरि, दिपत थार मधि चारु हो।
मानौं विमल चन्द सौ चमकत, पहिरैं उड़गन-हार हो।।३७।।

शीतल जल पिवाय अँचवन दै, बीरी धरी रचाय हो।
हित-आरति आरती उतारति, बाजे विविध बजाय हो।।३८।।
श्यामलसखी विनय करि माँगति, नेह कुँवरि-सँग देहु हो।
करि दण्डवत कहति तिय दै मोहि, देवी! पिय-सँग नेहु हो।।३९।।
पूजि-पूजि करि सखी-सहेली, मिलति सु भरि-भरि अंक हो।
देति बधाई गावति माई, फूलीं फिरति निशंक हो।।४०।।
श्यामसहेली गौर नवेली, मिलति मानि सुख चैंन हो।
मिलत बाल सौं लस्यौ लाल कैं, अंग-अंग में मैंन हो।।४१।।
छल सौं जानि हाल दै पिय की, छाती छुवति सुछंद हो।
कुच न लखे मुख मोरि हँसीं तिय, जान्यौं पिय कौ फंद हो।।४२।।
हँसि-हँसि परीं सखी सब लखि-लखि, बाढ़्यौ आनँद-पुंज हो।
ललिता ललित विनय सौं ल्याई, दम्पति कौं रति-कुंज हो।।४३।।
भोजन भलैं कराय दुहुँनि कौं, बैठारे सुख सैंन हो।
दोऊ मैंन के चैंननि भीने, निरखि शरद की रैंन हो।।४४।।
भरि-भरि गोदनि बाँटत मेवनि, सहचरि चहचर छाँड़ हो।
खात-खवावति हँसति-हँसावति, भरीं दुहुँनि कैं लाड़ हो।।४५।।
यौं कौतूहल करति सहचरी, नित प्रति चोंज बढ़ाय हो।
सदा सुखी दम्पति के सुख सौं, और न इन्हें सुहाय हो।।४६।।
जो यह साँझी पढ़ै-पढ़ावै, गावै हित कैं भाय हो।
प्रेमदासि सौं साझौ पावै, या साँझी में आय हो।।४७।। [७३]

श्रीघनश्यामजी कृत साँझी पदावली

राग– गौरी

श्रीवृषभानु लड़ैती गाईये कीरति कुल मंडल बाल हो।
सोंने की-सी बेलि है तन चंपे की-सी माल हो।।१।।
हंस गमनि मृग लोचनी श्यामा शोभित सहज सिंगार हो।
चमकत चंचल चीकने सिर सटकारे वार हो।।२।।
प्रतिविंवित कच श्याम सीस पर शोभित सुंदर सार हो।
चंद के फंद परे अहिनंदन अरुझै कंचन जार हो।।३।।

७३. वर्षोत्सव पद संग्रह – रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

अतलस कौ लहँगा फब्यौ दरियाई की अँगिया पीत हो।
उरज सुभट कंचन कवच सजि आए रति रन जीत हो।।४।।
कृश कटि केहरि देखि दुरे हरि जेहर तेहर पाँय हो।
गज गवनी अवनी कवनी रवनी लेत बलाय हो।।५।।
कर चूरौ रलकै झलकै पलकैं न लगैं पिय देखि हो।
अँगुरिन मुँदरी पहुँचिन गजरा बाजूबंद विसेखि हो।।६।।
चंपकली चौकी चमकै दमकै दुलरी पिय पोत हो।
चित कौं लेत चुराय चाहिकैं वदन चंद की जोत हो।।७।।
अधर अरुन दमकै दसनावलि श्याम चपलता चारु हो।
कमल कोष में पंकति सौं बैठे मानौं भृंग कुमार हो।।८।।
बेसर कौ मोती लटकैमटकै खटकै प्रिय प्रान हो।
सुवन बनी रुचि मनी कलक की तनक तरकुली कान हो।।९।।
प्रिय तृष मोचन रति रस रोचन चंचल लोचन चारु।
कुँवर किसोर चकोर चैंटुआ पढ़त चंद चटसार।।१०।।
अलि कुल गंजन रति रस रजन नैंनन अंजन दीन।
क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ जनु मनसिज के मीन।।११।।
समर सहायक सायक घायक नव रस नाइक नैन।
कुँवर कुरंग सुरंग कँवल कानन सौं ठानत ठैन।।१२।।
कारी झपकारी भारी बरूनी बरनै कवि कौन।
भौहैं मन सोहैं मनों हाव भाव के भौन।।१३।।
सीसफूल सोहै मोहै बनी तनक कनक की आड़।
चिबुक चारु मुसिकाय हँसत जब परत कपोलन गाड़।।१४।।
सु भवरिया दुपहरिया के फूल की बेदी दीनी भाल।
इंद्रवधू मनौं नवल चंद कौ आय मिली नव बाल।।१५।।
इहि विधि छविन अगाधा साधा राधाजू सखियन माँझ।
बिटियाँ बहुत अहीरन की मलि खेलत साँझी साँझ।।१६।।
गोधूरक बिरियाँ डलियाँ फूलन कीलै चलीं हाथ।
बीनत फूलन जमुना कूलन श्यामाजू के साथ।।१७।।
एक कियें ओली चोली पर चाँपि चिबुक तर चीर।
तोरत तनहि मरोरत जहाँ भँवरन की भीर।।१८।।
एकन लावन ललित सु पट की अटकी कटि सौ छीन।
रमकि झमकि पल्लव बनाइ तरु बीनत फूल प्रवीन।।१९।।

जाई जुही केतकी निवारी चँबेली अरु बेल।
फूलन की गुहि गैदें बाला खेलत बन में खेल।।२०।।
कुंदी कुंद करनकोमल निवारत अबला बेलि।
ललित लवंग लता बनिता पर रहे झूँमका झेलि।।२१।।
मौलसिरी के फूलन की नकफूल बनावत एक।
श्यामा सुख धामा अभिरामा खेलत खेल अनेक।।२२।।
कुंजबिहारीजू तिहि छिन दुरि देखत कुंजन ओट।
रहे चित्र केसे चीतै दृग लगी दृगन की चोट।।२३।।
कियौ सखी कौ रूप लाल भरि लै गुलाबदल गोद।
तिया रूप धरि दरस कियौ हरि मान्यौ मन में मोद।।२४।।
निरखि-निरखि वृषभानु नंदिनी बोली वचन रसाल।
सब सिंगार सोहै मोहै तू कोहै री नव बाल।।२५।।
क्यौं है फिरत अकेली हेली इह वन जमुना कूल।
नन्दगाँव घर साँझी कौं हौं बीनन आई फूल।।२६।।
उतकण्ठित वृषभानुनंदिनी कण्ठ भुजा गहि मेल।
आजु अबार भई साँझी कौं संग हमारे खेल।।२७।।
सखी लईं सब बोलि-बोलि गोरभन धुनि सुनि कान।
बड़ी बेर जैहैं घर तौ खिजि हैं बाबा वृषभान।।२८।।
कमल फिरावत गीतन गावत आवत घर ब्रजलाल।
फूलन की करि गैंद लकुटिया फूलन की उर माल।।२९।।
कंद्रभगा चंद्रावलि चंचलनैनी चली हैं धाम।
बहुत फूल बीने भटू अरु पूजे मन के काम।।३०।।
माय धाय उर लाय लई कीरतिजू परम प्रवीन।
अरघ बढ़ाय लई घर भीतर आपु आरतौ कीन।।३१।।
मृगमद केसर चंदन सौं श्यामाजू लीपी भीत।
कामधेनु के गोबर सौं रचि साँझी फूलन चीत।।३२।।
धूप दीप अर्घ भोग अमृत धरि आपु आरतौ उतारि।
गावत गीत पुनीत किशोरी श्रीवृषभानु कुमारि।।३३।।
करि व्यारू सँग खेल चलीं सब अपने-अपने धाम।
राधाजू अरु नवल सखी सुख विलस्यौ चास्यौ जाम।।३४।।
तिय बागौ ललिताहि दियौ राधा पिय चतुर सुजान।
रसिक रूप धरि क्रीडत हरि रस सागर प्रानन-प्रान।।३५।।

शरद निशा सुख इहि विधि राधा माधौ नित्य विहार।
सोभा पर बलि जाइ श्यामघन अवलोकत सुख सार।।३६।।[७४]

⊛

राग– गौरी

कुँवरि लड़ैती खेलहीं सब सखियन लीयें संग हो।।टेक।।
कोइल केकी लै फूलन कौं अली लली लै आवैं।
शरद सुहाये गीत क्वार के घर-घर सुवटा गावैं।।१।।
मोपै कहिय न जाइ भटू दुपहरिया की शोभा।
फूलन के देखैं मन फूलै साँझी लाइक लोभा।।२।।
तिल के फूल त्यौरिया के तोरईयन के सब तोरैं।
सन केसर खंडी के शीतल साँझी कौं सब जौरैं।।३।।
सूरजमुखी फूलन कौं फूलों चंद मुखी लै आवैं।
पगुला के फूलन कौं गहनौ सुँदरि सबै बनावैं।।४।।
पियबाँसे के फूलन कौं गुहि पहिरैं ताकी माला।
सिंगारहार के फूलन कौ सिंगार करैं ब्रजबाला।।५।।
पीयाबाँसे कैसे तन के पीत फूल लै धाईं।
मधुर माधुरी के फूलन गुहि सखी माधुरी लाईं।।६।।
जुही जाही माला लै आईं जु ही प्राण की प्यारी।
चंबेली चंपे न फूलन की गुहि ल्याईं सारी।।७।।
सदा सेवती श्रीश्यामा कौं फूल सेवती आनै।
रायबेल कौ सब गहनौं सखी रायबेल गुहि जानै।।८।।
दल गुलाब के तोरि गोद में तिय गुलाब दौरी।
मौलसिरी कौं सिरी चढ़ी सखी मौलसिरी-सी मौरी।।९।।
सखी मालती की माला ले फूल मालती फूले।
कुंदन कैसे तन की कुंदी के दसन कुंद समतूले।।१०।।

७४. राधावल्लभ वैष्णव कमेटी (रासवंश) वृन्दावन द्वारा अपने वर्षोत्सव भाग-2 के अन्तर्गत इस पद को घनस्याम जी के नाम से प्रकाशित किया गया है। प्रभु दयाल मीतल द्वारा अपनी पुस्तक हरिराय जी का पद साहित्य के अन्तर्गत इसका उल्लेख हरिराय जी के नाम से किया गया है, जिसमें इस पद का आखिरी छन्द जिसमें स्याम घन छाप अंकित है, दर्शित नहीं होता तथा पद का समापन रसिक शब्द वाली पंक्ति के साथ ही ३५वें छन्द पर कुछ पाठान्तर के साथ किया गया है। संभवत: मीतल जी को हरिराय जी वाली उपलब्ध प्रति में यह छन्द उसी रूप में मिला हो लेकिन रसभारती संस्थान, वृन्दावन में क्र. ६६१ पर संरक्षित हस्तलिखित वर्षोत्सव में यह पद पृ. १८७ पर स्यामघन छाप के साथ ही उपलब्ध है, जिसे उक्तानुसार राधावल्लभ मन्दिर के वर्षोत्सव में भी उल्लिखित किया गया है।

कमल-सी कर कमल फिरावत सखी कमलनी ठाढ़ी।
कमल कुचन पर चंदन चोली साँचे सौं भरि काढ़ी।।११।।
नैनन की नवलासन मारत सखी निवारी प्यारी।
आपुस में की फूलन की अरबी सबै निवारी।।१२।।
सौने कैसे फूल सखी री सौंनजाय के सोहैं।
सौनौ और सुगंध सखी जाकी पटतर कौं कोहैं।।१३।।
पाडर सखी लखी सखियन में पाडर की माला।
पाडर के पाँयन तर लोटत पंचबान की बाला।।१४।।
प्रेम प्रिया रुचि सौं लै आई पारजात की बौड़ी।
सबही कौ मन मथ्यौ सखी मनमथ माली की मौड़ी।।१५।।
मुकलित कली मौगरे की गुहि-गुहि कै गैंद बनाय।
सुंदरि सबै साँझ सी फूलीं खेलत साँझी आय।।१६।।
डरियन में फरियन में फूले फूल गोद में लीनैं।
चूरी खुभी पिय पोत जोति सादा सिंगारहिं कीनैं।।१७।।
एक-एक बेदी वंदन की चिबुक बिंदु छबि नीले।
ससि बाला अलि लाला मानौं चंद मध्य चटकीले।।१८।।
कंठन में दुलरी सौने की पाँयन चूरा चमकैं।
झरत फूल मन हरत हँसन में दसन दामिनी दमकैं।।१९।।
चमचमान चन्द्रमान की चकचौंधी चित चुभि चोर्‌यौ।
उज्जवल उरजन में गुरजन में रपटि पर्‌यौ मन मोरौ।।२०।।
निरखि-निरखि नकफूली नाक की लोभी मन ललचायौ।
बारिन सौं मन-बार-बार लै वारन में अरुझायौ।।२१।।
जिते फूल फुलवादि कहीं सब सखी रूप ह्वै आईं।
हँसि-हँसि कै वृषभानुसुता आँखिन सौं आँख सिराईं।।२२।।
साँझी रचत गाय गोबर सौं पुनि कोइल ज्यौं कूजैं।
वृंदन-वृंदन मनहु बीजुरी श्याम घटा कौं पूजैं।।२३।।
जो साँझी फूलन सौं पूजै फूलन फूल चढ़ावै।
साँझी के पूजे कौ यह फल सकल फूल सो पावै।।२४।।
लाल लटू ह्वैं र्‌यौ भटू यौं झमकि लिये भुज झेली।
करत आरतौ कुँवरि-कुँवर कौ श्रीघनश्याम सहेली।।२५।।[७५]

⊛

७५. वर्षोत्सव – रसभारती संस्थान, वृन्दावन

हित परमानंदजी कृत साँझी के पद

साँझी खेलत रंग महल में, छबि अलबेली राधा।
बीनत फूल नवीन सखी संग, श्यामल रूप अगाधा।।
अपनी नेह सहेली पूजैं, बाढ़त नेह अबाधा।
राधावल्लभ ''हित परमानंद'' आनन्द विधि सुख साधा।।[७६]

⊛

प्रीतम दोऊ साँझी खेलत संग।
श्याम गौर-गौर श्यामल भये, बाढ़्यौ रस परम अभंग।।
फूले नैन बैन फूलन सौं, फूल लेत रस रंग।
राधावल्लभ ''हित परमानंद'' नित ही सरस उमंग।।[७७]

⊛

राग काफी- साँझी–

साँझी खेलें जु नवल अलबेली राधा।
संग लिये ललितादिक सखियनि बीनत सुमन सुगंध अगाधा।।
मोहि रहे मोहन पिय लखि छबि अँखयनि की पुजबत सब साधा।
फूल लेत में फूले मिलि ढोई होत ''परम आनंद'' अबाधा।।[७८]

⊛

श्रीवृन्दावन कुंजमहल राधिकावल्लभलाल, साँझ समै साँझी की रचना बनावहीं।
पहिरें पचरंग पोशाख सुकुमारि सब पचरंग फूलनि सिताबी लै-लैं आवहीं।।
फूलनि सौं फूल लेत लाल संग बाल जैसे श्याम घटा धनुष रवि फूले छबि पावहीं।
''हित परमानंद'' वृषभानु की दुलारी प्यारी प्रान प्यारे प्रीतम पर फलनि बिनावहीं।।[७९]

⊛

७६. परमानन्दजी कृत साँझी पदावली, श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन
७७. परमानन्दजी कृत साँझी पदावली, श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन
७८. परमानन्दजी कृत साँझी पदावली, श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन
७९. परमानन्दजी कृत साँझी पदावली, श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन

सवैया–

श्रीवृषभानु कुमारि किशोरी श्रीराधिका साँझी कौ खेल बनावति।
रूप कौ लोभी भयौ सखी स्याम सबैं मिलिकैं नित फूल बिनावति।।
कोऊ सखी कहैं जानि कहौ अब हा हा करैं तव ताहि मनावति।
नैन सौं नैंन मिले ''परमानंद'' स्यामा सौं स्याम कौं प्रेम जनावति।।

⊛

पूंछति प्यारी जू प्रेम सखी कौं लखि यह कौंन नई नित आवति।
नख तैं सिख सुन्दर स्यामा बनी मन कौं मोहैं मधुरे सुर गावति।।
चंचल नैंनी निहारि रहें रस बावरी सी नित मोहि हँसावति।
''परमानंद'' राधिकावल्लभ सौं बतराति हैं फूल भरी छबि पावति।।[८०]

⊛

श्रीकृष्णवल्लभजी कृत साँझी पदावली

यह वन तुमहीं सों सुहात।
परत तुमरे चरण जहाँ कछु होत अद्भुत बात।।
फूल फल द्रुम बेलि वीरुध सबहि अति सरसात।
वृक्ष चढ़ि शुक सारिका पिक बोल फूल झरात।।
डार द्रुम फल भार सों झुक झूमि भूपर जात।
मनहुँ फल की भेंट लै तुव पद कमल सिर नात।।
मत्त मधुकर दल सहित मिलि मधुर शब्द सुनात।
मनहुँ वल्लभ आगमन लखि विमल तुव जस गात।।[८१]

⊛

मोय अति लागत यह वन नीकौ।
सुंदर कुसुम सुवासित चहुँ दिशि सुन्दर शब्द अली कौ।।
बोलत शुक-पिक डोलत खग-मृग अद्भुत नृत्य शिखी कौ।।
सीतल मंद सुगंध सतीरें ताप हरत सब जीकौ।
वल्लभ कृष्ण यदपि सुख सागर प्रिया बिना सब फीकौ।।[८२]

⊛

८०. परमानन्दजी कृत साँझी पदावली, श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन
८१. कृष्णवल्लभजी कृत साँझी लीला- वर्षोत्सव संकलन से
८२. कृष्णवल्लभजी कृत साँझी लीला- वर्षोत्सव संकलन से

श्रीगुनमंजरी कृत साँझी पद

फूलन बीनन आली आज कैसे होय री।
पीट पट वारौ आड़ौ ठाढ़ौ मग जोय री।।
पट उरझावै हेली बेलिन के माँहि री।
सुरझावन मिस छिये मेरी बाँह री।।
बातन कों पातन में लिखि-लिखि देय री।
हाथन बलैया मेरी बेर-बेर लेय री।।
गुन मंजरि देखि भई है अवार री।
ज्यौं-ज्यौं बरजौं त्यौं-त्यौं होय हीय हार री।।[८३]

⊛

श्रीरामरायजी कृत साँझी पद

राग गौरी—

मुरली वारे सांवरे नेंक मारग मोहि बताव रे।
संग न सहेली फिरी अकेली कित नंदीसुर गांव रे।।
भूलि परी संकेत सघन वन हौं अबला कित जाँऊ रे।
मृग नयनी के वचन सुनत ही आइ मिले तिहिं ठाँऊ रे।।
मारग मिले अंक भरि भेटे भलौ बन्यौ है दाँउ रे।
कहि भगवान हित रामराय प्रभु राधा रवन जाकौ नाँउ रे।।

⊛

८३. गुनमंजरी कृत साँझी लीला

चित्र–१ पुष्प साँझी बनाने हेतु योगपीठ (फर्मे) का प्रयोग

चित्र–२ योगपीठ का फर्मा निर्धारित करने के उपरान्त घास की कतरन से पुष्प साँझी हेतु आधार तल तैयार किए जाने का दृश्य

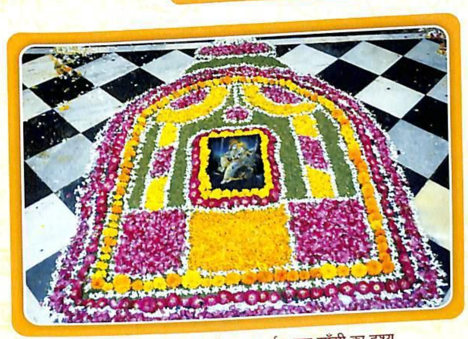

चित्र–३ योगपीठ फर्मे से तैयार आकर्षक पुष्प साँझी का दृश्य (श्रीराधावल्लभ मंदिर, वृन्दावन)

चित्र–४ निम्बार्क सम्प्रदाय से जुड़े यशोदानन्दन मन्दिर
वृन्दावन में बनी पुष्प साँझी का दृश्य

चित्र–५ वृत्ताकार फर्मे में पुष्प साँझी सजाते बालक–बालिकाएँ
(श्रीराधामोहन मंदिर, पुराना शहर वृन्दावन)

चित्र–६ मिट्टी के अठपहलू की
तैयारी के अन्तर्गत पहल काटने से
पूर्व का दृश्य (भट्टजी मन्दिर, वृन्दावन)

चित्र–७ अठपहल की घुटाई करते
कलाविद् श्रीविभुकृष्ण भट्ट, श्रीरघुनाथ
भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

चित्र–८ अठपहलू, शाहजहाँपुर
वाला मन्दिर, वृन्दावन

चित्र–९ सूत डालने के उपरान्त पहल–छँटाई
करते पारम्परिक कलाविद श्रीरघुनाथ भट्ट
गोस्वामी पीठ, वृन्दावन

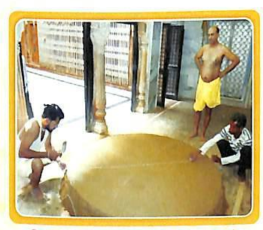

चित्र–१० देवालयी परम्परा मे साँझी प्रक्रिया के
अन्तर्गत सूत डालने का दृश्य

चित्र–११ कँडा का प्रयोग कर सूत निर्धारण
करते देवालयी साँझी के विशेषज्ञ

चित्र–१२ सूखी मिट्टी (रज) को साँझी बनाने हेतु धातु के पात्र से समतल करता साधु, (श्रीजी मन्दिर बरसाना)

चित्र–१३ सूखी मिट्टी (रज) से तैयार योगपीठ फर्मे पर बेल बनाते विशेषज्ञ, (श्रीजी मन्दिर बरसाना)

चित्र–१४ कामवन (कामां) में वल्लभकुल के देवालय मदनमोहन में वर्गाकार फर्मे पर साँझी का दृश्य

चित्र–१५ साँझी तैयार करने के दौरान 'भराव जगाने' की प्रक्रिया जिसमें पोटरी की भूमिका भी रहती है।

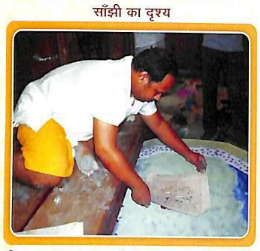

चित्र–१६ राधावल्लभ मन्दिर, वृन्दावन में रंग साँझी के अन्तर्गत साँचे के प्रयोग से साँझी बनाते आचार्य श्रीहित मोहितमराल गोस्वामी

चित्र–१७ श्रीरघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन में पछेली सहित साँझी तैयार करने के उपरान्त बेलों पर चस अंकित करते कलाविद श्रीविभुकृष्ण भट्ट तथा पोटरी करने का दृश्य

चित्र–18 वृन्दावन के राधारमण मन्दिर में आयोजित साँझी का चित्ताकर्षक दृश्य जिसमें हौद के अन्तर्गत महाप्रभु सन्त मण्डली के साथ हरिनाम संकीर्तन करते दर्शित हैं

चित्र–१९ श्रीरघुनाथ गोस्वामी पीठ, भट्‌टजी मन्दिर वृन्दावन में कालिदह लीला पर केन्द्रित, नाग बेल की लोकप्रिय साँझी

चित्र–२० ललित सम्प्रदाय की उपासना पद्धति में ब्रज लीला स्थलों के अंकन की परम्परा के अन्तर्गत पीली पोखर का दृश्य उपस्थित करती वृन्दावन के शाहजहाँपुर वाले मन्दिर की साँझी का सुन्दर चित्र

चित्र–२१ देवालयी साँझी में चस का प्रयोग

चित्र–२२ गलता पट्टी पर कार्य करता प्रशिक्षु कलाकार

चित्र–२३ श्री रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, भट्टजी मन्दिर में (वंशी–शिक्षा) विषय पर साँझी तैयार करते कलाविद

चित्र–२४ साँझी के हौद में सितारा फर्मे से तैयार झूलनोत्सव का दृश्य

चित्र–२५ पुष्टिमार्गीय देवालय गोपीनाथजी, (डेरागाजी खाँ) वृन्दावन में वर्गाकार काष्ठ चौकी पर आयोजित साँझी का दृश्य

चित्र–२६ वृन्दावन के राधावल्लभ मन्दिर में साँझी उत्सव के दौरान महारास का दृश्य

चित्र–२७ रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, भट्टजी मन्दिर में अष्टसखी मण्डल का दृश्य

चित्र–२८ पानी के ऊपर साँझी अंकन के दौरान होली खेलते राधा–कृष्ण
(रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, भट्टजी मन्दिर, वृन्दावन)

चित्र–२९ पानी के नीचे साँझी अंकन के दौरान बकासुर वध लीला का दृश्य
(शाहजहाँपुर मन्दिर, वृन्दावन)

चित्र–३० पानी के नीचे कालियदह लीला का एक अन्य दृश्य
(रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, भट्टजी मन्दिर, वृन्दावन)

राधावल्लभ सम्प्रदाय की साँझी परम्परा में आचार्य गो॰ श्रीहित हरिवंश महाप्रभु की चित्र रचना के अन्तर्गत प्रयुक्त साँचों के विविध चरण सौजन्य– ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

चित्र–३१

चित्र–३२

चित्र–३४

चित्र–३३

चित्र–३५

साँझी के दौरान विभिन्न प्रकार की बेलों के निर्माण हेतु प्रयुक्त साँचे (स्टॅंसिल्स)

चित्र–३६

चित्र–३७

देवालयी साँझी कला में लीला प्रसंगों के अन्तर्गत प्रयुक्त साँचे (स्टँसिल्स)

सौजन्य– ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

चित्र–३८

चित्र–३९

चित्र–४०

चित्र–४१

चित्र–४२

चित्र–४३

देवालयी साँझी परम्परा के साहित्यिक सन्दर्भ

चित्र–४४ दतिया स्टेट के राव राजा पारीछितसिंह देव जू के लिए वृन्दावन निवासी हित परमानन्दजी द्वारा तैयार साँझी विषयक पोथी का चित्र सौजन्य– श्रीहित परमानन्द पुस्तकालय, वृन्दावन

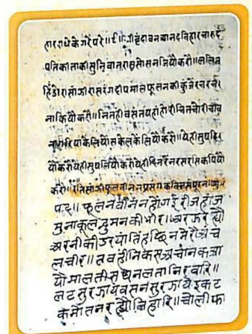

चित्र–४५ वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थागार में संरक्षित किशनगढ़ (अजमेर) के राजा सावंत सिंह (नागरीदास) द्वारा सृजित 'फूल बीनन प्रसंग' पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि का चित्र

चित्र–४६ चाचा श्रीहित वृन्दावनदास के लिखिया केलिदास के हस्तलेख में वि॰ सं॰ 1840 में प्रतिलिपित ब्रज प्रेमानन्द सागर की पुष्पिका सौजन्य– रसभारती संस्थान, वृन्दावन

चित्र–४७ प्राचीन हस्तलिखित वर्षोत्सव की अनुक्रमणिका के अन्तर्गत साँझी के पदों का उल्लेख प्रस्तुत करता पत्रक सौजन्य– ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

ब्रजलोक साँझी में प्रयुक्त चित्रांकन

चित्र–४८ स्वस्तिक (कालियदह परिक्षेत्र, वृन्दावन)

चित्र–४९ चन्द्र–तारे (मालीपाड़ा, वृन्दावन)

चित्र–५० पान (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–५१ पान का अंकन (बदले परिवेश में) (बेगमपुर)

चित्र–५२ ॐ का चित्रांकन (कालियदह परिक्षेत्र, वृन्दावन)

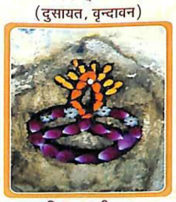
चित्र–५३ दीपक (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–५४ त्रिशूल (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–५५ अष्टकली–पुष्प (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–५६ खजूर का पेड़ (कालियदह परिक्षेत्र, वृन्दावन)

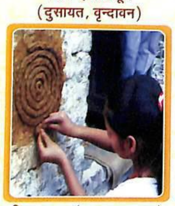
चित्र–५७ चक्र (दुसायत, वृन्दावन)

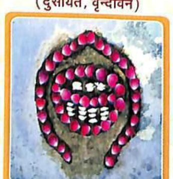
चित्र–५८ डलिया (दुसायत, वृन्दावन)

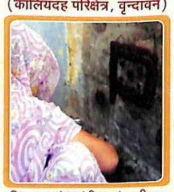
चित्र–५९ पंखा (बीजना) जतीपुरा

ब्रज लोक साँझी में प्रयुक्त चित्रांकन

चित्र–६० वृन्दावन अंकन, (रतनछत्री, वृन्दावन)

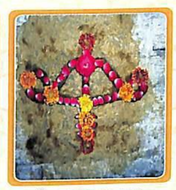
चित्र–६१ धनुष–बाण (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–६२ पट्टा वाली अम्मा (बरसाना)

चित्र–६३ गणेश मुख (कालियदह, वृन्दावन)

चित्र–६४ श्रवण कुमार (दुसायत, वृन्दावन)

चित्र–६५ गिर्राज धरण (बरसाना)

चित्र–६६ श्रीकृष्ण (कालियदह, वृन्दावन)

चित्र–६७ सूर्य (सूरज), राधाकुण्ड

चित्र–६८ मोर, राधाकुण्ड

चित्र–६९ नाव में साँझी (दुसायत, वृन्दावन)

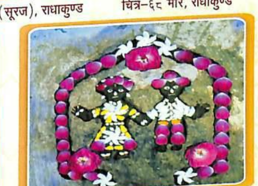
चित्र–७० साँझी–साँझा (दुसायत, वृन्दावन)

ब्रज लोक साँझी में प्रयुक्त चित्रांकन (कोट वनाने से पूर्व की तैयारी)

चित्र–७१-७२ कोट में प्रयुक्त किए जाने वाले आभूषण तथा अन्य तैयारियों का दृश्य

चित्र–७३-७४ रंग से तैयार हाथ तथा पैर की आकृति

चित्र–७५ कोट में प्रयुक्त रंगीन कौड़ी

चित्र–७६ साँझी की सज्जा में प्रयुक्त कंगन

चित्र–७७ ढोलक वजाती हुई गुजरिया

चित्र–७८ रंग के उपरान्त मुखाकृति

ब्रज लोक साँझी में प्रयुक्त चित्रांकन
साँझी–कोट

चित्र–७९ रंग–सज्जा से पूर्व कोट
की तैयारी का दृश्य

चित्र–८० रंग–बिरंगे परिधान से
सज्जित कोट का दृश्य

चित्र–८१ कोट की तैयारी हेतु रंग भरती बालिका

ब्रज लोक साँझी में प्रयुक्त चित्रांकन

साँझी–कोट

चित्र–८२ कोट का मनोरम दृश्य (वृन्दावन)

साक्षात्कार

राधा-कृष्ण की साँझी-लीला का चिन्तन-मनन करते हुए विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों में साधनारत भक्त रसिकों ने जहाँ इस परम्परा का सुदृढ़ साहित्यिक धरातल तैयार किया वहीं ये लोग पारम्परिक वाणियों में उल्लिखित इन लीलाओं को साँझी आयोजन के माध्यम से साकार रूप भी देते रहे। वृन्दावन में पुराना शहर स्थित रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ जो गौड़ीय वैष्णव साधकों की प्रमुख साधना स्थली रही है, का साँझी से सम्बन्धित गौरवशाली इतिहास रहा है। यहाँ के आचार्य 'वल्लभ रसिक' द्वारा सृजित 'साँझी की माँझ' इस परम्परा के साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है वहीं रंग साँझी क क्रमिक विकास की परम्परा यहाँ साँझी में प्रयुक्त किये जाने वाले फर्मो (नक्शों) तथा वेलों की चाल आदि से समझी जा सकती है। सही मायनों में वृन्दावन के इस भट्ट परिवार ने पीढ़ी दर पीढ़ी साँझी परम्परा को अपने अभिनव प्रयोगों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलायी। ब्रज की साँझी के अतीत तथा वर्तमान से जुड़ी कुछ जानकारियाँ हमने अपने सर्वेक्षण के दौरान आचार्य श्री विभुकृष्ण भट्ट के साथ साझा कीं, जिसके कुछ अंश प्रस्तुत है—

प्रश्न— भट्ट जी एक जमाने में ब्रज की देवालयी साँझी ने अपने कलागत आकर्षण के चलते पर्याप्त ख्याति अर्जित की, जिसकी चर्चाएँ आज भी बुजुर्गों के मुँह से सुनी जा सकती हैं; आखिर ऐसे कौन-से कारण रहे कि आज अधिकांश मन्दिरों में इसे लेकर पहले जैसा वह उत्साह परिलक्षित नहीं होता?

साँझी रचना समय-साध्य कार्य है और समय वाली बात भी तब मायने रखती है जब इसके बनाने वाले; जानकार लोग हों। आज महँगाई के दौर में हर आदमी अपनी रोजमर्रा की दैनिक दिनचर्या में व्यस्त है ऐसे में उसका अपनी पारम्परिक मान्यताओं से विमुख होना स्वाभाविक है। वैसे भी भक्ति से जुड़ी इस परम्परा में अर्थ का कोई स्थान नहीं है जिसके चलते हर व्यक्ति की इसमें रुचि भी नहीं बनती। श्रीभट्ट जी ने बताया, ऐसा बिल्कुल नहीं कि आज इस परम्परा के जानकार बचे ही न हों बल्कि ब्रज के कई घरानों में जहाँ परम्परागत रूप से यह कला पल्लवित होती रही वहाँ नई पीढ़ी में भी इसके जानकार देखे जा सकते है लेकिन इनकी पूर्व के उस्तादों से तुलना बिल्कुल नहीं की जा सकती उन्होंने बताया कि एक जमाने में विभिन्न साँझी घरानों से जुड़े लोगों में परस्पर मैत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्धा का भाव था, जिसके चलते यहाँ 'साँझी लड़ाने' जैसी मान्यतायें भी प्रचलित थी। हमारे पिता हमें अक्सर बताते हैं कि आज से ८-१० दशक पहले जब साँझी की यह परम्परा अपने पूर्ण यौवन पर थी यहाँ विशेष अवसरों पर 'साँझा' भी बनता था जिसका आकार वर्तमान साँझी की लगभग चार बड़ी वेदियों

के बराबर होता था। इस साँझा को बनाने में साँझी परम्परा से जुड़े कई घराने अलग-अलग चरणों में चालियों की पाड़ पर (कई बाँसों को मिलाकर बीच में आड़ी लकड़ियों से बाँधकर चाली तैयार की जाती है, जिसका प्रयोग मजदूर भवन निर्माण आदि में भी करते है) अपने हुनर दिखाते थे। आठ दशक पहले जब वृन्दावन के शाहजहाँपुर वाले मन्दिर में '**साँझा**' का आयोजन हुआ था, उस समय हमारे दादा गुरु निकुंजवासी श्रीकृष्णचैतन्य भट्ट ने साँझा के '**हौद**' (साँझी का मध्य भाग) पर कार्य किया जिसमें प्रयुक्त युगल सरकार (राधा-कृष्ण) का फर्मा आज भी हमारे संग्रह में सुरक्षित है। आज बड़े दुर्भाग्य का विषय है कि साँझी की यह परम्परा अपने घर में ही उपेक्षा की शिकार है। उन्होंने बताया हाँलाकि आज साँझी के अखाड़े में पहले जैसी वह बात नहीं रही फिर भी देवालयी उत्सवों की अनिवार्य परम्परा में साँझी के समावेश के चलते इसका अस्तित्व तो दिखता है लेकिन प्राय: यहाँ की रंग साँझी या तो अपने आरम्भिक स्वरूप फूल साँझी में बदल चुकी है या कहीं श्रीविग्रहों के समक्ष पत्र-पुष्प समर्पित करके ही इसकी इतिश्री कर दी जाती है।

प्रश्न– भट्ट जी, साँझी के कलागत सौन्दर्य का हुनर आपके पारिवारिक संस्कारों में रचा-पगा है। आप हमें एक उत्कृष्ट साँझी के रचना विधान की जानकारी संक्षेप में प्रदान करने की कृपा करें?

व्यावसायिक दृष्टि से परे साँझी की रचना प्रभु की भाव सेवा से जुड़ी है। संभवत: इसलिए हमें इसकी तैयारी के दौरान समय का भान ही नहीं रहता है। हमारा पूरा परिवार भक्ति भाव से पवित्रता का ध्यान रखते हुए साँझी के अलग-अलग चरणों पर जैसे– रंग बनाना, सूत डालना, कैंडा, चस, बेल एवं भराव जगाना आदि कार्य करता है। श्री भट्ट जी ने बताया देवालयों में साँझी रचना श्रम एवं समय साध्य कार्य है जिसे एक समूह द्वारा विभिन्न चरणों में पूरा किया जाता है। उन्होंने साँझी की चौकी (धरातल) तैयार किये जाने की प्रविधि से अवगत कराते हुए बताया साँझी के आयोजन से पूर्व इसके लिए चौकी (वेदी) तैयार किया जाना इसका प्रथम चरण है। यह चौकी अलग-अलग मन्दिरों में उनकी अपनी पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार वर्गाकार (चौकोर), योगपीठनुमा, सितारेनुमा अथवा अठपहलू (अष्टभुजाकार) आकृति की हो सकती हैं। हमारे यहाँ साँझी बनाने हेतु अठपहलू का मानक निर्धारित है। जिसके सन्दर्भ में हमारी पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार इसके आठ कोने श्रीराधा की उन अष्टसखियों के प्रतीक हैं जो अपने-अपने स्थान से श्यामा-श्याम की निर्धारित सेवा में तत्पर रहती हैं। भट्ट जी ने बताया उत्कृष्ट साँझी की रचना के लिए हम इस कार्य को चरणबद्ध रूप से सम्पादित करते हैं जिसमें पहला महत्वपूर्ण कार्य साँझी के लिए वेदी तैयार करना है जिसके अन्तर्गत

वेदी की घुटाई करते हुए मिट्टी की डबक (दरार/चटकन) हटायी जाती है। तदोपरान्त सूत डालकर साँझी का फर्मा बनाते है। साँझी का यह फर्मा प्रतिदिन की लीला के हिसाब से निर्धारित किया जाता है।

❁

ब्रज के मन्दिर देवालयों में पल्लिवित साँझी कला ने अपने कलागत सौन्दर्य के चलते हर खास व आम को अपनी तरफ आकर्षित किया। अर्थ से परे प्रभु साधना में रत ब्रज के वैष्णव भक्तों ने इस कला के माध्यम से श्यामा-श्याम की साँझी लीलाओं का न केवल चिन्तन-मनन किया, जिसकी परिणति में इस परम्परा के अन्तर्गत रचित विपुल साहित्य देखा जा सकता है वहीं उन्होंने अपने इष्ट विग्रहों के समक्ष इसे साकार रूप भी प्रदान किया। वृन्दावनी साँझी के राधारमण घराने से जुड़े श्रीपुलिनकृष्ण गोस्वामी को साँझी का हुनर विरासत में मिला है। इनके पिता निकुंजवासी श्रीजगदीशलाल जी गोस्वामी साँझी के उस्ताद थे। जिनके निर्देशन में कई लोगों ने इस हुनर की बारीकियाँ सीखीं। साँझी परम्परा की सूक्ष्म जानकारियों से अवगत कराता उनका साक्षात्कार–

प्रश्न– गोस्वामी जी आप हमें साँझी परम्परा के कलात्मक पक्ष की तकनीकी सूक्ष्मताओं से अवगत कराने की कृपा करें?

कला परम्पराएँ ब्रज संस्कृति के मूल में है। यहाँ मन्दिर देवालयों में संरक्षित इन परम्पराओं की अपनी-अपनी विशिष्टतायें है जिन्हें स्थानीय कला साधकों ने पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित किया है। यहाँ बात चाहें फूल बंगलाओं की हो या ग्रीष्म ऋतु में श्रीविग्रहों को धारण कराये जाने वाले पुष्प-कली शृंगार की अथवा अन्य पारम्परिक उत्सव-मनोरथों पर प्रदर्शित पृथक-पृथक आयोजनों की, सभी का अपना विस्तृत तथा समृद्ध कलात्मक पक्ष विद्यमान है और उनके अलग-अलग जानकार है। ब्रज के मन्दिरों में आयोजित होने वाली साँझी के सन्दर्भ में भी अलग-अलग घरानों की अपनी-अपनी विशिष्टतायें है। जिनके आधार पर वहाँ साँझी बनती है। जहाँ तक इसके तकनीकी पक्ष की बात है, इसका कोई निर्धारित पाठ्यक्रम तो है नहीं कि मैं आपको एक साथ इसकी पूरी जानकारी दे दूँ। फिर भी इस परम्परा से जुड़े कुछ आधारभूत बिन्दु ध्यान देने योग्य हैं, जिनका हम लोग साँझी रचना के दौरान खास ध्यान रखते हैं। साँझी का सबसे पहला महत्वपूर्ण कार्य इसकी चौकी तैयार करना है जिस पर प्रतिदिन एक नई साँझी रचित की जाती है। चौकी बनाने के लिए चयन की जानी वाली मिट्टी में बालू का रेशा नहीं होना चाहिए। चिकनी लचकदार मिट्टी ही साँझी की चौकी के लिए उपयुक्त मानी गई है जिसे कूट-पीस कर छानने के बाद तर करते हुए मिट्टी का लौंदा बनाया जाता है जिसे अष्टभुजाकार रूप देने के उपरान्त इसकी

बार-बार घुटाई की जाती है ताकि चौकी में डबक अथवा दरार न पड़े। कई बार की तराई व घुटाई के साथ ही हींग या कपूर का पानी भी मिट्टी में मिलाते है। जिससे मिट्टी के कृमि इस वेदी को हानि न पहुँचा सके। चौकी के पर्याप्त सूखने पर ही साँझी रचना की जाती है अन्यथा रंग की चमक फीकी रहने का भय रहता है। इन सबके अलावा पहल, कँडा, पछेली, हौद आदि तकनीकों के सफल प्रयोग द्वारा अच्छी साँझी बनायी जाती है।

प्रश्न— गोस्वामी जी आप परम्परागत रूप में साँझी से जुड़े रहे है, कृपया हमें वर्तमान रंग साँझी परम्परा के अन्तर्गत आये बदलाव के सन्दर्भ में अवगत कराये?

सही मायनों में आज साँझी नहीं बल्कि इसके नाम की लकीर पीटी जा रही है। एक दौर था जब साँझी के रंग कूटे जाते थे फिर छनाई होती थी। खनिजों को कूट-पीसकर तैयार किये गये रंगों की बात ही और थी। ठीक इसी तरह साँझी के बॉर्डर पर पछेलियाँ लगायी जाती थी जो रजत निर्मित होती थीं। चाँदी के बाद राँगा चलन में आया लेकिन अब तो इसकी जगह मार्वल पाउडर ने ले रखी है। गोस्वामी जी ने बताया आज हर चीज रेडीमेड है और लोगों के पास समय का भी अभाव है। ऐसे में गुणवत्ता के बारे में कुछ कहने-समझने की जरूरत ही नहीं।

❁

राधारमण मन्दिर की साँझी परम्परा से जुड़े श्री सुमित गोस्वामी ने अपने अभिनव प्रयोगों से इसे नई ऊँचाईयाँ दी हैं। श्री गोस्वामी के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर साँझी के अनेक सफल आयोजन किये गये हैं। इस परम्परा के प्रति समर्पित भाव के चलते उन्हें विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सम्मानित भी किया चुका है। साँझी परम्परा पर केन्द्रित कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा श्री गोस्वामी युवा पीढी के मध्य ब्रज की साँझी को उसी गौरवशाली स्वरूप के साथ स्थापित करने की मुहिम में जुटे है जिसने एक जमाने में पूरे भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित किया और कालान्तर में इसकी यह लोकप्रियता विदेशों तक जा पहुँची। साँझी पर केन्द्रित अपने कार्य के दौरान इस सम्बन्ध में श्री गोस्वामी के साथ हुए वार्तालाप के कुछ अंश प्रस्तुत हैं —

प्रश्न— सुमित जी साँझी के विकास तथा इस परम्परा में युवा पीढी की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आप हमें अपनी कार्य योजनाओं से अवगत कराएं?

देखिए जन जागरूकता एक ऐसा पक्ष है जिसके सफल प्रयोग से किसी भी कार्य के सार्थक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। हमें साँझी के सन्दर्भ में भी कुछ ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता है जिससे युवा पीढी की इसमें भागीदारी बने। मैंने स्वयं कई जगहों पर साँझी की कार्यशालाएं आयोजित की और प्रतिभागिओं से इनमें उत्साहपूर्वक साँझी के कलागत सौन्दर्य की सूक्ष्मतायें समझीं चूँकि साँझी

रचना की अपनी वैज्ञानिक प्रविधि है जिसमें माप-तौल करते हुए कई चरणों में साँझी पूरी की जाती है। उन्होंने बताया जिस प्रकार आज रंगोली की परम्परा आम हो चली है ठीक उसी तरह अगर साँझी के प्रति भी युवा पीढी का रूझान बढ़ता है तो यह कला दीर्घजीवी बनी रहेगी।

प्रश्न— गोस्वामी जी साँझी परम्परा में हौद का अंकन जो प्रतिदिन एक अलग रूप में दर्शित होता है, के विषयों अर्थात् चित्रांकनों के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान करें?

जैसा कि सर्वविदित है साँझी के मध्य का वह स्थल जहाँ इसका विषय अर्थात् लीला चित्रित की जाती है, हौद कहलाता है। विभिन्न वैष्णवों सम्प्रदायों में उनकी अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार हौद का विषय चिह्नित किया जाता है। उन्होंने बताया वैसे तो सामान्यतया हौद के अन्तर्गत श्रीमद्भागवत पर आधारित लीलायें चित्रित की जाती है लेकिन विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों की अपनी-अपनी आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार भी हौद के चित्रों में वैविध्य देखा जा सकता है। ललित सम्प्रदाय में जहाँ राधा-कृष्ण के लीला स्थलों जैसे—पीली पोखर, संकेत वट, बरसाना, वृन्दावन, कुसुम सरोवर एवं बहुला वन आदि का चित्रण होता है वहीं ठीक इसी तरह बरसाना के श्रीजी मन्दिर में भी कुछ ऐसे ही दृश्य देखे जा सकते है। उन्होंने बताया बरसाने की साँझी की यह विशेषता है कि वहाँ सूखी रज (मिट्टी) पर ही यह लीलांकन उकेरे जाते है। ब्रजमण्डल में अलग-अलग जगह साँझी के हौद में अंकन को लेकर पृथक-पृथक भाव देखे जा सकते है। राधावल्लभ सम्प्रदाय में श्यामा-श्याम के निकुंज रास से सम्बन्धित लीलांकन के साथ ही मान सरोवर तथा वाणी साहित्य में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार चित्रांकन किये जाते है वहीं वृन्दावन में गौड़ीय सम्प्रदाय के देवालय भट्ट जी के मन्दिर में प्राय: श्रीमद्भागवत पर आधारित लीलाओं की बहुलता रहती है।

❁

देवालयों में बनाई जाने वाली फूल साँझी ब्रज में इस परम्परा का आरम्भिक दौर है। एक जमाने में यहाँ की समृद्ध देवालयी परम्परा के अन्तर्गत फूल सेवियों का महत्वपूर्ण स्थान था जो मंदिरों के अपने-अपने बाग-बगीचों से उत्सव मनोरथों के निमित्त फूल पत्तियाँ, कदली खम्भ आदि की व्यवस्था रखते थे। पारम्परिक पोथियों से उद्घाटित होता है कि कई देवालयों के फूल सेवी साहित्य में भी गहरी रूचि रखते थे। ठाकुर सेवा में सर्मपण भाव से जुटे इस परम्परा के लोगों ने साँझी, फूल बंगला, कली शृंगार आदि की व्यवस्थाओं को वर्षों सहेजे रखा। आज भले ही यह परम्परायें प्रभावित हुई हों जिसके चलते इन व्यवस्थाओं के तौर-तरीके भी बदले है लेकिन इन उत्सवों के आयोजनों की शृंखला बदस्तूर जारी है। साँझी उत्सव के दौरान आज भी प्राय: सभी देवालयों के

अन्तर्गत इसके आरम्भिक चार-पाँच दिनों में फूल साँझी ही बनायी जाती है। राधावल्लभ मंदिर की पुष्प साँझी परम्परा से जुड़े श्री शिवकुमार (शीबू दादा) से हमने इस परम्परा की बारीकियां समझीं जिसे इस साक्षात्कार द्वारा समझा जा सकता है—

प्रश्न— शिवकुमार जी आप हमें फूल साँझी के आकार-प्रकार इसके मध्य प्रदर्शित की जाने वाली लीलाओं और इसमें प्रयुक्त सामग्री के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान करने की कृपा करें?

फूल साँझी का अंकन अलग-अलग दिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार से किया जाता है जिसमें कभी कमल का फर्मा कभी योगपीठ तो कभी वृत्ताकार अथवा वर्गाकार फर्मे में साँझी बनायी जाती है। जहाँ तक इसके हौद (मध्य) में लीलाओं का प्रश्न है, फूल साँझी में सूखे रंगों वाली साँझी से पृथक, लीलाओं के चित्रपटों को विराजित कराया जाता है और हमारे यहाँ लीलायें भी वहीं बनती है जो सम्प्रदाय की मान्यता के अनुकूल मानी गयी है। जिनमें महारास, मानसरोवर एवं सेवाकुंज आदि की लीलायें प्रमुख है। उन्होंने बताया फूल सांझी की रचना के लिए पहले इसकी जरूरी तैयारियाँ करनी होती हैं। इस दौरान जहां कुछ फूल तथा अन्य सामग्री बाजार से लाते है वहीं घास की कतरन तथा अन्य फूल-पत्तियां बगीचों में जाकर एकत्र की जाती है। तदोपरांत गुलाब, गेंदा और अन्य फूलों से पंखुड़ियां अलग करते जाते है तथा कुछ फूल मूल स्वरूप में ही अलग-अलग डलियाओं में रखे जाते है। इस दौरान आम, मोरछली अथवा अशोक के पत्तों को मोड़ कर सुई-धागे से पिरोते हुए इनकी लड़ियाँ बनाते है। जिनका प्रयोग निर्धारित फर्मे के किनारों की ओर बार्डर पर किया जाता है।

प्रश्न— आप हमें इस परम्परा के मुख्य प्रयोजन से अवगत कराने की कृपा करें?

शिवकुमार जी ने बताया सांझी हो या बंगला अथवा और कोई भी उत्सव यहां सभी भक्ति से जुड़े है। प्रियालाल को सुखानुभूति देने के निमित्त हम प्रतिवर्ष इस दौरान अपनी सेवा उन्हें अर्पित करते है। जहां तक इस परंपरा के महत्व की बात है तो बताते चलें ब्रज में यह परंपरा स्वयं राधारानी ने शुरू की थी, हम तो मात्र इस परम्परा से जुड़ कर उनका भक्तिपूर्ण अनुकरण कर रहे हैं ताकि उनकी कृपा हम पर बनी रहे।

❁

ब्रज में साँझी उत्सव के अन्तर्गत यहाँ के घरों में कुँवारी बालिकाओं के द्वारा बनाये जाने वाली गोबर साँझी इस परम्परा का महत्वपूर्ण पक्ष है जिसके अन्तर्गत पूरे ब्रजमण्डल में छोटी-छोटी बालिकायें 16 दिनों तक दीवार पर भिन्न-भिन्न चित्र बनाती है गोबर के द्वारा बनाए गए इन अंकनों को पीतर पन्नी एवं विभिन्न प्रकार के पत्र-पुष्पों

से सज्जित किया जाता है। ब्रज के अलग-अलग क्षेत्रों में इन चित्रांकनों को लेकर अनेक विविधतायें दृष्टिगोचर होती हैं। गोबर-साँझी के इन अंकनों के सन्दर्भ में हमने अनेक घरों में वार्ताएं कीं जिससे गोबर साँझी से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ हमारे संज्ञान में आईं। इसी शृंखला में हमने बरसाना के समीपवर्ती गाँव कमई की वयोवृद्ध महिला श्रीमती ओमवती देवी से वार्ता की। गोबर साँझी के अंकन और मिथक-मान्यताओं से अवगत कराता उनका साक्षात्कार—

प्रश्न— साँझी आयोजन के दौरान हमें एक ही गाँव में इसके प्रतीक चिह्नों की विविधता देखने को मिली, कहीं कोई चित्र दूसरे दिन तो किसी दूसरी जगह वही चित्र पाँचवे दिन मिलता है। क्या साँझी के चित्र सभी जगह अलग-अलग बनाये जाते हैं?

देखौ साँझी के बनावे की हर जगह अपनी-अपनी रिवाज हैं। हमने ऊ छोटेपन में खूब साँझी खेली है और जाकौ उद्यापन ऊ करौ है। जे बिल्कुल सही बात है कि अलग-अलग जगहन पै साँझी अलग-अलग तरह ते चीती (बनाई) जाय। साँझी देवी के जे चित्र 16 दिनान तक बने जिनमें पान-सुपाड़ी, आठ कली कौ फूल, साँझा-साँझी (राजा-रानी), गिर्राज धरण, खजूर कौ पेड़, नसैनी, डलिया, सिंगाड़े, सतिया, तिवारी, ओढनी और कैऊ चीज बनैं। एक बात तुम्हें बताय दऊँ, कहूँ-कहूँ जिनते अलग चित्रऊ बनैं। बड़े श्राद्ध वारे दिना पट्टा वारी अम्मा और जनेऊ बनैं, जांईं तरह कहीं-कहीं दौना-पत्तर ऊ बनैं। हर जगह अपने-अपने चित्रन की महत्ता है जाकी जैसी रिवाज वहाँ बैसौई चित्र बनै है जई मारै तुम्हें अलग-अलग जगह अलग-अलग चित्र देखबे कूँ मिलैं हैं।

प्रश्न— माताजी आप हमें साँझी के कोट की तैयारी के सन्दर्भ में जानकारी देने की कृपा करे?

उन्होंने बताया वैसे तौ कोट साँझी के आखिरी दिना बनैं लेकिन जाकी तैयारी बहुत पहिलैं तेई सुरू है जांय। चिकनी मिट्टी ते साँझी के सबरे जेवर (आभूषण) जैसे- कौंदनी, बाजूबन्द, पाजेब या खडुआ, बिन्दी, नथ, कुण्डल बनें फिर उन्हें सीरक (छाया) में सुखायौ जाय। अगर इनमें चटकन होय तो बार-बार मिट्टी कौ पोता फेरौ जाय। फिर रंग करकैं इन्हें कोट वारे दिना तक संभाल कै रखैं। साँझी मैय्या कू सजाइबे के लिए मिट्टी की सुन्दर कौड़ी बनाई जाय फिर इनपै रंग करौ जाय। कोट के समै इन्हें किनारेन पै सजायौ जाय है। कोट के अन्दर साँझा-साँझी, चन्दा, सूरज, सतिया और माली-मालिन बनाये जायें।

❁

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

ब्रज लोक कला: डॉ॰ हर्षनन्दिनी भाटिया, कुसुम प्रकाशन अलीगढ़
लोक वार्ता विज्ञान: डॉ॰ हरद्वारी लाल शर्मा, ऊ॰प्र॰हिन्दी संस्थान
ब्रज की लोक गाथायें और कथा गीत: रामनारायण अग्रवाल/डॉ॰ नरेशचन्द्र बंसल
लोक– सम्पादक पीयूष दईया, प्रकाशक भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर

वैष्णव देवालयी साहित्य/पाण्डुलिपियाँ–

१. नागरीदास (सावंत सिंह) की वाणी - वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन
२. चाचा श्रीहित वृन्दावनदास: ब्रज प्रेमानन्द सागर, वृन्दावन के राधाकान्त मंदिर में लिखी वि॰ सं॰ १८४० की प्रति, रस भारती संस्थान, वृन्दावन
३. वर्षोत्सव -क्र॰ ३, अप्रकाशित पाण्डुलिपि, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन
४. श्रीहित रूपलाल गोस्वामी कृत पदावली, रसभारती संस्थान, वृन्दावन
५. सूरदास कृत वर्षोत्सव के पद- यशोदानंदन मंदिर वृन्दावन
६. हरिराय जी का पद साहित्य - श्रीमूलचन्द कौशिक जी का संग्रह, कामवन
७. वल्लभ रसिक कृत पद संग्रह - रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ, वृन्दावन
८. बिहारिन दास कृत साँझी पदावली- वर्षोत्सव, राधावल्लभ मंदिर, वृन्दावन
९. प्रेमदास जी की वाणी- रसभारती संस्थान, वृन्दावन
१०. घनश्याम जी कृत पद साहित्य - वर्षोत्सव संग्रह, यशोदानन्दन मंदिर वृन्दावन
११. कृष्णबल्लभ जी कृत साँझी पदावली- वर्षोत्सव, राधाबल्लभ मंदिर वृन्दावन
१२. गुण मंजरी (गुल्लू जी) कृत साँझी पदावली- श्रीचैतन्य गोस्वामी जी का संग्रह, वृन्दावन
१३. रामराय जी कृत साँझी पदावली- राधाबल्लभ मंदिर, वृन्दावन
१४. गोपाल राय कृत वृन्दावन धामानुरागावली अप्रकाशित पाण्डुलिपि - ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

लेख–

१५. साँझी का लोकोत्सव- प्रभुदयाल मीतल, जिल्द ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन
१६. चित्रांकन ब्रज बनिताओं द्वारा - हर्षनन्दिनी भाटिया
१७. लोक कला साँझी अनेक रूप अनेक कथायें- मोहन स्वरूप भाटिया वृन्दावन में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'ब्रज की लोक चित्रांकन कला' के अन्तर्गत पढ़ा गया शोध पत्र
१८. लोक संस्कृति के प्रतीक - डॉ॰ बसन्त निरगुणे, भारतीय लोक कल्याण मण्डल, उदयपुर
१९. ब्रह्मा की मानस कन्या साँझी - मालती शर्मा - रामनारायण अग्रवाल अभिनन्दन ग्रन्थ
२०. साँझी कला जो ब्रज में जन्मी, राजस्थान में पनपी, कलानाथ शास्त्री, राजस्थान वैभव पत्रिका
२१. साँझी पर मत वैमन्य और उसका उत्स - डॉ॰ महेन्द्र भानावत वृन्दावन में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'ब्रज की लोक चित्रांकन कला' के अन्तर्गत पढ़ा गया शोध पत्र

वृन्दावन शोध संस्थान के प्रकाशन

Catalogues

A Catalogue of Sanskrit manuscripts in the Vrindavan Research Institute	Part I- Rs. 95.00, Part II- Rs. 110.00. Part III-Rs. 125.00, Part IV- Rs. 175.00, V- Rs. 225.00, Part VI-Rs. 800.00
A Catalogue of Hindi manuscripts in the Vrindavan Research Institute	Part I- Rs. 65.00, Part 2-Rs. 180.00
A Catalogue of Bangali manuscripts Part-I	Rs. 150
A Catalogue of manuscripts Microfilmed	Rs. 85
A Descriptive Catalogue of Punjabi Manuscripts	Rs. 175

शोधपरक पुस्तकें

ब्रज की रा सलीला : लेखक डॉ. प्रभुदयाल मीतल	रु. 600.00
दशश्लोकी (सटीक) : सम्पादक – डॉ. कमलेश पारीक	रु. 30.00
केवलराम कृत रासमान के पद : सम्पादक–प्रो. एलन एंट्विसिल	रु. 45.00
स्वामी चरणदास कृत रहस्य दर्पण एवं रहस्य चन्द्रिका : सम्पादक–डॉ. रामदास गुप्त और डॉ. शरण विहारी गोस्वामी	रु. 45.00 पेपरबैक रु. 60.00 सजिल्द
रसिक कर्णाभरण (लीला): सम्पादक– डॉ. नरेशचन्द्र बंसल	रु. 40.00 पेपरबैक रु. 60.00 सजिल्द
स्मरण दर्पण : सम्पादक–गोपालचन्द्र घोष	रु. 25.00 पेपरबैक रु. 35.00 सजिल्द
यमुना एवं यमुनाष्टक : सम्पादक–वृन्दावन विहारी गोस्वामी	रु. 110.00 पेपरबैक रु. 125.00 सजिल्द
छन्द : कौस्तुभ : सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक	रु. 175.00 पेपरबैक रु. 250.00 सजिल्द
मथुरा माहात्म्य : सम्पादक–डॉ. उमा भास्कर	रु. 100.00 पेपरबैक रु. 150.00 सजिल्द
Vrindavan in Vaishnava Literature by Dr. M. Corocoran	Rs. 375.00
ब्रज की लोक कथाएँ : सम्पादक–डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'	रु. 80.00 पेपरबैक रु. 90.00 सजिल्द
An Early Testamentary Document in Sanskrit by tarapada mukherjee & prof. J.C. wright	Rs. 10.00
श्री गोपाल पाठावली : सम्पादक – चन्द्रधर त्रिपाठी और गोपालचन्द्र घोष	रु. 40.00 पेपरबैक रु. 100.00 सजिल्द
श्रृंगार सारसी : अनु / सम्पादक – डॉ. कमलेश पारीक	रु. 300.00
चन्द्रकला : सम्पादक – डॉ. नरेशचन्द्र बंसल	रु. 350.00
राधिका पाठावली : सम्पादक – गोपालचन्द्र घोष	रु. 100.00
Vaishnav Tilakas by Prof. Alen Antiwislle	Rs. 10.00
गोधूलिवेला : डॉ. रामदास गुप्त का काव्य संकलन (संपा.) डॉ. नरेशचन्द्र बंसल	रु. 250.00
गीत–गन्धा : डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' का गीत संकलन	रु. 100.00
Recent advances of conservation of manuscripts by prof. Govind Sharma	Rs. 100.00
नृसिंह पाठावली : (संपा.) श्री गोपालचन्द्र घोष	रु. 300.00
गीत ब्रज वसुन्धरा के : (संपा.) डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ	रु. 250.00
श्रीमद्भागवत दिव्यदर्शन : संपादक – डॉ. रजनी भटनागर	रु. 80.00
चित्रित पोस्टकार्ड : (सैट–10)	रु. 60.00
स्वस्ति संकल्प : (डॉ. रामदास गुप्त स्मृति ग्रन्थ) (सम्पादक : भवानी शंकर शुक्ल)	रु. 500.00
भारत भाव रूप श्रीकृष्ण : सम्पादक – भवानी शंकर शुक्ल	रु. 500.00
आधुनिक हिन्दी कविता में राधाकृष्ण : संपादक – डॉ. ओंकार त्रिपाठी	रु. 500.00
लघु सिद्धान्त कौस्तुभ : संपादक – डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, अनुवादक – डॉ. अच्युतलाल भट्ट	रु. 120.00 पेपरबैक रु. 180.00 सजिल्द
वृन्दावन के श्रीरंग मंदिर का श्रीब्रह्मोत्सव : संपादक – डॉ. महेश नारायण शर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार शर्मा	रु. 250.00 पेपरबैक रु. 275.00 सजिल्द
वृन्दावन की फूल बंगला कला : संपादक – डॉ. महेश नारायण शर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार शर्मा	रु. 300.00 पेपरबैक रु. 325.00 सजिल्द
वृन्दावन की मल्लविद्या परम्परा : संपादक – डॉ. महेश नारायण शर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार शर्मा	रु. 150.00 पेपरबैक रु. 190.00 सजिल्द
ब्रज की तुलसी कण्ठीमाला : संपादक – डॉ. महेश नारायण शर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार शर्मा	रु. 90.00 पेपरबैक रु. 140.00 सजिल्द